1 उसने कहा था (कहानी)

—पण्डित चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'

लेखक परिचय— पण्डित चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' (1883 ई.-1922 ई.) हिन्दी कहानी के उल्लेखनीय हस्ताक्षर हैं। इनका जन्म जयपुर में हुआ था। ये बचपन से ही साहित्यिक प्रतिभासम्पन्न थे। उनकी प्रतिभा का क्षेत्र खगोल, विज्ञान, ज्योतिष, धर्म, भाषा-विज्ञान, इतिहास तक विस्तृत था। 'उसने कहा था' हिन्दी की प्रसिद्ध कहानी है, जिसका प्रकाशन 1915 ई. में हुआ था। इसके अतिरिक्त उन्होंने 'सुखमय जीवन' और 'बुद्धू का काँटा' आदि कहानियाँ भी लिखीं। 'कछुआ धर्म', 'मारेसि मोहि कुठांव' आदि उनकी निबन्ध कला के प्रतिमान हैं। उन्होंने मासिक पत्र 'समालोचक' का सम्पादन किया एवं वे नागरी प्रचारिणी सभा काशी के सम्पादक मण्डल में भी रहे। 39 वर्ष की अल्पायु में उनका निधन हो गया।

पाठ–सारांश

प्रस्तुत कहानी प्रथम विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित है। यह हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ कहानियों में गिनी जाती है। इसे हिन्दी कहानी का 'माइल स्टोन ' (मील का पत्थर) भी कहा जाता है। अमृतसर के बाजार में बम्बूकार्ट वालों की मिठास भरी आवाज सुनाई पड़ती है। वे सड़क पर चलने वालों को 'जी' और 'साहब' शब्दों से सम्बोधित करके सामने से हटाते हैं। बालक लहनासिंह उसी बाजार में अचानक एक ताँगे के नीचे आने से एक लड़की को बचा लेता है। दोनों अपरिचित हैं। यहीं से इन दोनों का परिचय होता है। एक दुकान पर दुकानदार अन्य ग्राहकों को सौदा देने में व्यस्त है। इसलिए दोनों को पारस्परिक वार्तालाप करने का अवसर मिल जाता है। लड़का दही लेने और लड़की बड़ियाँ लेने आई है। दोनों एक-दूसरे के रहने का पता भी पूछ लेते हैं। दुकानदार से सामान लेकर दोनों थोड़ी दूर तक साथ-साथ चले। लड़के के मन में प्रेम का बीजांकुर फूटा और उसने लड़की से पूछ ही लिया। क्यों 'तेरी कुड़माई हो गई?' लड़की 'धत्' कहकर दौड़ गई। एक महीने तक वे अकस्मात किसी न किसी दुकान पर मिल जाते और लड़का अपना पुराना प्रश्न ही दोहराता। एक दिन लड़की ने 'हो गई' कहकर लड़के को निराश कर दिया। मनोविज्ञान के अनुसार अपनी इच्छा के अनुसार कार्य न होने पर झुँझलाहट आती है। लड़के को दु:ख हुआ और घर जाते समय उसने अस्वाभाविक हरकतें कीं।

जब बालक लहनासिंह फौज में जमादार होकर अंग्रेजों की ओर से फ्रांस के मैदान में लड़ने के लिए जाता है तो वह अपने सूबेदार हजारा सिंह से मिलने उसके घर पहुँचा । घर पहुँचकर लहनासिंह को पता चला कि सूबेदारनी बचपन में मिली वही लड़की है। सूबेदारनी ने अपने पति हजारासिंह व पुत्र बोधा सिंह की रक्षा का वचन लहना सिंह से ले लिया ।

फ्रांस का युद्ध-क्षेत्र है। खन्दक में भारतीय सैनिक ठहरे हैं। हड्डियों को कँपाने वाला जाड़ा है। जर्मनी की ओर से गोले बरसाए जा रहे हैं? जिससे खाई दहल जाती है। बाहर निकलने पर गोली लगने का डर है। खन्दक में चार दिन हो गए। अभी तीन दिन और रुकना है फिर रिलीफ आ जाएगी। लहनासिंह तथा अन्य सिपाही लड़ना चाहते हैं। एक दिन धावा बोला और जर्मन सेना को पीछे ढकेल दिया परन्तु जनरल ने पीछे हटने का हुक्म दिया। सूबेदार हजारासिंह फिरंगी मेम द्वारा दिए गए फल और दूध का आनन्द लेना चाहता है। सूबेदार खन्दक में से पानी निकालने का आदेश देता है। विदूषक वजीरासिंह सबको हँसाता है। सूबेदार फ्रांस में ही जमीन लेकर रहना चाहता है। लहनासिंह मेम का नाम लेकर मजाक करता है। हजारासिंह लहनासिंह से अपने पुत्र बोधासिंह के स्वास्थ्य के बारे में पूछता है।

दो पहर रात बीत गई है। घना अँधेरा है। लहनासिंह खन्दक और अस्वस्थ बोधासिंह को देख रहा है। बोधासिंह को ठण्ड लगी है इसलिए लहनासिंह ने अपने कम्बल और कोट उसे ओढ़ा दिये हैं। अपनी जरसी भी उसे दे दी है। इसी दौरान सूबेदार हजारासिंह को किसी

ने पुकारा। हजारासिंह ने उसे लपटन (पलटन) साहब समझ कर सलाम किया। आगन्तुक ने कहा पास ही जर्मन खाई है। वहाँ थोड़े से सैनिक हैं। मैं थोड़ी दूर पर अपने पन्द्रह आदमी खड़े कर आया हूँ। तुम खन्दक को जीतकर वहीं रहना। सूबेदार दस सिपाहियों को छोड़कर चला गया। लहनासिंह आगन्तुक से बात करके यह जान गया कि वह भारतीय अधिकारी नहीं है। उसके वेश में कोई जर्मन है। उसने तुरन्त कुछ निश्चय किया। आगन्तुक ने जो सिगरेट दी थी, उसे जलाने के लिए दियासलाई लेने का बहाना करके वह अन्दर गया और अँधेरे में वजीरासिंह से टकरा गया।

लहनासिंह ने वजीरासिंह को सारी कथा सुना दी और कहा कि लपटन साहब के रूप में कयामत आई है। हमारे लपटन साहब मारे गए या कैद हो गए हैं। तू फौज के पैरों का निशान देखकर सूबेदार को सारा समाचार दे दे और लौटने की कह दे अन्यथा वे भटकते ही रहेंगे। मैं लपटन (पलटन) साहब को देख लूँगा। लहनासिंह ने खन्दक की दीवार से चिपककर देखा कि जर्मन अधिकारी ने तीन गोले खन्दक में रखे और उन्हें एक तार से जोड़कर एक गुत्थी को तार के सिरे से जोड़कर सिगड़ी के पास रख दिया और दियासलाई से गुत्थी में आग लगाना चाहता है। लहनासिंह ने बन्दूक की बट उसकी कुहनी पर मार दी जिससे दियासलाई नीचे गिर गई। फिर उसने बंदूक के कुंदे से साहब की गर्दन पर वार किया, जिससे साहब धराशायी हो गए। लहनासिंह ने उनकी जेब से लिफाफे और डायरी निकाल ली। पतलून की जेब उसने नहीं देखी।

साहब को होश आया तो लहनासिंह व्यंग्य से कहा कि उसने आज बहुत बातें सीखीं जिनमें यह सीखा कि सिक्ख सिगरेट पीते हैं, नील गाय के सींग दो फुट चार इंच के होते हैं, मुसलमान खानसामा मन्दिरों में जल चढ़ाते हैं। बातचीत चल ही रही थी कि साहब ने पतलून की जेब में हाथ डाला और पिस्तौल निकालकर गोली चलाई जो लहनासिंह की जाँघ पर लगी। लहनासिंह ने भी गोली चलाकर साहब को मौत के घाट उतार दिया। इसी दौरान जर्मन सैनिकों ने आक्रमण किया। लहनासिंह और उसके साथियों ने मुकाबला किया। पीछे से हजारासिंह सैनिकों के साथ आ गया। जर्मन दो पाटों के बीच में फँस गए और मारे गए या घायल होकर कराहते रहे। थोड़ी देर में डॉक्टर और गाड़ियाँ आ गईं। सूबेदार लहनासिंह को छोड़कर नहीं जाना चाहता था किन्तु लहनासिंह ने बोधासिंह और सूबेदारनी की सौगन्ध दिलाकर भेज दिया और कहा कि सूबेदारनी से कह देना कि उसने मुझसे जो कहा था वह कर दिया। बाद में वह लेट गया। उसने वजीरा से पानी माँगा और कमरबन्द खोलने को कहा।

लहनासिंह लेट गया। लहना सिंह का मृत्यु-समय निकट आ गया था। उसे पुरानी बातें याद आने लगीं। किस प्रकार लड़की से मिला उसे कुड़माई की बात याद आई। लहनासिंह भूल गया क्योंकि उस घटना को सत्ताईस साल हो गए थे। एक बार लहनासिंह और सूबेदार छुट्टी पर घर आये थे। रेजिमेंट से लाम पर जाने की चिट्ठी मिली। सूबेदार ने भी साथ चलने की चिट्ठी भेजी। लहनासिंह स्वप्न देख रहा है। सूबेदारनी ने अन्दर बुलाया, पुरानी घटना याद कराई। बचपन में अपनी रक्षा की बात कही। आज एक बेटा और पति लाम पर जाते हैं। इनकी भी रक्षा करना। यह भीख उसने माँगी थी। एक दिन अखबार में खबर आई लहनासिंह मर गया।

शब्दार्थ (पृष्ठ-2)—बाछा = बादशाह। चितौनी = चेतावनी। समष्टि = समाज। सुथने = एक प्रकार की स्त्रियों के, पहनने का पायजामा। कुड़माई = सगाई। इक्के = ताँगे जैसी चीज जिसे घोड़ा खींचता है। बम्बूकार्ट = एक प्रकार की घोड़ा-गाड़ी। तरस खाते = दया करते। क्षोभ = क्षुब्ध होने का भाव, व्याकुलता। जीणे जोगिए = जीने योग्य। करमाँवालिए = भाग्यशाली। सालू = ओढ़नी।

(पृष्ठ-3)— खन्दक = बड़ा गड्ढा, खाई। जलजला = भूकम्प। मुल्क = देश। पाजी = दुष्ट। धावा = आक्रमण। उदमी = शरारती। कोले = कोयले। विदूषक = मसखरा। पाधा = पुरोहित। तर्पण = एक कर्मकाण्ड जिसमें पितरों को जल दिया जाता है। घुम! = दो बीघे के बराबर की जमीन की एक माप। बूटे = पौधे। लाड़ी = बहू, पत्नी। फरंगी = अंग्रेज। शरम = लज्जा।

(पृष्ठ-4)— सिगड़ी = अँगीठी। माँदे = बीमार। मुरब्बे = वर्गाकार खेती की भूमि। बरकोट = ओवरकोट। हुज्जत = विवाद। खोते = गधे। खानसामा = नौकर। विलायत = इंग्लैण्ड, विदेश। मेम = योरोपीय महिला। जबरदस्ती = जिद करके। सूबेदार = सेना में एक पद। लपटन = लेफ्टिनेण्ट। जियादह = अधिक ।

(पृष्ठ-5)— बेशक = निःसन्देह, बिना किसी शक के। हुज्जत = विवाद। कयामत = प्रलय, आफत। पुठ्ठे = कंधे। अफसर = अधिकारी। आँख लगने दी होती = सोने दिया होता। पलटन = सेना। पत्ता तक न खड़के = तनिक भी आवाज न हो। हुक्म = आज्ञा, आदेश। मुहाने = मुँह, मोड़। गुत्थी = गाँठ। घुसेड़ना = घुसाना।

(पृष्ठ-6)—मूर्छा = बेहोशी। मंजा = खटिया। हड़का = पागल। आहा मीनगोट = ओह! माई गॉड। (जर्मन भाषा का कथन) जेब के हवाले = जेब में रखे। साफ = शुद्ध, स्पष्ट। लफ्ज = शब्द। चकमा = धोखा।

(पृष्ठ-7)— मुल्ला = मुसलमान। दाड़ी-मूँड दी = दाड़ी काट दी। तक-तक कर = देख-देखकर, चुन-चुनकर। मुर्दा = मृतक। क्षयी = क्षीण या दुबला होता जाने वाला। बर्राना = बड़बड़ाना। आग बरसाते = गोली चलाते। संगीन = एक बरछी जो बन्दूक के सिरे पर लगी रहती है। फतह = विजय। सार्थक = उचित, सही। सराहना = प्रशंसा।

(पृष्ठ-8)— मत्था टेकना = प्रणाम, चरणस्पर्श। लाम पर जाना = लड़ाई पर जाना।

(पृष्ठ-9)— नमक हलाली = स्वामिभक्ति। तीमियों = औरतों। कमरबन्द = कमर पर बाँधने का कपड़ा। तर हो रहा है = (खून में) भीग रहा है। स्मृति = याद। धुन्ध = धुँधलापन, अस्पष्ट यादें। बिलकुल = पूरी तरह। सालू = ओढ़नी। असीस = आशीर्वाद। ओबरी = अन्दर का घर। पट्ट = जाँघ।

पाठ में आए मुहावरे व उनका अर्थ

कान पक गए/जाना—कोई बात बार-बार सुनते-सुनते ऊब जाना।

जीभ चलती ही नहीं—कटु बात न कहना।

कान के पर्दे फाड़ना—बहुत ऊँची आवाज में चीखना।

पलक न झँपी—नींद नहीं आई।

दाँत बज रहे हैं—ठंड से दाँतों का कटकटाना/ठण्ड लगना।

खेत रहे—युद्ध में मारे गये।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'उसने कहा था'-कहानी का नायक है—

(क) वजीरासिंह (ख) लहनासिंह (ग) हजारासिंह (घ) बोधासिंह।

2. 'तेरी कुड़माई हो गई?' कथन में निहित भाव है—

(क) अवसाद (ख) असफलता (ग) निश्छल प्रेम (घ) वेदना।

उत्तर—1. (ख), 2. (ग)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. पलटन का विदूषक किसे माना जाता था?

उत्तर—पलटन का विदूषक हजारा सिंह को माना जाता था क्योंकि वह सब को हँसाता रहता था।

प्रश्न 2. "कयामत आई है और लपटन साहब की वर्दी पहनकर आई है।"—यह कथन किसने, किससे और क्यों कहा?

उत्तर—सूबेदार को लपटन साहब के षड्यंत्र से बचाने के लिए उसने हजारा सिंह से ऐसा कहा। यह कथन लहनासिंह ने वजीरासिंह से कहा।

प्रश्न 3. सूबेदारनी के चरित्र की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—(क) सरल और सहज स्वभाव। (ख) मातृत्व का भाव और सच्ची पत्नी।

प्रश्न 4. 'उसने कहा था' कहानी की पृष्ठभूमि में किस युद्ध का वातावरण चित्रित है?

उत्तर—'उसने कहा था' कहानी, प्रथम विश्वयुद्ध जो 1914 ई. से 1918 ई. में इंग्लैण्ड फ्राँस आदि और जर्मनी के बीच हुए युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित है। कहानी इसी युद्ध के वातावरण का चित्रण है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. 'उसने कहा था' कहानी के शीर्षक पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर— जो शीर्षक छोटा हो, जिज्ञासात्मक हो, कथानक को अपने में समेटे हुए हो, वही शीर्षक अच्छा माना जाता है। प्रस्तुत कहानी का शीर्षक केवल तीन शब्दों का है। यह जिज्ञासात्मक है। अन्त तक पाठक की यह जिज्ञासा रहती है कि किसने और क्या कहा था। शीर्षक में सारी कहानी प्रतिबिम्बत होती है।

प्रश्न 2. 'बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही'—कथन की युक्तियुक्त विवेचना कीजिए।

उत्तर—घोड़े को घुमाना और संध्या को धूल में लिटाना बहुत आवश्यक है। अगर घोड़े को घुमायें नहीं तो वह अड़ियल हो जाता है। इसी प्रकार सिपाही में लड़ने के समय जोश आता है। यदि उसे युद्ध के मैदान में लड़ने का अवसर न मिले तो वह सुस्त और आलसी हो जाता है, उसका जोश समाप्त हो जाता है।

प्रश्न 3. सूबेदारनी ने स्वप्न में लहनासिंह से क्या कहा ? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—सूबेदारनी ने स्वप्न में लहना सिंह से कहा कि एक दिन उसने घोड़े के बिगड़ने पर उसकी रक्षा की थी। उसका एक ही बेटा है आज वह और पति दोनों लाम पर जा रहे हैं। जैसे तैने मेरी रक्षा की थी, उसी प्रकार इनकी भी रक्षा करना। मैं तुझसे इनकी रक्षा की भीख माँगती हूँ।

प्रश्न 4. 'उसने कहा था' कहानी की मूल संवेदना क्या है ?

उत्तर—'उसने कहा था' कहानी की मूल संवेदना निश्छल प्रेम, त्याग और कर्त्तव्यनिष्ठा है। लहनासिंह बचपन में अंकुरित प्रेम के लिए अपने जीवन का उत्सर्ग करता है और जो वचन दिया था उसके पालन में अपने प्राणों का बलिदान कर देता है। दूसरी ओर वह एक सिपाही के कर्त्तव्य का भी निर्वाह करता है। इस प्रकार लहनासिंह का प्रेम, त्याग और कर्त्तव्यपरायणता ही कहानी की मूल संवेदना है।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. यदि आप लहनासिंह के स्थान पर होते तो युद्धभूमि में क्या करते ? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर—'उसने कहा था' कहानी का प्रधान पात्र लहना सिंह ब्रिटिश सरकार का सिपाही था। उसे प्रथम महायुद्ध में फ्राँस में जर्मन सेना के विरुद्ध युद्ध करने को भेजा गया था। युद्ध में उसने एक कर्तव्यनिष्ठ और त्वरित बुद्धि सैनिक की भूमिका निभाई । हम यदि उसके स्थान पर हो तो वही सब करते जो लहनासिंह ने किया। जैसी परिस्थितियाँ थीं, उनको देखते हुए लहना सिंह ने जो भूमिका अदा की, उससे बढ़कर हम भी कोई और रास्ता नहीं अपना सकते थे ।

प्रश्न 2. 'उसने कहा था' कहानी के नायक लहनासिंह का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर—लहनासिंह कहानी का नायक है। उसके चरित्र की कतिपय विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

प्रत्युत्पन्नमति सैनिक—लहनासिंह में परिस्थिति के अनुसार त्वरित निर्णय लेने की क्षमता थी। खन्दक में जर्मन अधिकारी को पहचान लेने के बाद लहनासिंह ने वजीरासिंह को जगाकर सूबेदार को लौटा लाने के लिए तुरन्त भेज दिया। उसने मूर्छित जर्मन अफसर की जेबों की तलाशी लेकर सारे कागज भी निकाल लिए।

कर्त्तव्यनिष्ठ—लहनासिंह की कर्त्तव्यनिष्ठा की प्रशंसा की जानी चाहिए। खन्दक में खड़े होकर जहाँ एक ओर वह एक सिपाही के कर्त्तव्य का निर्वहन कर रहा था वहीं दूसरी ओर बीमार साथी के प्रति भी अपने कर्त्तव्य का निर्वाह कर रहा था। उसने सूबेदारनी के प्रति अपना कर्त्तव्य प्राण देकर भी निभाया।

निश्छल-प्रेमी—उसने बचपन के प्रेम को बिना किसी स्वार्थ में अन्तिम समय तक निभाया।

वचन का पक्का—लहनासिंह सूबेदारनी को बोधासिंह तथा सूबेदार की रक्षा करने का वचन देकर आया था। सूबेदारनी ने जो चाहा था लहनासिंह ने वही किया।

साहसी—लाहनासिंह बहुत साहसी था। जर्मन अफसर ने धोखे से सूबेदार को खन्दक से दूर भेज दिया। खन्दक में केवल आठ-दस सिपाही रह गये। जर्मन सिपाहियों के आक्रमण करने पर उसने अपना साहस नहीं खोया। वह सत्तर जर्मन सिपाहियों का साहस के साथ सामना करता रहा।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. 'उसने कहा था' कहानी के लेखक ने अन्य बड़े शहरों के इक्के और गाड़ी वालों की और अमृतसर के इक्के-गाड़ी वालों की भाषाओं में क्या अंतर बताया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—बड़े-बड़े शहरों के इक्के-गाड़ी वाले राह चलते पैदल लोगों को अंधा, बहरा कहते हुए उनके पैर कुचलते हुए, आगे चले जाते है। जबकि अमृतसर के गाड़ीवान बड़े धैर्य का परिचय देते हैं और 'भाई जी', 'खालसा ''लाला जी' के बिना बात नहीं करते ।

प्रश्न 2. ''अमृतसर के बम्बूकार्ट वालों की बोली का मरहम लगायें।'' कथन से लेखक का आशय क्या है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— लेखक का आशय अन्य शहरों के गाड़ी-इक्के वालों की कटु बोली से अमृतसर के इक्के-गाड़ी वालों की शिष्ट और मधुर बोली की श्रेष्ठता दिखाना है। उनका धैर्य और पैदल चलने वालों के प्रति उनका व्यवहार बड़े शहरों के गाड़ी-इक्के वालों के अशिष्ट व्यवहार से क्षुब्ध लोगों को निश्चय ही मरहम के समान सुखदायी लगेगा।

प्रश्न 3. कहानी 'उसने कहा था' के लड़के और लड़की का मिलन कहाँ और किस प्रकार हुआ ?

उत्तर—दोनों का मिलन शहर के चौक में स्थित एक दुकान पर हुआ । लड़का मामा के केश धोने के लिए दही लेने आया था और लड़की बड़ियाँ लेने आई थी। दुकानदार एक ग्राहक से उलझ रहा था इसलिए दोनों को बात करने का अवसर मिल गया। दोनों ने एक-दूसरे का स्थान भी जान लिया।

प्रश्न 4. 'कल; देखते नहीं, यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू।'

लड़की के इस कथन का बालक लहनासिंह के मन तथा व्यवहार पर क्या असर पड़ा?

उत्तर—लड़की से सम्भावना के विरुद्ध ऐसा उत्तर सुनकर लहना सिंह के मन को धक्का-सा लगा। उसे लगा जैसे किसी ने उससे उसकी प्रियवस्तु छीन ली हो। लौटते हुए उसने एक लड़के को धकेला, छावड़ी वाले की कमाई खत्म करा दी, कुत्ते को पत्थर मारा और किसी से टकरा कर अन्धे की उपाधि पाई। उसका यह व्यवहार चिढ़ से भरा था।

प्रश्न 5. 'राम-राम', यह भी कोई लड़ाई है।' यह कथन किसका है और उसने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर—यह कथन फ्राँस की युद्ध भूमि में एक खाई के अंदर स्थित सिपाही लहनासिंह का है। उसने ऐसा, वहाँ के कठिन और अप्रत्याशित हालातों को देखते हुए कहा। वहाँ हड्डियों को अकड़ा देने वाली भयंकर ठंड थी। खाई में कीचड़ भरी थी । लहनासिंह का अब तक ऐसे विषम हालातों में होने वाले युद्ध से पाला नहीं पड़ा था। इसी कारण उसे वह लड़ाई विचित्र लग रही थी।

प्रश्न 6. 'लहनासिंह की स्थिति परकटे पक्षी की तरह है जो उड़ना चाहता है पर विवश है।' स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—परकटा पक्षी डैनों के अभाव में उड़ने में असमर्थ होता है। यही स्थिति लहनासिंह की है। वह जर्मनों पर धावा करना चाहता है किन्तु बड़े अफसर का आदेश नहीं था। खन्दक में पड़े-पड़े हड्डियाँ अकड़ गई थीं। किन्तु अब वह क्या करे। सिपाही होने के कारण लड़ने का जोश आता है। पर आदेश के अभाव में सारे अरमान ठण्डे पड़ जाते हैं। वास्तव में उसकी स्थिति परकटे पक्षी की ही थी।

प्रश्न 7. "जैसे मैं जानता न होऊँ।" सूबेदार हजारासिंह लहनासिंह के बारे में क्या जानता था?

उत्तर—हजारासिंह जानता था कि लहनासिंह बोधासिंह का पूरा ध्यान रखता है। रात-रात भर जागकर उसकी जगह पहरा देता है। अपना कम्बल उसे ओढ़ा देता है और स्वयं सिगड़ी के सहारे ठण्डी रात बिता देता है। अपने सूखी लकड़ी के तख्तों पर उसे सुला देता है। वह खन्दक में कीचड़ में पड़ा रहता है। हजारासिंह लहनासिंह के इस त्याग और सेवा को अच्छी तरह जानता था।

प्रश्न 8. फ्रांस की नारियों का भारतीय सैनिकों के प्रति कैसा व्यवहार था ? कहानी के आधार पर लिखिए।

उत्तर—भारतीय सैनिक इंग्लैण्ड की सरकार द्वारा फ्रांस की रक्षा के लिए तैनात किए गए थे। वहाँ की स्त्रियाँ उन्हें अपने देश का रक्षक मानते हुए उनका बड़ा आदर करती थीं । उनका सैनिकों के प्रति मधुर व्यवहार था। वे उन्हें मुफ्त दूध, फल तथा अन्य वस्तुएँ प्रदान करती थीं । सिख धर्म के नियम नहीं जानने के कारण उन्हें सिगरेट पिलाने का हठ करती थीं।

प्रश्न 9. लपटन साहब का वेश बनाकर आए जर्मन ने खाई पर कब्जा करने के लिए हजारासिंह से क्या झूठ बोला ?

उत्तर—जर्मन जासूस ने लपटन साहब के लहजे में हजारासिंह को हुक्म दिया कि उसे मील भर दूर एक जर्मन खाई पर हमला करना है। वहाँ पचास के लगभग जर्मन सैनिक हैं । वह वहाँ पन्द्रह सैनिक खड़े कर आया है। तुरंत धावा बोलने का आदेश दिया। हजारा सिंह उस नकली लपटन साहब को पहँचान नहीं पाया और उसकी बातें सच मान कर धावा बोलने चल दिया ।

प्रश्न 10. "उसे सन्देह नहीं रहा था।" लहनासिंह को किस बात में सन्देह नहीं रहा और सन्देह उसने कैसे दूर किया ?

उत्तर—लहनासिंह को निश्चय हो गया लपटन साहब भारतीय अफसर नहीं है। उसने सिगड़ी के उजाले में आगन्तुक का मुँह और बाल देख लिये थे, जो कैदियों की तरह कटे थे। उसने लपटन साहब की असलियत जानने के लिए कुछ झूठे किस्से सुनाए और प्रश्न किए। इन सारे प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' में सुनकर उसका सन्देह दूर हो गया कि यह कोई जर्मन अधिकारी है।

प्रश्न 11. संदेह दूर होने पर लहनासिंह ने वजीरासिंह से क्या कहा ?

उत्तर—लहनासिंह ने वजीरासिंह से कहा कि, यह भारतीय लपटन साहब नहीं है बल्कि उनकी वर्दी पहनकर कोई जर्मन आया है। हम पर कयामत आ गई है। सूबेदार बिना इसका मुँह देखे चला गया है। हमारे साथ धोखा हुआ है। अब हम पर आक्रमण होगा और हम मारे जाएँगे। अत: मेरी बात मानकर तुरन्त चले जाओ अन्यथा सभी मारे जायेंगे।

प्रश्न 12. लहनासिंह ने लौटकर नकली लपटन साहब को क्या करते पाया ?

उत्तर—अन्दर से लौटकर लहनासिंह ने देखा कि लपटन साहब ने तीनो-गोलों को खन्दक में जगह-जगह रखा और तीनों को एक तार से बाँध दिया। उसने गोलो से जुड़ी गुत्थी को दियासलाई से जलाने का प्रयास किया कि लहनासिंह ने दोनों हाथों से उठाकर उल्टी बन्दूक को साहब की कुहनी पर दे मारा जिससे दियासलाई गिर गई और एक कुन्दा साहब की गर्दन पर मारा। जिससे साहब बेहोश हो गए। उनकी जेब से तीन-चार लिफाफे और एक डायरी निकालकर अपने पास रख ली।

प्रश्न 13. ''लहना को चकमा देना आसान नहीं।'' इसका आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—लहना ने जर्मन अफसर से कहा, ''मुझे चकमा देने के लिए चार आँखें चाहिए।'' सूबेदार तो लपटन के धोखे में आ गए लेकिन उसने लपटन के उत्तरों, उसकी भाषा एवं वेश से पहचान लिया कि यह धोखेबाज जर्मन है। उसने अपने गाँव के तुरकी मौलवी को भी पहचान लिया था। जर्मन लपटन ने उसे धोखा देने का प्रयास तो किया मगर सफल नहीं हो सका।

प्रश्न 14. लपटन के होश में आने पर लहनासिंह ने व्यंग्य में क्या कहा ? और अंततोगत्वा उसके साथ क्या किया ?

उत्तर—जर्मन जब होश में आया तो लहनासिंह व्यंग्यपूर्वक हँसा और उससे पूछा ''मिजाज कैसा है ?'' आज उसे उनसे ज्ञात हुआ कि सिख सिगरेट पीते हैं। यह जाना कि जगाधरी जिले में नीलगाय होती हैं जिनके दो फुट चार इंच के सींग होते हैं। यह सीखा कि मुसलमान मन्दिरों में जल चढ़ाते हैं। इतने में जर्मन ने जेब से पिस्तौल निकालकर गोली चलाई लेकिन लहनासिंह ने उसे मौत के घाट उतार दिया।

प्रश्न 15. लपटन साहब बनकर आए जर्मन के लहनासिंह द्वारा मारे जाने पर क्या हुआ ?

उत्तर—जर्मन जासूस की योजना के अनुसार पहले से तैयार सत्तर जर्मन सैनिकों ने लहनासिंह की खाई पर हमला बोल दिया। लहनासिंह समेत खाई में कुल आठ सिख सैनिक थे। वे उन पर भारी पड़ने लगे। इसी समय सूबेदार हजारा सिंह ने लौटकर पीछे से जर्मन सैनिकों पर गोलिया बरसाना शुरू कर दिया। तिरसठ जर्मन सैनिक हताहत हो गए। पन्द्रह सिख सैनिक भी बलिदान हो गए ।

प्रश्न 16. सूबेदार के बार-बार कहने पर भी लहना सिंह उसके साथ अस्पताल क्यों नहीं गया ?

उत्तर—लहनासिंह की पसली में गोली लगी थी। घाव घातक था किन्तु लहना सिंह ने घाव को मिट्टी से भरकर उस पर पगड़ी का बचा हुआ भाग कस कर बाँध लिया। किसी को पता न चला कि उसे भारी घाव लगा था । उसे पता था कि उसका बचना कठिन था। इसी कारण वह सूबेदार के साथ नहीं गया। यदि सूबेदार को पता चल जाता तो वह लहना सिह को छोड़कर कदापि नहीं जाता । इससे बोधासिंह का जीवन संकट में पड़ जाता ।

प्रश्न 17. ''मुझसे उसने जो कहा था वह मैंने कर दिया।'' लहना सिंह से किसने क्या कहा था ?उसने उसे कैसे पूरा कर दिया ? स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर—सूबेदारनी अमृतसर के चौक की दूकान पर लहना सिंह से मिलने वाली लड़की ही थी। उसने लहना सिंह को देखते ही पहचान लिया था। उसके पति और पुत्र दोनों युद्ध में जा रहे थे । उसने लहना सिंह को अपना परिचय देते हुए उससे पति और पुत्र की रक्षा

करने की याचना की थी । लहना सिंह ने स्वयं कष्ट सहकर और प्राणों को दाँव पर लगा कर अपने वचन को पूरा कर दिया ।

प्रश्न 18. "मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति बहुत साफ हो जाती है।" कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—हजारासिंह और अन्य लोगों के चले जाने के बाद घायल लहनासिंह वजीरासिंह की गोद में सिर रखकर लेट गया। उसका अंत निकट था। उसे अपने जीवन की पुरानी घटनाएँ याद आने लगीं। बचपन में लड़की से मिलना और फिर उसी से सूबेदार की पत्नी के रुप में मिलना, सूबेदारनी द्वारा उसे बचपन में मिलने की घटना याद कराना, उससे पति और पुत्र की रक्षा का वचन लेना आदि सारी पुरानी बातें उसे स्पष्ट रूप में याद आ रही थीं।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. 'उसने कहा था' कहानी का कथानक निश्छल प्रेम, त्याग और कर्त्तव्यनिष्ठा को केन्द्र में रखकर बुना गया है और लहना सिंह की मृत्यु शैय्या पर उसका अन्त होता है—इस कथन की युक्तियुक्त विवेचना कीजिए।

उत्तर—'उसने कहा था' कहानी का आरम्भ निश्छल प्रेम से होता है। भीड़ भरे बाजार में बारह वर्ष का लड़का और आठ वर्ष की लड़की एक दुकान पर मिलते हैं। कहानी बड़े सहज रूप से आरम्भ होती है। लड़के-लड़की के मिलन में कोई बनावट नहीं है।

कहानी का दूसरा मुख्य बिन्दु त्याग है। कहानी के नायक लहनासिंह के त्याग को कई उदाहरणों से व्यक्त किया गया है। लहनासिंह ने सूबेदार के पुत्र बोधासिंह के लिए बहुत त्याग किया। लहनासिंह ने बोधासिंह को सूखे डिब्बों पर सुलाया, अपना कम्बल दिया, ओवरकोट उढ़ाया, जरसी पहनाई और आप एक कुर्ते में ही ठण्ड में खड़ा रहा। यह त्याग कम नहीं है।

कर्त्तव्य के क्षेत्र में उसने दो महान कर्त्तव्यों का निर्वाह किया। प्रेम के क्षेत्र में बोधासिंह और हजारासिंह को सुरक्षित वापिस भेज दिया और अपने प्राणों की बाजी लगा दी, सिपाही के रूप में जर्मन लपटन को मौत के घाट उतारना, घायल होकर भी जर्मन सेना का सामना करना लेकिन पीछे न हटना उसकी कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रमाण है।

'उसने कहा था' एक दुखान्त कहानी है। सहानुभूति और सराहना से वंचित एक वीर सिपाही की मृत्यु बड़ी मर्मस्पर्शी है।

प्रश्न 2. उसने कहा था। कहानी की मूलभूत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—कहानी की मूलभूत विशेषताएँ चार होती हैं— (1) कथानक (2) शीर्षक (3) भाषा-शैली (4) वातावरण का चित्रण।

(1) कथानक— 'उसने कहा था' कहानी की प्रमुख विशेषता उसका कथानक है। यह बड़ा मार्मिक है। कहानी का आरम्भ निश्छल प्रेम से होता है, मध्य भाग में कर्त्तव्यनिष्ठा और सेवाभाव है। अंत तो पाठक को स्तब्ध कर देने वाला है। अन्त में नायक लहनासिंह का स्वप्न हृदय को छू जाता है कथानक में 'पूर्वदीप्ति' (फ्लैशबैक) तकनीक अपनाई गई है।

(2) शीर्षक— इस कहानी का मात्र तीन शब्दों का शीर्षक जिज्ञासा को जगाने वाला और सार्थक है।

(3) भाषा-शैली—भाषा सरल है। आँचलिक शब्दों का; जैसे—बाछा, सालू, बर्रा, ओबरी आदि का प्रयोग अधिक है। कहीं-कहीं उर्दू और तत्सम शब्दों के प्रयोग भी मिल जाते हैं; जैसे—कयामत, क्षयी आदि। शैली में कथोपकथन की प्रधानता है। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे छोटे और आकर्षक हैं।

(4) वातावरण का चित्रण—अमृतसर के भीड़ भरे बाजार के वातावरण से कहानी आरम्भ होती है। बम्बूकार्ट वालों का संवाद तथा युद्ध का दृश्यांकन वातावरण के निर्माण में सफल है।

प्रश्न 3. 'उसने कहा था' कहानी की भाषा-शैली की दृष्टि से समीक्षा कीजिए।

उत्तर—भाव और कथानक कितना भी अच्छा हो किन्तु भाषा शिथिल हो तो कहानी प्रभावशाली नहीं बन पाती है। भाषा पात्रानुकूल है। जैसा पात्र वैसी ही भाषा। बम्बूकार्ट वालों की भाषा इसका प्रमाण है, जिसमें तीक्ष्णता नहीं कोमलता है। 'तेरी कुड़माई हो गई?' 'धत्,' दो शब्दों में लेखक अनेक भावों को मूर्त कर दिया है।

सैनिकों की भाषा में हिन्दी, उर्दू, पंजाबी और अंग्रेजी शब्दों के तद्भव रूप सिपहिया भाषा में रूप में उपस्थित हैं । भाषा में मुहावरों के प्रयोग से बड़ी सरसता आ गई है। दाँत बज रहे हैं, खेत रहे, पलक न झँपी, आँख मारते-मारते जैसे मुहावरे सहज ही आ गए हैं।

कहानी की प्रधान शैली कथोपकथनात्मक शैली है। कथोपकथन छोटे हैं और पात्रों के अनुकूल हैं। कहानी के अन्त में प्रत्येक कथन दर्द से भरा है। वहाँ भी छोटे ही कथोपकथन हैं। इस प्रकार भाषा शैली की दृष्टि से भी कहानी श्रेष्ठ है।

प्रश्न 4. उसने कहा था। कहानी में वातावरण का सुन्दर संयोजन हुआ है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—वातावरण चित्रण कहानी का एक महत्वपूर्ण तत्त्व है। वातावरण के चित्रण से कहानी में सजीवता, स्वाभाविकता और रोचकता आ जाती है । 'उसने कहा था' कहानी का आरम्भ अमृतसर के बाजार से होता है। लेखक ने अपनी भाषा- शैली से वातावरण को सजीव और यथार्थ बना दिया है। युद्ध के मैदान के वातावरण का तो बड़ा यथार्थ चित्रण हुआ है। ठण्ड अधिक है। खन्दक में पिंडलियों तक कीचड़ में धँसे हुए हैं। ठण्ड के मारे हड्डियाँ ठिठुर गई हैं। दाँत किट-किटा रहे हैं। जर्मनी वाले गोले बरसाते हैं जिससे धरती हिल जाती है। युद्ध के मैदान में सिपाही कितनी तीव्र बुद्धि से काम करते हैं। आक्रमण कैसे होता है? शत्रु पर कैसे विजय पाई जाती है। इन सब बातों का सजीव वर्णन हुआ है।

कहानी के अंतिम दृश्य के द्वारा लेखक ने मृत्यु के मुख में जाते लहनासिंह के संवादो से बड़े गंभीर वातावरण की सृष्टि की है। वातावरण निर्माण की दृष्टि से कहानी सफल है।

प्रश्न 5. 'उसने कहा था' कहानी आपके मन पर क्या प्रभाव छोड़ती है। अपने अनुभव संक्षेप में व्यक्त कीजिए।

उत्तर—'उसने कहा था' कहानी को पढ़ने के बाद मन को ऐसा लगता है कि यह कहानी अन्य कहानियों से हटकर है। प्रेम वास्तव में क्या होता है, इसकी एक मार्मिक झलक हमारे मन की संवेदनाओं को गहराई से छू जाती है।

कहानीकार ने पच्चीस वर्षों के अंतरलाल को अपने कथाशिल्प से सहज ही भर दिया है। कहानी 'प्रेम' की एक अद्भुत व्याख्या प्रस्तुत करती है। त्याग के बिना प्रेम मात्र एक दिखावा होता है, कहानी ने इस शाश्वत सत्य को प्रतिष्ठित कर दिखाया है।

कहानी में मेरे मेरे मन पर अमिट प्रभाव छोड़ा है।

प्रश्न 6. कहानी 'उसने कहा था' हमें किन मानवीय गुणों से परिचित कराती है? प्रकाश डालिए।

उत्तर—'उसने कहा था' कहानी में गुलेरी जी ने अनेक उदात्त मानवीय मूल्यों को निपुणता से पिरोया है। कहानी का आरम्भ ही हमको धैर्य और प्रिय-भाषण के प्रभाव से परिचित कराता है। बम्बू कार्टवालों के संबोधन बताते हैं कि वाणी को कड़वी बनाए बिना भी जीवन में रास्ता बनाया जा सकता है।

कर्त्तव्यनिष्ठा दूसरा गुण है जो कहानी में आगे सामने आता है। एक कर्त्तव्यनिष्ठ सैनिक के रूप में लहना सिंह की भूमिका सराहनीय है।

वचन पालन और चरम बलिदान इस कहानी में प्रस्तुत ऐसे मानवीय गुण हैं जिनकी महक कहानी समाप्त होने पर भी पाठकों के मन में वर्षों तक महकती रहती है। लहनासिंह सूबेदारनी को दिए वचन का ढिंढोरा नहीं पीटता, प्रेम की कीमत को नहीं गिराता, सिर्फ इतना कहलवाता है—''उसने मुझसे जो कहा था वह मैंने कर दिया। प्रेम जैसे दुर्लभ मानवीय गुण की सुगंध से यह दुखान्त कहानी हमारे मन को सुरभित कर जाती है।

❑❑

2 सत्य के प्रयोग (आत्म कथा)

—मोहनदास करमचन्द गाँधी

लेखक परिचय—मोहनदास करमचन्द गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को गुजरात (काठियावाड़) के पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआ। गाँधी जी भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रमुख नेता थे। उन्होंने सत्याग्रह के माध्यम से ब्रिटिश हुकूमत के अत्याचारों से भारतीयों को स्वतंत्रता दिलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके सत्याग्रह की नींव अहिंसा के सिद्धान्त पर आधारित थी। आज पूरा संसार उन्हें महात्मा गाँधी के नाम से जानता है। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस से 6 जुलाई, 1944 को रंगून में रेडियो से गाँधी के नाम जारी प्रसारण में उन्हें राष्ट्रपिता कहकर सम्बोधित करते हुए आजाद हिन्द फौज के लिए उनका आशीर्वाद और शुभकामनाएँ माँगी थीं। देश में प्रतिवर्ष उनका जन्मदिन 'गाँधी जयन्ती' और विश्व में 'अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा' दिवस के रूप में मनाया जाता है। सत्य और अहिंसा उनके सच्चे हथियार थे। दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने बहुत संघर्ष किया। काले-गोरे के भेद के कारण उन्हें रेल के प्रथम श्रेणी के डिब्बे से उतार दिया गया। उन्हें अधिकार की भूख नहीं थी। इसी कारण देश के स्वतन्त्र होने पर कोई पद और अधिकार नहीं लिया। जब सारा देश स्वतन्त्रता का आनन्द ले रहा था तब वे दूर घूम रहे थे। इनका निधन 30 जनवरी, 1948 को हुआ।

पाठ–सारांश

अन्नाहार में विश्वास—अन्नाहार पर गाँधी का पूरा विश्वास था। इस विषय में उन्होंने सॉल्ट, हावर्ड विलियम्स, डॉक्टर मिसेज ऐना किंग्सफर्ड और डॉ. एलिन्सन की पुस्तकें पढ़ीं। इसके अतिरिक्त भी अन्नाहार से सम्बन्धित कई पुस्तकें पढ़ डालीं। इन पुस्तकों के पढ़ने से आहार विषयक प्रयोग का महत्त्व बढ़ गया। प्रारम्भ में इस विषय में आरोग्य की दृष्टि मुख्य थी। बाद में धार्मिक दृष्टि सर्वोपरि हो गई।

गाँधी के मित्र को चिन्ता थी कि वे माँस नहीं खायेंगे तो कमजोर हो जायेंगे, बेवकूफ कहलायेंगे और अंग्रेज समाज में मिल नहीं सकेंगे। वे उन्हें विक्टोरिया होटल ले गए जिसका उन्हें कड़वा अनुभव हुआ। सूप में माँस है या नहीं। यह सुनकर मित्र को बुरा लगा। गाँधी वहाँ से आ गए। उन्हें रात भूखे ही काटनी पड़ी। पर इस घटना से मित्रता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

सभ्य बनने की सनक— गाँधी ने सभ्य बनने का प्रयास किया। 'आर्मी और नेवी' स्टोर में कपड़े सिलवाए, चिमनी टोपी पहनी, बॉण्ड स्ट्रीट में भी कपड़े सिलवाए। सोने की चैन मँगाई। टाई बाँधना सीखा। बालों को सँवारा। नाचना सीखा, फ्रेंच भाषा सीखी। पियानो बजाना सीखा, वायोलिन सीखने का प्रयास भी किया पर सफलता नहीं मिली। भाषण देने की कला भी सीखी। अन्त में बेल साहब ने उन्हें सावधान किया। गाँधी को अनुभव हुआ कि उन्हें इंग्लैण्ड में नहीं रहना है। भाषण कला सीखकर क्या करेंगे। वायोलिन भारत में भी सीखा जा सकता है। विद्या-धन बढ़ाना चाहिए। उन्होंने सोचा सदाचार से सभ्य बनना उचित है। सभ्य बनने की सनक छोड़ दी।

भ्रष्टाचार का विरोध—एशियाई अधिकारियों का बड़ा थाना जोहानिस्बर्ग में था। इस थाने में हिन्दुस्तानी और चीनी आदि का भक्षण होता था, रक्षण नहीं। इस थाने में बिना रिश्वत के काम नहीं होता है ऐसी शिकायत गाँधी के पास रोज आती। लोगों को गाँधी से आशा थी इस सड़ांध को दूर करने की। वे प्रमाण के साथ पुलिस कमिश्नर से मिले, जिसने बड़े धैर्य से उनकी बात सुनी। स्वयं गवाहों के बयान भी लिये। पर वह यह जानता था कि दक्षिण अफ्रीका में गोरे पंच गोरे लोगों का ही समर्थन करेंगे। अत: अपराधियों को दण्ड दिलाना कठिन है। फिर भी उसने विश्वास दिलाया कि मैं अपराधियों को दण्ड दिलाने का प्रयास करूँगा।

अन्य अधिकारियों के भ्रष्ट होने के प्रमाण गाँधी के पास नहीं थे। केवल दो अधिकारियों के प्रमाण ही उनके पास थे। प्रमाण के होते हुए भी जूरी ने उन्हें माफ कर दिया। गाँधी को इससे बड़ी निराशा हुई। पर सरकार ने दोनों अधिकारियों को बरखास्त कर दिया। जिससे हिन्दुस्तानियों को थोड़ी राहत मिली। इससे गाँधी की प्रतिष्ठा बढ़ी।

व्यक्ति नहीं उसके बुरे काम का विरोध—बरागस्त अधिकारियों के प्रति गाँधी के हृदय में कटुता नहीं थी बल्कि सहानुभूति का भाव था। उनमें से एक की उन्होंने नौकरी भी लगवा दी थी। गाँधी के सम्पर्क में जो आये वे उनके स्वभाव के कारण उनसे निर्भय हो गये। अपने इस व्यवहार को गाँधी ने सत्याग्रह की जड़ और अहिंसा का विशेष अंग माना। अच्छे काम का आदर और बुरे का तिरस्कार होना चाहिए। भले-बुरे काम वालों के प्रति आदर और दया का भाव रखना चाहिए। व्यवस्था या पद्धति के प्रति झगड़ा तो उचित है, पर व्यवस्थापक से झगड़ा करना उचित नहीं है।

आत्मिक शिक्षा—गाँधी ने विद्यार्थी के शरीर और मन को शिक्षित करने की अपेक्षा उसकी आत्मा को शिक्षित करने में रुचि ली। वे मानते थे कि विद्यार्थी को अपने धर्म के मूल तत्त्व जानने चाहिए। अपने धर्मग्रन्थों का ज्ञान होना चाहिए। वे इसे बुद्धि की शिक्षा का अंग मानते थे। आत्मा का विकास करने का अर्थ है—चरित्र का निर्माण करना, ईश्वर का ज्ञान तथा आत्मज्ञान प्राप्त करना। इसके बिना दूसरा ज्ञान व्यर्थ है। पर इसके लिए परिश्रम की आवश्यकता होती है।

लोग आत्मज्ञान को चौथे आश्रम की चीज मानते हैं जिसे गाँधी स्वीकार नहीं करते। आत्मज्ञान किस प्रकार दिया जाय? इसके लिए वे बालकों को भजन सुनाते तथा नीति की पुस्तकें पढ़कर सुनाते। गाँधी ने अनुभव किया कि आत्मज्ञान पुस्तकों द्वारा सम्भव नहीं है। शिक्षक के आचरण द्वारा ही सम्भव है। गाँधी जी ने एक बार टॉल्स्टॉय आश्रम के एक ऊधमी छात्र को दण्डा मारा जिस पर उन्हें बड़ा दुख हुआ । लड़का रोया और क्षमा माँगी। वे विद्यार्थी को पीटने के पक्ष में नहीं थे।

शान्ति निकेतन—शान्ति निकेतन में गाँधी जी को अध्यापकों और छात्रों से बहुत प्रेम मिला। स्वागत की विधि सरल एवं सादगीपूर्ण थी। यहीं वे काका साहब कालेलकर से पहली बार मिले। केशवराय देशपाण्डे बड़ौदा में गंगनाथ विद्यालय चला रहे थे। वे विद्यालय में पारिवारिक भावना के पक्षधर थे। इसी भावना से यहाँ अध्यापकों के नाम रखे गए। वहीं कालेलकर को 'काका' का नाम दिया गया। अन्य अध्यापकों को भी नाम दिये गये। काका कालेलकर के अन्य साथियों से भी उनका परिचय हो गया था। देशपाण्डे को साहब कहा जाता था। जब यह विद्यालय बन्द हुआ तो सारा कुटुम्ब बिखर गया। काका साहब और चिन्तामणि शास्त्री शान्ति निकेतन में रहने लगे।

शान्ति निकेतन में मगनलाल गाँधी एक मण्डल चला रहे थे। गाँधी का उस मण्डल से सम्बन्ध हो गया। यहाँ उनका अनेक विद्वानों से सम्पर्क हुआ। मगनलाल गाँधी ने अपने प्रेम, ज्ञान और उद्योग की सुगन्ध फैला रखी थी। गाँधी यहाँ विद्यार्थियों और शिक्षकों से घुल-मिल गये थे, वे वहाँ स्वपरिश्रम के सम्बन्ध में चर्चा करते। उन्होंने वहाँ स्वयं रसोई बनाने का प्रस्ताव रखा जिससे आरोग्य और रसोई पर शिक्षक समाज का प्रभुत्व हो जाएगा तथा विद्यार्थी स्वावलम्बी तथा स्वयंपाक का पाठ सीख सकेंगे। प्रयोग पसन्द आया और कविश्री ने भी समर्थन किया लेकिन यह बात कही कि शिक्षक स्वीकार कर लें तभी सम्भव है। पियर्सन ने पूरा सहयोग दिया। अलग-अलग मण्डलियों को काम बाँट दिया गया। इस सुझाव पर चर्चाएँ हुईं। पर पियर्सन नहीं थके। पियर्सन बड़े-बड़े बरतन माँजते। कुछ विद्यार्थी सितार बजाते। सारा शान्ति निकेतन मधुमक्खियों के छत्ते की तरह गूँजने लगा। रसोईघर स्वावलम्बी बन गया। रसोई सादी बनती। पर यह प्रयोग अधिक दिन नहीं चला। परन्तु इससे अनुभव बहुत हुए। गोखले के निधन के कारण गाँधी शान्ति निकेतन में अधिक नहीं रह सके। गाँधी ने एक वर्ष तक भ्रमण किया और सत्याग्रह नहीं किया। क्योंकि गोखले ने एक वर्ष तक भ्रमण करने की प्रतिज्ञा करा ली थी।

खादी का जन्म—गाँधी ने 1908 तक करघा और चरखा नहीं देखा था। पर वे यह मानते थे कि चरखे से ही हिन्दुस्तान की कंगाली मिट सकती है। तभी स्वराज्य मिलेगा। दक्षिण अफ्रीका से आने के बाद आश्रम खुलने पर करघा शुरू हुआ। यद्यपि बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा क्योंकि करघे के बारे में सभी अनजान थे। आश्रम के लोग व्यापारी या कलम चलाने वाले थे पर कारीगर कोई नहीं था। काठियावाड़ और पालनपुर से करघा और उसको सिखाने वाला मिला। मगनलाल गाँधी ने यह कला सीख ली और नये बुनने वाले तैयार हुए।

आश्रमवासियों ने हथकरघे से देशी मिल के सूत का बना कपड़ा पहनने का निश्चय कर लिया। ऐसा करने से बहुत कुछ सीखा। इस हेतु बाहरी बुनकरों की भी सहायता लेनी पड़ी। मिल के सूत का हाथ से बुना कपड़ा जल्दी नहीं मिलता था। हमारी मिलें महीन सूत नहीं कात सकती थीं। बहुत कठिनाई से बुनकर मिले जो देशी सूत का हाथ का कपड़ा बुनने को तैयार हुए। इस प्रकार तैयार किया हुआ कपड़ा पहना। मिलें स्वयं कातकर स्वयं ही बुना कपड़ा तैयार करतीं, हाथकरघे को कम महत्त्व देतीं। इसलिए सबने हाथ से कातने का निश्चय किया। तभी पराधीनता दूर हो सकती थी। पर कहीं करघा नहीं मिला और न चरखा चलाने वाला मिला। कालिदास वकील एक औरत को लाए पर उसका हुनर हाथ नहीं लगा। भड़ौच शिक्षा परिषद् में गाँधी की मुलाकात गंगाबाई से हुई। वह बड़ी हिम्मत वाली और समझदार थी। उन्होंने गाँधी की चरखे की खोज में भटकने की प्रतिज्ञा पूरी की और उनका बोझ हल्का किया।

शब्दार्थ (पृष्ठ-12-13)—श्रद्धा = बड़ों के प्रति आदर का भाव। आहार = भोजन, खाने की वस्तु। जिज्ञासा = जानने की इच्छा। सर्वोपरि = सबसे ऊपर या बढ़कर। पद्धति = तरीका, ढंग। भ्रमित = शंकित, भ्रम में पड़ा हुआ। संकोच = हल्की या थोड़ी लज्जा का भाव। अन्नाहार = अन्न का भोजन। आरोग्य = स्वास्थ्य। न्योता = बुलाया।

(पृष्ठ-14)—जंगली = असभ्य। सभ्यता = सभ्य होने का भाव। विलायती = इंग्लैण्ड का। हस्तगत = सीखी, पकड़ी। आईना = दर्पण। व्यवस्थित = व्यवस्था का भाव, नियमित। अगम्य = कठिन, समय में न आने वाला। कटुता = कड़ुवापन। लक्षण = रंग-ढंग। सामर्थ्य = शक्ति, ताकत। छिछला = हल्का, उथला। उद्‌गार = अपने मन की बात।

(पृष्ठ-15)— सनक = पागलों की सी धुन। भक्षण = अहित। हकदार = अधिकार रखने वाले, अधिकारी। दाखिल = प्रवेश। कान में घंटी बजाई = ज्ञान कराया। लच्छेदार = चिकनी-चुपड़ी मजेदार बात। पेशे = व्यवसाय, धन्धा। इजाजत = स्वीकृति। धीरज = धैर्य। निगरानी = देखरेख, निरीक्षण। अत्याचार = अन्याय।

(पृष्ठ-16)—बरखास्त = नौकरी से हटाना। विरुद्ध = खिलाफ। प्रतिदिन = हररोज, प्रत्येक दिन। खबरें = सूचना, समाचार। अरुचि = घृणा, नफरत। प्रतिष्ठा = सम्मान। रिश्वत = घूँस। प्रामाणिक = प्रमाण युक्त, मानने योग्य। अधम = नीच, पापी, दोषी। मौका = अवसर। मंजूर = स्वीकार। यथाशक्ति = शक्ति या सामर्थ्य के अनुसार ।

(पृष्ठ-17)— मुलतवी = स्थगित। सार्वत्रिक = सब स्थानों पर होने वाला। शोध = खोज। प्रतिक्षण = हर क्षण, हर समय। अत्यन्त = अपार। निहित = स्थापित, विद्यमान। तिरस्कार = अपमान, अनादर, भर्त्सना। आत्मज्ञान = आत्मा का ज्ञान। आत्मिक = आत्मा की। आचरण = व्यवहार। हाजिर = उपस्थित। ऊधम = शरारत। मुकाबला = सामना। औचित्य = उपयुक्तता, सच्चाई। संयम = इन्द्रियों को वश में करना, रोक। बदौलत = कारण। रूल = डण्डा। अनुभव = ज्ञान, तजुरबा। पछतावा = पश्चाताप।

(पृष्ठ-18)—विवश = मजबूर। धर्म = कर्त्तव्य। प्रेम बरसाया = प्रेम दिखाया। आध्यात्मिक = आत्मा सम्बन्धी। आरोग्य = निरोग, स्वस्थ रहना। पारिवारिक = परिवार जैसी। यथायोग्य = जैसा उचित हो, मुनासिब। सिलसिले = क्रम। हिस्सा = भाग। सूक्ष्मता = गम्भीरता।

(पृष्ठ-19)— स्वपरिश्रम = अपनी मेहनत। वैतनिक = वेतन पाने वाले। स्वावलम्बन = अपने ऊपर निर्भर रहना, अपने पैरों पर खड़े होना। अवसान = मृत्यु। संवेदना = सहानुभूति।

(पृष्ठ-20)— सार्वजनिक = सब लोगों से सम्बन्ध रखने वाला। सम्मिलित = शामिल। आखिर = अन्त में। अक्षरश: = एक-एक अक्षर, पूरी तरह। कंगालियत = गरीबी। हुनर = कला।

(पृष्ठ-21)—अपेक्षाकृत = तुलना में। अनजान = अपरिचित। आवश्यकता = जरूरत। बुनकर हाथ लगे = बुनकर मिले। मेहरबानी = कृपा। स्वेच्छा = अपनी इच्छा। पराधीनता = गुलामी।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. एशियाई अधिकारियों का सबसे बड़ा थाना था—

(क) जूलू में (ख) चीन में (ग) जोहानिस्बर्ग में (घ) नेटाल में।

2. शान्ति निकेतन में गाँधी जी पहली बार किनसे मिले?

(क) केशवराय देशपाण्डे से (ख) जगदानन्द बाबू से (ग) मगनलाल गाँधी से (घ) काका कालेलकर से।

उत्तरमाला—1. (ग), 2. (घ)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. 'आहार नीति' पुस्तक में किनके विचारों का वर्णन किया गया है?

उत्तर— 'आहार नीति' नामक पुस्तक में अलग-अलग युगों के ज्ञानियों, अवतारों और पैगम्बरों के आहार और उनके आहार विषयक विचारों का वर्णन किया गया है।

प्रश्न 2. गाँधी जी के अनुसार आत्मज्ञान प्राप्ति के बारे में लोगों ने क्या भ्रम फैला रखा है?

उत्तर—गाँधी जी के अनुसार आत्मज्ञान प्राप्ति के बारे में यह भ्रम फैला हुआ है कि आत्मज्ञान चौथे आश्रम (वृद्धावस्था) में प्राप्त होता है।

प्रश्न 3. 'हिन्द स्वराज्य' पर गाँधी जी के विचारों का मजाक उड़ाते हुए गोखले ने क्या कहा?

उत्तर—गाँधी जी के 'हिन्द स्वराज्य' का मजाक उड़ाते हुए गोखले ने कहा था कि आप एक वर्ष हिन्दुस्तान में रहकर देखेंगे, तो आपके विचार अपने आप ठिकाने आ जाएँगे।

प्रश्न 4. शान्तिनिकेतन में बरतन माँजने वाली टुकड़ी थकान उतारने के लिए क्या करती थी?

उत्तर—शान्तिनिकेतन में बरतन माँजने वाली टुकड़ी की थकान उतारने के लिए कुछ विद्यार्थी वहाँ सितार बजाते थे।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. बेल साहब की पुस्तक ने गाँधी के जीवन-प्रवाह को किस तरह प्रभावित किया?

उत्तर—बेल साहब की पुस्तक ने उनके जीवन-प्रवाह को बदल दिया। उन्होंने लच्छेदार भाषण सीखना, नाचना तथा वायोलिन सीखना भी बन्द कर दिया और उसे बेचने के लिए कहा। वायोलिन शिक्षिका ने भी उनकी बात का समर्थन किया। बेल साहब ने गाँधीजी को सभ्य बनने की सनक को समाप्त करके उनके जीवन-प्रवाह को ही बदल दिया।

प्रश्न 2. दण्ड देने के औचित्य में गाँधी जी को क्या शंका थी?

उत्तर—गाँधी जी मारपीट कर पढ़ाने के पक्ष में नहीं थे। दण्ड के औचित्य के सम्बन्ध में उन्हें यह शंका थी क्रोध तथा दण्ड देने की भावना मिश्रित होने के कारण शारीरिक दण्ड दिया जाना शायद उचित नहीं था। इसलिए उन्होंने छात्रों को सुधारने के लिए अच्छी रीति अपना ली।

प्रश्न 3. गोखले ने गाँधी जी को क्या प्रतिज्ञा करवाई?

उत्तर—गोखले ने गाँधी जी से प्रतिज्ञा करवायी थी कि उन्हें एक वर्ष तक देश में भ्रमण करना है, किसी सार्वजनिक प्रश्न पर अपना विचार न तो बनाना है, न प्रकट करना है। गाँधी ने प्रतिज्ञा का पूर्ण पालन किया।

प्रश्न 4. 'फीनिक्स का रसोईघर स्वावलम्बी बन गया था'—कैसे?

उत्तर—फीनिक्स का रसोईघर स्वावलम्बी बन गया क्योंकि सब अपना काम अपने आप करने लगे। गाँधी ने प्रस्ताव रखा कि विद्यार्थी स्वयं भोजन बनाएँ, इससे भोजन सादा और शुद्ध बनेगा। एक मण्डली साग काटने वाली बनी, दूसरी अनाज साफ करने वाली बनी। विद्यार्थियों ने प्रत्येक कार्य को उत्साह से अपना लिया। इस प्रकार फीनिक्स का रसोईघर स्वावलम्बी बन गया।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. गाँधी जी ने सभ्य बनने के लिए जो प्रयोग किए, उन्हें अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—गाँधी जी अपने मित्र से स्वयं को असभ्य नहीं कहलाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने सभ्य बनने के उपाय आरंभ किए। उन्होंने आर्मी और नेवी स्टोर से कपड़े सिलवाए और बड़ी राशि व्यय की। फिर बॉण्ड स्ट्रीट से कपड़े सिलवाये। दोनों जेबों में लटकाने वाली सोने की चेन मँगवाई। टाई बाँधना सीखा आईने के सामने खड़े होकर बालों में पट्टी डालकर सीधी माँग निकालने में रोज दस मिनट का समय व्यय किया।

नाचना आना भी सभ्यता की निशानी थी। अत: नाचना सीखा। फ्रेंच भाषा सीखी। लच्छेदार भाषण कला भी आनी चाहिए। इस तरह सभ्य बनने का लोभ बढ़ता गया। इस प्रकार सभ्य बनने का भरसक प्रयत्न किया। मित्र पर चाहे कुछ प्रभाव पड़ा या नहीं पर गाँधीजी को सन्तुष्टि अवश्य हुई और झूठी सभ्यता की टीम-टाम से मुक्ति मिल गई।

प्रश्न 2. संकलित आत्मकथांश के आधार पर गाँधी जी के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—गाँधी जी की चारिगिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

सभ्य जीवन—गाँधी जी का विश्वास था कि विद्यार्थी को सादा और सभ्य जीवन व्यतीत करना चाहिए। आरम्भ में गाँधी जी ने सभ्य बनने के बाहरी उपाय अपनाए किन्तु अन्त में बेल साहब ने आँखें खोल दीं।

अन्नाहार की भावना—गाँधी जी अन्नाहार में विश्वास करते थे। अन्नाहार विषयक कई पुस्तकें उन्होंने पढ़ीं। एलिन्सन के अनुसार बीमारों को अन्नाहार की सलाह देते थे। बाद में धार्मिक दृष्टि सर्वोपरि बनी।

अन्याय से संघर्ष—दक्षिण अफ्रीका में काले-गोरे का भेद था। गोरों के प्रति पक्षपात था। दो गोरे अधिकारियों की भ्रष्टता के प्रति उन्होंने प्रमाण एकत्रित कर लिये और उन्हें दण्ड भी दिलवाया। अन्याय का विरोध करने के कारण उनका सम्मान बढ़ गया।

सद्भावना—गाँधी के हृदय में विरोधियों के प्रति कभी दुर्भावना नहीं रही। उन्होंने बरखास्त भ्रष्ट अधिकारियों को नौकरी दिलाने में मदद भी की ।

आत्म-निर्माण की भावना—गाँधी जी शरीर और मन को शिक्षित करने की अपेक्षा आत्म-निर्माण पर अधिक जोर देते थे। वे इस भ्रम को दूर करना चाहते थे कि आत्मज्ञान चौथेपन में प्राप्त होता है। वे यह मानते थे कि पुस्तकों से आत्मज्ञान नहीं दिया जा सकता। एक अध्यापक कहीं से भी विद्यार्थी में आत्म-निर्माण कर सकता है। पर उसे अपना आचरण शुद्ध रखना होगा।

स्वावलम्बन की भावना—गाँधीजी व्यक्ति को स्वावलम्बी बनाना चाहते थे। उनकी प्रेरणा से शान्ति निकेतन में विद्यार्थियों और अध्यापकों ने रसोई का काम सँभाल लिया।

स्वदेशी की भावना—गाँधीजी मानते थे कि चरखे से हिन्दुस्तान की कंगाली दूर हो सकती है। अत: उन्होंने छात्रों और साथियों को स्वदेशी वस्त्र पहनने की प्रेरणा दी।

प्रश्न 3. 'खादी का जन्म' पाठांश का सार अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—गाँधी जी यह मानते थे कि चरखे से ही हिंदुस्तान की कंगाली मिट सकती है। अत: उन्होंने आश्रम में चरखा चलवाया। करघे भी लगवाये। सभी ने निश्चय किया कि हथकरघे से बने देशी मिल के सूत का कपड़ा ही पहनेंगे। गाँधी जी ने निरंतर प्रयत्न करके गंगाबाई नामक एक साहसी महिला को खोज निकाला। गंगाबाई ने ही खादी पहनने के गाँधी के सपने को साकार कराया। सभी ने निश्चय किया कि हाथकरघे से बना देशी मिल के सूत का कपड़ा पहना जाए। हिन्दुस्तान के कारीगरों की गरीबी और कर्जदारी का पता लगा। सभी अपना कपड़ा स्वयं बुन सकें ऐसी स्थिति नहीं थी।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. अन्नाहार पर गाँधी की श्रद्धा क्यों बढ़ती गई ?

उत्तर—जब गाँधीजी ने आहार के विषय पर लिखी साल्ट की पुस्तक पढ़ी तो आहार के बारे में उनके मन में और अधिक पुस्तकें पढ़ने की जिज्ञासा हुई। उन्होंने हावर्ड विलियम्स, डाक्टर मिसेज ऐना किंग्सफर्ड तथा एलिन्सन आदि की पुस्तकें पढ़ीं । इन पुस्तकों के पढ़ने से अन्नाहार पर उनकी श्रद्धा और विश्वास बढ़ता चला गया ।

प्रश्न 2. इंग्लैण्ड में गाँधीजी के एक मित्र को उनके बारे में क्या चिन्ता थी ?

उत्तर—वह मित्र गाँधीजी को अन्नाहार पर पुस्तकें पढ़ते देखता था। अत: उसे यह चिन्ता रहने लगी कि अगर गाँधीजी मांस नहीं खाएँगे तो कमजोर हो जाएँगे। इसके अतिरिक्त अन्नाहारी होने से वह अँग्रेज समाज में घुलमिल नहीं पाएँगे और उनका जीवन व्यर्थ चला जाएगा। लोग उनको पिछड़ा हुआ समझेंगे।

प्रश्न 3. मित्र ने गाँधीजी को सुधारने के लिए अंतिम प्रयास क्या किया? उसका क्या परिणाम हुआ ?

उत्तर—मित्र ने गाँधीजी को नाटक दिखाने का निमंत्रण दिया। उससे पहले दोनों मित्र हाबर्न भोजन गृह में भोजन करने पहुँचे। मित्र ने सूप की प्लेट मँगाई। गाँधी जी शाकाहारी भोजन करना चाहते थे। अत: मित्र चिढ़ गया। गाँधी जी को उस दिन भूखा रहना पड़ा।

प्रश्न 4. भोजनालय में घटी घटना के बाद गाँधीजी और मित्र के संबंधों पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर—इस घटना के बाद गाँधीजी तथा उनके मित्र के बीच किसी प्रकार की कटुता नहीं आई। गाँधीजी जान गए कि उनके मित्र के प्रयत्नों के पीछे उनका गाँधीजी के प्रति प्रेमभाव ही था। अत: मित्र के आचार-विचारों के भिन्न रहते हुए भी गाँधीजी उनका और अधिक आदर करने लगे।

प्रश्न 5. गाँधीजी ने मित्र के डर को दूर करने के लिए क्या उपाय सोचा ?

उत्तर—मित्र के डर को दूर करने के लिए गाँधीजी मांसाहार के बजाय अन्य तरीकों से सभ्य बनने का निश्चय किया । उन्होंने अँग्रेज समाज में घुलने-मिलने के लिए अँग्रेजों जैसी वेशभूषा और जीवनचर्या अपनाने का निश्चय किया ।

प्रश्न 6. सभ्य दिखने के लिए गाँधीजी ने क्या-क्या कार्य किए ?

उत्तर—गाँधीजी ने सभ्यता सीखने के लिए महँगी पोशाकें सिलवाईं। कीमती 'चिमनी' टोपी पहनना आरम्भ किया। भाइयों से सोने की चेन मँगवाई, टाई बाँधना सीखा और बालों में पट्टी डालना तथा सीधी माँग निकालना सीखा।

प्रश्न 7. वेशभूषा सुधारने के साथ गाँधीजी ने सभ्यता के और कौन-कौन से गुण सीखे ?

उत्तर—गाँधीजी ने नाचना सीखा। फ्राँसीसी भाषा सीखी, लच्छेदार भाषण करना सीखा, नृत्य के लिए नृत्य की कक्षा में भरती हुए पर पैरों को ताल के साथ रखना नहीं सीख पाए। वायलिन बजाना सीखने के लिए वायलिन खरीदा।

प्रश्न 8. बेल साहब की पुस्तक पढ़ने पर गाँधीजी को क्या बोध हुआ ?

उत्तर—बेल साहब की पुस्तक ने गाँधीजी के कान में समझदारी की घंटी बजाई। वह सोचने लगे कि उन्हें कौन सदा इंग्लैण्ड में रहना है जो अँग्रेजों की नकल करने की मूर्खता की जाए। उन्होंने अपने सदाचार के बल पर सभ्य कहलाने का निश्चय किया।

प्रश्न 9. 'मनुष्य और उसका काम'— इस विषय पर गाँधीजी के क्या विचार थे ? (उ. मा. शि. बो. 2018)

उत्तर—गाँधीजी के अनुसार मनुष्य के भले-बुरे कामों का आदर या तिरस्कार करना चाहिए किन्तु मनुष्य के प्रति सहानुभूति का भाव रखना चाहिए। इसी कारण भ्रष्ट अफसरों का विरोध करते हुए भी उन्होंने बरखास्त किए जाने पर नौकरी दिलाने में उनकी सहायता की।

प्रश्न 10. जोहानिस्बर्ग में व्याप्त भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए गाँधीजी किस अधिकारी के पास गए और उन्होंने उनसे क्या कहा ?

उत्तर—जोहानिस्बर्ग के भ्रष्ट अधिकारियों के विरुद्ध प्रमाण एकत्र करके गाँधीजी वहाँ के पुलिस कमिश्नर के पास गए। कमिश्नर ने गाँधीजी से उनकी शिकायत धैर्यपूर्वक सुनी और उन्हें पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया। उसने अपराधियों को पकड़वाने का निश्चय भी प्रकट किया।

प्रश्न 11. भ्रष्ट अधिकारियों पर न्यायालय में चले मुकदमें में क्या हुआ ?

उत्तर—कमिश्नर के प्रयास से दो अधिकारी पकड़े गये और उन पर मुकदमा चला। मजबूत प्रमाणों के होते हुए भी दोनों अपराधी छूट गए। इससे गाँधी जी को बड़ी निराशा हुई। पुलिस कमिश्नर भी दुखी हुआ। परन्तु इस मुकदमे की बात इतनी फैल गई कि अफसरों के छूट जाने पर भी सरकार उन्हें दोबारा नहीं रख पाई। दोनों बरखास्त हो गए ।

प्रश्न 12. रिश्वतखोर अपराधियों के प्रति गाँधीजी के मन में क्या भाव बने रहे ?

उत्तर—उन अपराधियों के प्रति गाँधीजी के मन में किसी प्रकार का दुर्भाव नहीं रहा। उनकी कंगाली की हालत में गाँधीजी ने उनकी सहायता की। जोहानिस्बर्ग की म्यूनिसिपालिटी में नौकरी पाने में भी गाँधीजी ने उनकी मदद की।

प्रश्न 13. गाँधीजी द्वारा अपराधियों के प्रति भी सद्भाव रखने का क्या परिणाम सामने आया ?

उत्तर—इसका यह परिणाम हुआ कि गाँधीजी जिन गोरे लोगों (अँग्रेजों) के सम्पर्क में आए वे उनके प्रति मित्रभाव रखने लगे। उनके मन से गाँधीजी के प्रति भय का भाव दूर हो गया। गाँधीजी को गोरे अफसरों के विरुद्ध मुकदमे लड़ने पड़ते थे, फिर भी वे लोग गाँधीजी से मधुर संबंध रखते थे।

प्रश्न 14. अपने किस बर्ताव को गाँधीजी ने सत्याग्रह की जड़ और अहिंसा का अंग समझा ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—विरोधियों के साथ भी मधुर व्यवहार करना गाँधीजी के स्वभाव का अंग था। आगे चलकर गाँधीजी को समझ में आया कि ऐसे बर्ताव में सत्याग्रह और अहिंसा के बीज छिपे हैं। विपक्षी के प्रति कोई दुर्भाव न रखना ही सत्याग्रह है और विरोधी के अपराध को भूलकर उसके मन को कष्ट न पहुँचाना ही अहिंसा है।

प्रश्न 15. गाँधीजी के अनुसार संसार में द्वेष, क्रोध और हिंसारूपी विष क्यों फैलता रहता है ?

उत्तर—सभी विचारक मानते हैं कि व्यक्ति के अच्छे काम का आदर और बुरे काम का तिरस्कार होना चाहिए, किन्तु भला या बुरा काम करने वालों के प्रति सदा आदर और दया का भाव रखना चाहिए। लेकिन इनके अनुसार आचरण कम से कम लोग करते हैं। यही कारण है कि संसार में द्वेष, क्रोध और हिंसा जैसे विषैले भाव फैलते रहते हैं।

प्रश्न 16. गाँधीजी के अनुसार सत्य की खोज करने वाले व्यक्ति द्वारा अहिंसा का कौन–सा रूप अपनाया जाना चाहिए ?

उत्तर–'मनुष्य और उसका काम दो भिन्न वस्तुएँ है।' ऐसा मानते हुए, भले–बुरे काम करने वाले के प्रति आदर और क्षमा का भाव रखना, अहिंसा का ही एक विशेष रूप है। गाँधीजी का मानना है कि जब तक व्यक्ति अहिंसा के इस भाव को धारण नहीं करता तब तक वह सत्य का साक्षातकार नहीं कर सकता ।

प्रश्न 17. गाँधीजी के अनुसार आत्मिक शिक्षा का अर्थ क्या है और वह विद्यार्थियों को किस प्रकार दी जा सकती है ?

उत्तर–गाँधीजी ने आत्मिक शिक्षा का अर्थ आत्मिक विकास माना है। इसमें चरित्र निर्माण करना, ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करना और आत्मज्ञान प्राप्त करना सम्मिलित है। आत्मिक शिक्षा देने के लिए अध्यापक को अपने आचरण पर ध्यान देना चाहिए। उसे विद्यार्थियों के सामने आचरण का आदर्श रूप प्रस्तुत करना चाहिए । आत्मिक शिक्षा पुस्तकों के द्वारा नहीं दी जा सकती ।

प्रश्न 18. गाँधीजी को आश्रम के ऊधमी, छात्र को दण्ड क्यों देना पड़ा? इसका क्या परिणाम हुआ ?

उत्तर–आश्रम का एक छात्र बहुत उद्‌दण्ड था। वह सबसे झगड़ता था। झूठ बोलता था और किसी से दबता न था। एक दिन अत्यन्त उपद्रव करने और समझाने पर भी न मानने पर गाँधीजी को उस पर क्रोध आ गया और उन्होंने रूल से उसके हाथ पर प्रहार किया। उस समय गाँधीजी काँप रहे थे। यह देखकर छात्र रोने लगा और उसने गाँधीजी से माफी माँगी ।

प्रश्न 19. बालकों को मारपीट कर पढ़ाने के बारे में गाँधीजी के क्या विचार थे? लिखिए।

उत्तर–गाँधीजी बालकों को मारपीट कर पढ़ाने में विश्वास नहीं करते थे। अपनी कक्षा के ऊधमी छात्र को पीटने का पश्चाताप उनको बहुत दिन तक रहा। उनका मानना था कि लड़के को दण्ड देकर उन्होंने पशुबल का परिचय दिया था। वह घटना क्रोध और दण्ड देने की भावना से प्रेरित थी न कि हृदय के दुख को व्यक्त करने की भावना से।

प्रश्न 20. विद्यार्थी को पीटने की घटना से गाँधीजी के विचारों में क्या परिवर्तन आया ?

उत्तर–इस घटना के पश्चात् गाँधीजी की छात्रों को सुधारने की नीति में बहुत परिवर्तन आया। वह मानने लगे कि आत्मिक शिक्षा शिक्षक के आदर्श आचरण से ही दी जा सकती है। शिक्षक स्वयं सत्यवादी और निर्भीक बनकर ही शिष्य को सत्यनिष्ठ और निडर बना सकता है। गाँधी जी ने अपने विचारों को आचरण में उतारा।

प्रश्न 21. 'गंगनाथ विद्यालय' चलाने वाले देशपांडे जी की विद्यालय चलाने के सम्बन्ध में क्या भावना थी? इसके लिए उन्होंने क्या उपाय किया था?

उत्तर–उनकी भावना भी कि विद्यालय में एक परिवार जैसा वातावरण होना चाहिए। इस भावना को लाने के लिए उन्होंने विद्यालय के अध्यापकों के नाम पारिवारिक सदस्यों के रूप में रख दिए थे। कालेलकर जी 'काका', फड़के जी 'मामा', हरिहर शर्मा 'अण्णा' कहे जाते थे। इसी प्रकार अन्य के भी नाम रखे गए थे।

प्रश्न 22. शांति निकेतन में गाँधीजी ने वहाँ के शिक्षकों के सामने क्या प्रस्ताव रखा? इसके पीछे उनका क्या विचार था?

उत्तर–गाँधीजी ने शिक्षकों के सामने प्रस्ताव रखा कि रसोई का सारा काम शिक्षक स्वयं करे। इससे शिक्षक रसोईघर को आरोग्यपूर्ण बना सकेंगे और अपना नियंत्रण भी रख सकेंगे। ऐसा होने पर विद्यार्थी भी स्वावलम्बन और भोजन बनाने की क्रियात्मक शिक्षा प्राप्त करेंगे।

प्रश्न 23. रसोईघर संचालन का गाँधीजी का प्रस्ताव अध्यापकों को कैसा लगा और इससे क्या परिवर्तन सामने आया ?

उत्तर–गाँधीजी का यह प्रस्ताव अधिकांश शिक्षकों को अच्छा लगा। विद्यार्थियों को भी यह नई बात अच्छी लगी। स्वयं रवीन्द्रनाथ जी भी इससे सहमत थे। सभी ने अपनी–अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार काम सम्हाल लिए और सारा शांति निकेतन इसे सफल बनाने में जुट गया ।

प्रश्न 24. एण्ड्रूज ने गाँधीजी से सत्याग्रह के बारे में क्या पूछा और गाँधीजी ने क्या उत्तर दिया।

उत्तर–पूना जाते समय रास्ते में एण्ड्रूज ने गाँधीजी से पूछा कि क्या भारत में उनके लिए सत्याग्रह करने का अवसर आएगा। इस पर गाँधीजी ने उत्तर दिया कि उन्हें लगता है कि पाँच वर्ष तक सत्याग्रह करने का कोई अवसर नहीं आएगा।

प्रश्न 25. गाँधीजी ने 'हिन्द स्वराज्य' में चरखे के बारे में क्या माना था ?

उत्तर—गाँधीजी ने लिखा था कि चरखे के माध्यम से ही भारत की गरीबी दूर हो सकती थी और चरखा ही भारत में स्वराज्य लाने का माध्यम भी बनेगा। चरखा भुखमरी को रोकेगा और भुखमरी न रहने पर भारतवासी स्वराज्य प्राप्ति के बारे में प्रयत्नशील होंगे।

प्रश्न 26. आश्रम में करघा लगाने को लेकर गाँधीजी के सामने क्या-क्या कठिनाइयाँ आईं?

उत्तर—गाँधीजी के आश्रम में करघे से वस्त्र बुनने का कार्य कोई व्यक्ति नहीं जानता था। वहाँ सभी पढ़ने-लिखने वाले और व्यापार करने वाले लोग थे। करघा मिला तो उसे चलाना सिखाने वाले की आवश्यकता हुई। एक सिखाने वाला मिल भी गया तो उसने पूरा काम नहीं सिखाया। मगनलाल गाँधीजी की सूझ-बूझ और परिश्रम से करघा चलना आरम्भ हुआ।

प्रश्न 27. आश्रमवासियों ने कपड़े पहनने के बारे में क्या निश्चय किया ? इसके पीछे उनकी क्या भावना थी?

उत्तर—करघा चलना प्रारम्भ हो जाने पर सभी आश्रमवासियों ने निश्चय कि वे हथकरघे पर देशी मिल के सूत से बुन गया कपड़ा ही पहनेंगे। इस निश्चय के पीछे स्वावलम्बन के साथ-साथ देश प्रेम की भावना निहित थी। इससे विदेशी कपड़ों पर निर्भरता भी दूर होती।

प्रश्न 28. हथकरघे का बुना कपड़ा पहनने का निश्चय करने पर आश्रम के लोगों को भारत के बुनकरों के जीवन के बारे में क्या जानकारियाँ प्राप्त हुईं ?

उत्तर—इस निश्चय के बाद जब आश्रमवासी बनुकरों के संपर्क में आए तो उन्हें उनके अभावग्रस्त जीवन, उनकी कम आमदनी, सूत प्राप्त करने में आने वाली कठिनाई, इसमें उनको ठगे जाने और दिन-दिन कर्जदार होते जाने के बारे में जानकारियाँ मिलीं।

प्रश्न 29. आश्रम के लोग हाथ से सूत कातने को अधीर क्यों हो गए?

उत्तर—देसी सूत से करघे पर कपड़ा बुनकर देने वाले बुनकर बड़ी कठिनाई से मिले। उनको यह गारण्टी देनी पड़ी कि देसी सूत का बुना हुआ कपड़ा आश्रम द्वारा खरीद लिया जाएगा। इन सारी कठिनाइयों के कारण आश्रमवासी जान गए कि बिना हाथ से सूत काते, स्वदेशी वस्त्र पहन पाना सम्भव नहीं होगा।

प्रश्न 30. गंगूबाई से भेंट होने पर गाँधीजी का कौन-सा बोझ हलका हो गया ?

उत्तर—चरखे और चरखा चलाने वाले की खोज करते हुए गाँधी जी की गंगूबाई नामक साहसी महिला से भेंट हुई। उन्होंने समस्या हल करने का आश्वासन दिया। इस प्रकार गाँधीजी का बोझ हलका हुआ ।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. ''लेकिन यह हमारे बीच अंतिम मित्र-युद्ध था।'' गाँधीजी के इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—अनेक लेखकों की आहार से सम्बन्धित पुस्तकें पढ़ने का परिणाम यह हुआ कि गाँधी जी की अन्नाहार में रुचि बढ़ती चली गई। यह देखकर गाँधीजी के एक प्रिय मित्र को लगा कि शाकाहारी हो जाने से गाँधीजी दुर्बल होंगे और अंग्रेज समाज में मूर्ख समझे जाएँगे। उसने गाँधीजी को एक होटल में मांसयुक्त सूप पिलाने की चेष्टा की। गाँधीजी के स्वीकार न करने पर विवाद हुआ और गाँधीजी को भूखा रहना पड़ा।

परन्तु इस विवाद ने उन दोनों के बीच किसी कटुता को जन्म नहीं दिया। इस घटना के बाद उनके बीच कोई विवाद खड़ा नहीं हुआ। गाँधीजी ने इसे मित्र-युद्ध इसलिए कहा, क्योंकि उनके मित्र ने उनकी भलाई की दृष्टि से कटु बातें कहीं थी। दोनों ने एक-दूसरे की भावना को समझा और विवाद की स्थिति नहीं आई।

प्रश्न 2. गाँधीजी ने सभ्य दिखने के लिए कौन-कौन से छिछले उपाय अपनाए ?

उत्तर—अपने हितैषी मित्र की शंका दूर करने के लिए गाँधीजी ने सभ्य दिखने के लिए विचित्र उपाय अपनाए। उन्होंने अँगेजों जैसी वेशभूषा और जीवनशैली अपनाकर, अपनी अन्नाहार की रुचि को छिपाना चाहा। उन्होंने अत्यन्त मँहगी सिलाई देकर नए वस्त्र सिलवाए। बहुत कीमती 'चिमनी टोपी' खरीदी। भारत से सोने की बढ़िया चेन मँगवाई। टाई बाँधना सीखा। इसके अतिरिक्त सभ्य बनने के लिए अँग्रेजी समाज के अन्य गुणों की भी नकल की। उन्होंने फ्रेंच (फ्राँसीसी) भाषा सीखी। लच्छेदार भाषण सीखने का प्रत्यन किया। सभ्य पुरुष कहलाने के लिए अँग्रेजी नृत्य भी सीखा। वायोलिन बजाना सीखने को वायोलिन भी खरीदी।

प्रश्न 3. 'बलवान से भिड़ंत' पाठांश में निहित संदेश को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—गाँधीजी एक बैरिस्टर के रूप में दक्षिण अफ्रीका गए थे। वहाँ उन्होंने एशियायी प्रवासियों के साथ होने वाले अन्याय के

विरुद्ध आवाज उठाई। अपने प्रयासों से भ्रष्ट अधिकारियों को बरखास्त कराया। विपरीत परिस्थितियों में भी संघर्ष द्वारा उन्होंने लोगों में सम्मान प्राप्त किया।

यह पाठांश हमें अन्याय और भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष करने का संदेश देता है। साथ ही इस घटना से सत्य तथा अहिंसा के स्वरूप को गहराई से समझने का संदेश भी मिलता है। ये कथन हमें संदेश देते हैं कि बुराई का विरोध अवश्य करना चाहिए किन्तु बुरा काम करने वाले के प्रति दुर्भाव नहीं रखना चाहिये।

प्रश्न 4. शांति निकेतन में रहते हुए गाँधीजी ने किन जीवन मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा दी? लिखिए।

उत्तर—गाँधीजी को 'शांति निकेतन' शिक्षा-संस्थान में कुछ समय रहने का अवसर मिला। वहाँ उनको गंगनाथ विद्यालय में अध्यापन करने वाले काका कालेलकर तथा अन्य अध्यापकों का सान्निध्य प्राप्त हुआ। रवीन्द्रनाथ जी ने शांति निकेतन की स्थापना भारतीय तथा पश्चिमी जीवन मूल्यों से अवगत कराने तथा वहाँ के सभी अध्यापक तथा विद्यार्थियों द्वारा उन मूल्यों को आचरण में उतारने की प्रेरणा देने के लिए ही की थी।

गाँधीजी ने अपने अध्यापक साथियों को कुछ महत्वपूर्ण जीवन मूल्यों के प्रति जागरूक किया। इनमें श्रम का सम्मान प्रमुख था। इसी से जुड़े जीवन मूल्यों-स्वावलम्बन, सादगी तथा सात्विकता-को अपनाने की प्रेरणा भी गाँधी जी ने दी। यह प्रेरणा शांतिनिकेतन की रसोई व्यवस्था में साकार दिखाई देने लगी।

प्रश्न 5. 'आत्मिक शिक्षा' अंश में व्यक्त गाँधीजी के विचारों को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—गाँधीजी को विद्यार्थियों के शरीर और मन को शिक्षित करने की अपेक्षा आत्मा को शिक्षित करने में अधिक परिश्रम करना पड़ा। वे चाहते थे कि विद्यार्थी अपने धर्म के मूल तत्व को जानें। वह आत्मा के विकास का अर्थ चरित्र के निर्माण को मानते थे।

गाँधीजी आत्मज्ञान को चौथे आश्रम (वृद्धावस्था) की बात नहीं मानते थे। आत्मिक शिक्षा देने के लिए वे विद्यार्थियों से भजन गवाते, नीति की पुस्तकें पढ़कर सुनाते। बाद में उन्हें अनुभव हुआ कि यह ज्ञान पुस्तकों से नहीं बल्कि शिक्षक के आचरण द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता था। शिक्षक को सावधान रहना चाहिए। गाँधीजी ने अनुभव किया कि उन्हें विद्यार्थियों के सामने अच्छा बनकर रहना चाहिए।

गाँधीजी विद्यार्थियों को मारपीट कर पढ़ाने के विरोधी थे। उन्होंने आश्रम के एक हठी छात्र को पीटा था। गाँधीजी को उसे पीटने का पछतावा रहा। इसके बाद गाँधीजी ने स्वयं को छात्रों के सामने आदर्श रूप में उपस्थित किया।

प्रश्न 6. 'सत्य के प्रयोग' शीर्षक पाठ में संकलित अंशों में जिन सत्यों के प्रयोग का वर्णन किया गया है, उन्हें स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—उपर्युक्त पाठ के विभिन्न अंशों में गाँधीजी ने सत्य के अलग-अलग प्रयोग किये हैं। 'सभ्य पोशाक में' अंश में गाँधीजी ने यह सत्य जाना कि अन्नाहार जीवन में बहुत उपयोगी है। दूसरा सत्य यह जाना कि सभ्य होने का अर्थ बाहरी दिखावा नहीं अपितु अपने जीवन के लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करना है।

बलवान से भिड़ंत पाठांश में गाँधीजी ने अन्याय के अहिंसक विरोध से सफलता पाने का प्रयोग किया। गाँधी ने यह सत्य जाना कि पक्षपात के सामने सत्य प्रमाणों का कोई महत्व नहीं है। उन्होंने अपराधियों के प्रति सहानुभूति दिखाई और यह जाना कि भले-बुरे काम करने वालों के प्रति सदा आदर और दया रखनी चाहिए।

'आत्मिक शिक्षा' में इस सत्य को जानने का प्रयत्न किया कि आत्मा की शिक्षा कैसे दी जाए। विद्यार्थी को अपने धर्म के मूल तत्वों का ज्ञान होना चाहिए। उन्होंने यह जाना कि आत्मा के विकास का अर्थ है—चरित्र का निर्माण करना। उन्होंने एक सत्य और जाना कि मारपीट से विद्यार्थी को नहीं पढ़ाया जा सकता।

शांति निकेतन में गाँधीजी ने यह सत्य जाना कि यदि विद्यालय के अध्यापकों और व्यवस्थापकों के बीच पारवारिक भावना और स्वावलम्बन रहेगा तो विद्यालय अधिक उन्नति करेगा।

'खादी का जन्म' अंश स्वदेशी की भावना और स्वालम्बन के माध्यम से अत्मिक स्वाधीनता के परम सत्य की ओर संकेत करता है।

प्रश्न 7. 'गाँधीजी की आत्मकथा हमें सात्विक एवं सार्थक जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है।' सिद्ध कीजिए।

उत्तर—इस पाठ में गाँधी जी ने अन्नाहार पर जोर दिया है और उसे सात्विक जीवन के लिए अनिवार्य बताया है। विद्यार्थियों को अध्ययन काल में विद्या-धन अर्जित करना चाहिए और बाहरी टीमटाम पर ध्यान नहीं देना चाहिए। पोशाक, नृत्य कला, भाषण कला आदि पर ध्यान देने की अपेक्षा सात्विक जीवन जीना चाहिए।

उन्होंने चरित्र निर्माण पर जोर दिया है। आत्मा को शिक्षित करना चाहिए। अपने-अपने धर्म के मूल तत्वों को जानना आवश्यक है। इससे जीवन सार्थक बनता है। आत्मा के विकास से ईश्वर का ज्ञान और आत्म-ज्ञान प्राप्त होगा। इससे जीवन सार्थक बनेगा। गाँधी ने आत्मा की कसरत पर अधिक बल दिया। इसी से जीवन सार्थक बन सकता है।

शान्ति निकेतन में गाँधी जी ने सात्विक जीवन की शिक्षा दी। उन्होंने साथियों और छात्रों को स्वावलम्बी जीवन अपनाने को प्रेरित किया। रसोई स्वयं बनाने से रसोई बहुत सादा बनने लगी। मसालों का त्याग किया गया। भात, दाल, साग तथा गेहूँ के पदार्थ भाप द्वारा पकाये जाने लगे। सारा जीवन सात्विक और सादगीपूर्ण हो गया।

3 गौरा (रेखाचित्र)

—महादेवी वर्मा

लेखिका परिचय—छायावादी कवयित्री और गद्य लेखिका के रूप में प्रसिद्ध महादेवी वर्मा का जन्म 1907 ई. में फर्रुखाबाद में एक सुसम्पन्न परिवार में हुआ। ये हिन्दी के छायावादी काव्य-आंदोलन के चार प्रमुख स्तम्भों में से एक मानी जाती हैं। उनकी कविता में वेदना और करुणा की प्रधानता है। इन्हें आधुनिक युग की मीरा भी कहा जाता है। महादेवी की चिन्तन वृत्ति साहित्य और समाज दोनों दिशाओं में प्रवाहित हुई है। उनका व्यक्तित्व सरलता, उदारता, संवेदनशीलता, आत्मीयता एवं सात्विकता से ओत-प्रोत था उन्होंने हिन्दी संस्मरण और रेखाचित्र विधा को अप्रतिम ऊँचाई दी। महादेवी वर्मा का गद्य भाव एवं भाषा की दृष्टि से अनुपम है। चित्रकला और संगीत कला में भी इन्होंने दक्षता प्राप्त की। इन्होंने 'चाँद' पत्रिका का सम्पादन भी किया और हिन्दी लेखकों के सहायतार्थ 'साहित्यकार संसद' नामक संस्था की स्थापना की। इनकी मृत्यु सन् 1987 में हुई। इनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—

कविता संग्रह—नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, यामा आदि।

संस्मरण एवं रेखाचित्र—अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी, मेरा परिवार।

निबन्ध संग्रह-शृंखला की कड़ियाँ, साहित्यकार की आस्था एवं अन्य निबन्ध।

पाठ-सारांश

'गौरा' एक गाय थी जो महादेवी की बहिन के घर पली थी और लाड़-प्यार के कारण वह अन्य बछियों से विशिष्ट थी। वह बहिन के घर से ही महादेवी के घर आई थी। बहिन ने उसकी उपयोगिता बताई थी जो महादेवी को उचित लगी। तभी वे उसे अपने घर ले आईं। गाय के शारीरिक सौन्दर्य ने महादेवी को प्रभावित किया। वह गौर वर्ण की थी। वह अत्यन्त सुन्दर एवं चित्ताकर्षक थी।

गौरा जब बँगले पर आई तो उसका भव्य स्वागत हुआ, उसे माला पहनाई गई, टीका लगाया गया, आरती उतारी गई और उसे गौरांगिनी या गौरा नाम दिया गया। उन्हें ऐसा लगा कि गाय भी बहुत प्रसन्न है। वह प्रियदर्शनी थी। उसकी काली बिल्लौरी आँखें तो दृष्टि को बाँध लेती थीं। चौड़ा उज्ज्वल माथा, उस पर चौड़ा मुख और सुन्दर आँखें दृष्टि को खींच लेती थीं। उनमें विश्वास का भाव झलकता था। गाय की आँखों को देखकर ही शायद गाँधी ने 'गाय करुणा की कविता है' ऐसा कहा होगा। उसकी अलस मन्थर गति बड़ी आकर्षक थी। कुछ ही समय में वह हम सब में हिल-मिल गई। पशु-पक्षी भी उसके पास खेलते रहते। कोई उसके पेट और पैरों के बीच में खेलता। पक्षी उसकी पीठ पर बैठ जाते पर वह शान्त खड़ी रहती। वह उनके सम्पर्क सुख का आनन्द लेती। सभी को वह आवाज और पैरों की आहट से पहचान लेती थी। महादेवी की मोटर की ध्वनि सुनकर बाँ-बाँ की ध्वनि से पुकारने लगती। थोड़ी देर कुछ खाने की प्रतीक्षा के बाद घर रँभा-रँभा कर सिर पर उठा लेती। वह मानवीय स्नेह के समान निकटता चाहती थी। वह इतनी निकटता चाहती थी कि कोई उस पर हाथ फेरे, उसे सहलाए। पास आने पर वह सहलाने के लिए गर्दन बढ़ा देती। हाथ फेरने पर मुख कन्धे पर रख देती। दूर जाने पर गर्दन घुमाकर देखती। उसकी आँखों से उसके उल्लास, दुख, उदासीनता, आकुलता के भावों का पता लग जाता था।

एक वर्ष बाद वह माता बनी और लाल रंग का बछड़े को जन्म दिया। उसके माथे पर श्वेत पान के आकार का तिलक था और खुरों के ऊपर सफेद वलय थे। उस वत्स का नाम लालमणि रखा गया जिसे सभी लालू कहकर पुकारते थे। वह लगभग बारह सेर दूध देती। लालमणि को पर्याप्त दूध छोड़ने के बाद शेष दूध आस-पास के बाल-गोपाल से लेकर कुत्ते-बिल्ली तक पीते थे। जब गौरा का दूध निकाला जाता तो कुत्ते-बिल्ली गौरा के सामने एक पंक्ति में बैठ जाते। महादेव उनके सामने बर्तन रख देता। वे शिष्टता के साथ बैठे रहते और दूध की प्रतीक्षा करते। दूध पीने के बाद वे अपने-अपने स्वर में कृतज्ञता ज्ञापन करते और गौरा के सामने उछलने-कूदने लगते। गौरा भी उन्हें प्रसन्नता से देखती।

गौरा का दूध निकालने की समस्या उत्पन्न हुई। शहरी नौकर दूध काढ़ना नहीं जानते थे। गाँव के नौकरों का अभ्यास छूट गया था। गौरा से पहले दूध देने वाले ग्वाले को ही दूध निकालने के लिए लगा लिया गया। दो-तीन महीने बाद गौरा ने दाना-चारा खाना कम कर दिया। वह धीरे-धीरे दुर्बल और शिथिल हो गई। बहुत उपचार कराया गया किन्तु नतीजा कुछ न निकला। अन्त में पता लगा कि गौरा को सुई खिला दी गई है जो हृदय के पास तक पहुँच चुकी है। हृदय के पार होने पर उसकी मृत्यु हो जायेगी। महादेवी वर्मा को कष्ट और आश्चर्य दोनों हुए। पता लगा कि सुई गुड़ में खिलाई गई है।

महादेवी ने जिसकी कल्पना भी नहीं की थी वह सत्य सामने आया। प्राय: जिन घरों में ग्वालों का दूध अधिक जाता है, वहाँ वे दूध देने वाले पशुओं को गुड़ की डली में सुई खिला देते हैं जिससे पशु मर जाए और उनका दूध फिर शुरू हो जाए। यह सत्य सामने आने पर ग्वाला गायब हो गया। ग्वाले की इस गतिविधि से विश्वास हो गया कि ग्वाले ने ही व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण गौरा को सुई खिलाई है।

गौरा मृत्यु से लड़ने लगी। उसे बचाने के लिए सेब का रस पिलाया गया, इन्जेक्शन लगवाये गये। गौरा अन्दर-बाहर की चुभन सहन करती। कभी-कभी उसकी आँखों में आँसू आ जाते थे। वह उठ नहीं सकती थी। पर महादेवी जब उसके पास जातीं तो उसकी आँखों से प्रसन्नता झलकती। वह उनके कन्धे पर अपनी गर्दन रख देती। लालमणि को माँ की बीमारी का पता नहीं था। उसे दूसरी गाय का दूध पिलाया जाता। मौका मिलने पर वह माँ के पास जाता और सिर मारकर उसे उठाने का प्रयत्न करता। ऐसी सुन्दर गाय की ऐसी निर्मम मृत्यु होगी यह सोचकर महादेवी जी का हृदय भर आता था। अन्त में 'गौरा' की आँखें निष्प्रभ हो चलीं और सेब का रस भी कण्ठ के नीचे नहीं जाने लगा तो महादेवी ने उसके अन्त का अनुमान लगा लिया। वे चाहती थीं कि उसके अन्त समय में वे गौरा के पास ही रहें। इसलिए रात में भी वे उसे देखने जातीं।

एक दिन ब्रह्म मुहूर्त में चार बजे वे उसके पास गईं, उसने अपना सिर उनके कन्धे पर रखा और वह पत्थर जैसा भारी होकर जमीन पर खिसक गया। उसके प्राण निकल गए। उसे ले जाते समय महादेवी के मन में करुणा का समुद्र उमड़ पड़ा। उनके मन में भाव उठा 'आह मेरा गोपालक देश!'

शब्दार्थ— (पृष्ठ-23-24) वय:सन्धि = किशोरावस्था तथा युवावस्था के बीच का समय। गोवत्सा = गाय की बच्ची, बछिया। लौकिक = सांसारिक, व्यावहारिक। कर्मनिष्ठा = कार्य में पूरी लगन। संक्रामक = शीघ्रता से फैलने वाला। तत्काल = तुरंत । उपयोगितावाद = वस्तु के उपयोग को महत्व देना। कार्यान्वयन = कार्य किया जाना । चामर = चँवर । इटेलियन मार्बल = इटली से प्राप्त संगमरमर पत्थर। तराशकर = गढ़कर । आपे = दमक । अभ्रक = अबरक, एक चमकीला खनिज पदार्थ । दुविधा = अनिश्चय । परिचारक = सेवक । ज्वार = उफान । प्रतिफलित = प्रतिबिम्बित । प्रवाहित = बहाए गए । विस्मय = आश्चर्य । यातना = घोर कष्ट । मन्थर = मंद। समीर = वायु । वृत्त = टहनी, डाल ।

(पृष्ठ-25-26) साहचर्य जनित = साथ रहने से उत्पन्न । उदासीनता = उपेक्षा । आकुलता = बेचैनी । वत्स = बछड़ा । वलय = छल्ले, गोल घेरे। वत्समूर्ति = बछड़े की प्रतिमा । दुग्ध दोहन = दूध दुहना । परम = अत्यन्त । शिष्टता = सभ्यता । नियुक्ति = काम पर रखा जाना । निर्मम = कठोर हृदय । उद्घाटित = प्रकट । अन्तर्धान = अदृश्य, गायब। शल्य क्रिया = चीरना, काटना, आपरेशन । व्याधि = रोग । आसन्न = निकट । निष्प्रभ = तेजहीन । ब्रह्ममुहूर्त = प्रात: । दीर्घ नि:श्वास = दुखभरी लम्बी साँस। प्रतिध्वनि = गूँज । गोपालक = गाय पालने वाला, गाय से प्रेम करने वाला ।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'गाय करुणा की कविता है' उक्त कथन है-

(अ) स्वामी विवेकानन्द का (ब) महात्मा गाँधी का (स) महादेवी वर्मा का (द) बर्नाड शॉ का।

2. गौरा की मृत्यु हुई—

(अ) लम्बी बीमारी से (ब) जहरीली घास खाने से (स) सुई खिलाने से (द) उम्र पूरी होने से।

उत्तर—1. (ब), 2. (स)

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. गौरा के पुत्र का क्या नाम रखा गया ?

उत्तर—गौरा ने एक वत्स को जन्म दिया। वत्स लाल रंग का था जो गेरू के पुतले जैसा जान पड़ता था। इसलिए उसका नाम लालमणि रखा गया लेकिन सब उसे लालू कहते थे।

प्रश्न 2. स्वस्थ पशु के रोमों की क्या विशेषता होती है ?

उत्तर—स्वस्थ पशु के रोमों की सफेदी में एक विशेष चमक होती है। गौरा के रोमों में भी एक चमक थी जो ऐसी लगती थी मानो किसी ने अभ्रक का चूर्ण मल दिया हो।

प्रश्न 3. लेखिका ने किस समस्या के समाधान के लिए ग्वाले को नियुक्त किया ?

उत्तर—शहर के नौकर दूध दुहना नहीं जानते थे और गाँव के नौकर अभ्यास न रहने के कारण दूध नहीं दुह पाते थे । दूध-दुहने की समस्या का समाधान करने के लिए ग्वाले को नियुक्त किया गया था।

प्रश्न 4. 'जिसकी स्मृति मात्र से आज भी मन सिहर उठता है' लेखिका की वह वेदनामयी स्मृति क्या थी ?

उत्तर—गौरा को गुड़ के साथ सुई खिला दी गई थी जो रक्त संचार के साथ उसके हृदय तक पहुँच गई। इसके बाद गौरा का मृत्यु से जूझना आरम्भ हुआ। ग्वाला का गौरा को सुई खिलाना और गौरा का मृत्यु से संघर्ष करना। इसकी स्मृति करके लेखिका का मन तब भी सिहर उठता था।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. गाय का महादेवी के घर पर किस तरह स्वागत किया गया ? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—गाय जब महादेवी जी के घर आई तो परिचितों और परिचारकों में उसके प्रति श्रद्धा उमड़ पड़ी। उसे लाल, सफेद गुलाबों की माला पहनाई गई। केसर और रोली का बड़ा टीका लगाया गया। घी के चौमुखी दीपक से आरती उतारी गई और उसे दही-पेड़ा खिलाया गया।

प्रश्न 2. 'गौरा वास्तव में बहुत प्रियदर्शन थी।' —कथन के आधार पर गौरा के बाह्य सौन्दर्य की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—गौरा के पुष्ट लचीले पैर, भरे पुट्ठे, चिकनी भरी हुई पीठ, लम्बी सुडौल गर्दन, निकलते हुए छोटे-छोटे सींग थे। कमल की दो अधखुली पंखुड़ियों जैसे कान थे। काले सघन चामर जैसी पूँछ थी। उसके गौर वर्ण में विशेष चमक थी। आँखों में एक आत्मीयतापूर्ण विश्वास भरा था।

प्रश्न 3. 'अब हमारे घर में दुग्ध-महोत्सव प्रारम्भ हुआ।'-कथन में वर्णित दुग्ध-महोत्सव के अवसर का चित्रण कीजिए।

उत्तर—गौरा दिनभर में लगभग बारह सेर दूध देती। लालमणि के लिए कई सेर दूध छोड़ने के बाद गौरा के शेष दूध को कुत्ते-बिल्ली आदि सभी पीते थे । दुग्ध दोहन के समय इस प्रकार दुग्ध महोत्सव सा मनाया जाता।

प्रश्न 4. गौरा को मृत्यु से बचाने के लिए लेखिका ने क्या-क्या प्रयत्न किये ? संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—जब गौरा ने दाना-चारा खाना बन्द कर दिया तो महादेवी जी ने पशु-चिकित्सकों को बुलाकर दिखाया। डाक्टर इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि गौरा को गुड़ में सुई खिलाई गई है। उसे सेब का रस पिलाया गया, इंजेक्शन लगवाए गये, दवा पिलाई गई। बहुत प्रयत्न किये जाने पर भी वह बच न सकी।

प्रश्न 5. 'गाय करुणा की कविता है।' —उक्त कथन के आलोक में 'गौरा' रेखाचित्र की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—करुणा की कविता का अर्थ है— करुण रस की साक्षात् मूर्ति । गाय का सरल स्वभाव, वात्सल्य और आँखों में तैरता विश्वास का भाव, सहज ही उसके प्रति करुणा जगा देता है। इस रेखाचित्र की मूल संवेदना भी इसमें निहित लेखिका का गाय के प्रति करुणभाव है जो कि एक सहज और सराहनीय मानवीय संवेदना है ।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. गौरा रेखाचित्र की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—गौरा रेखाचित्र भाषा और शैली दोनों दृष्टियों से अपनी विशेषता रखता है। इसकी कतिपय विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

भाषा—रेखाचित्र की भाषा सरल एवं साहित्यिक है। भाषा में तत्सम शब्दावली का भी प्रयोग हुआ है; यथा—वयः संधि, प्रतिफलित, साहचर्य, पयस्विनी आदि। भावात्मकता के कारण कहीं-कहीं भाषा गंभीर हो गई है।

मानवीय संवेदना के दर्शन—रेखाचित्र में पशुओं के प्रति भी मानवीय संवेदना के दर्शन होते है। गौरा के प्राणघाती रोग और मृत्यु के समय लेखिका का हृदय गहरी संवेदना से भर उठता है।

आलंकारिक शैली—रेखाचित्र में आलंकारिक शैली का पर्याप्त प्रयोग हुआ है। गौरा के कानों को अधखिली कमल की पंखुड़ियों से उपमा दी गई है। शरीर इटैलियन मार्बल जैसा आँखों की सुन्दरता का वर्णन 'उत्प्रेक्षा' द्वारा किया गया।

चित्रोपमता—जहाँ गौरा के शरीर एवं आँखों के वर्णन से एक सुन्दर गाय का चित्र आँखों के सामने उभर कर आ जाता है। इसी प्रकार लालमणि के चंचलता पूर्ण स्वरूप को लेखिका ने अपने शब्द-शिल्प से साकार-सा कर दिया है।

मनोवैज्ञानिकता—रेखाचित्र में मानव मन का यथार्थ चित्रण हुआ है। स्वार्थी व्यक्ति व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए कैसे जघन्य पाप कर देते हैं। इसका यथार्थ वर्णन पढ़ने को मिलता है। ग्वाले का दुष्कृत्य ईर्ष्यालु व्यक्ति के मनोविज्ञान को प्रत्यक्ष कर रहा है। इसी प्रकार महादेवी जी की मनोदशा भी मानवीय मनोविज्ञान के अनुरूप चित्रित हुई है।

प्रश्न 2. 'आह, मेरा गोपालक देश!' -पंक्ति में निहित वेदना का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर—उपर्युक्त वाक्य द्वारा महादेवी जी ने भारत में गाय के प्रति हो रहे व्यवहार पर मर्मभेदी व्यंग्य किया है। स्वयं को गोपालक कहने वाले भारत के कुछ घोर स्वार्थी और निकृष्ट स्वभाव के लोग तुच्छ लाभ के लिए 'गोहत्या' का पाप करते हुए तनिक भी नहीं हिचकते हैं। 'गौरा' रेखाचित्र में हतबुद्धि ग्वाले की करतूत से अत्यन्त व्यथित महादेवी जी के हृदय का मूक रूदन, इस एक सम्बोधन से छलक पड़ रहा है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. महादेवी जी के मन में गाय पालने का विचार कैसे आया ?

उत्तर—गौरा महादेवी की छोटी बहिन के घर लाड़-प्यार से पली बछिया थी। बहिन ने कहा कि तुम इतने पशु-पक्षी पालती हो, एक गाय क्यों नहीं पाल लेतीं। बहिन ने उसकी उपयोगिता बताई। उसके उपयोगिता सम्बन्धी भाषण और बछिया की सुंदरता ने महादेवी को बछिया ले जाने के लिए विवश कर दिया।

प्रश्न 2. महादेवी गौरा की किन विशेषताओं को देखकर प्रभावित हुईं ?

उत्तर—गौरा जब उनके बँगले पर आ गई तब उन्होंने उसे ध्यान से देखा। उसका वर्ण उज्ज्वल, उसके रोम चमकीले, पैर लचीले, भरे पुट्ठे, चिकनी भरी हुई पीठ लम्बी सुडौल गर्दन, निकलते हुए छोटे-छोटे सींग, कमल की दो अधखुली पंखुड़ियों जैसे कान, लम्बी और काले चामर जैसी उसकी पूँछ, गौरा की इन विशेषताओं ने महादेवी के मन को मोह लिया।

प्रश्न 3. महादेवी ने गौरा की आँखों की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है ?

उत्तर—गौरा की आँखें काली बिल्लौरी थीं। उसकी आँखें ऐसी लगती थीं मानो बर्फ के नीचे जल के कुण्ड हों। उसके नेत्रों में आत्मीय विश्वास झलकता था। उसकी बड़ी चमकीली और काली आँखों में जब आरती के दिये प्रतिबिम्बित होते थे तो ऐसा लगता मानो रात में काली दिखने वाली काली लहर पर किसी ने कई दिये प्रवाहित कर दिये हों। आँखों की गहराई, आत्मीय भाव तथा दर्पण जैसी दमक का सुंदर वर्णन हुआ है।

प्रश्न 4. ''उस पशु को मनुष्य से यातना ही नहीं, निर्मम मृत्यु तक प्राप्त होती है।'' किस पशु की और कैसी निर्मम मृत्यु ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—वाक्य में उस गाय ''गौरा'' का संकेत हैं जिसे महादेवी ने अपनी छोटी बहिन से प्राप्त किया था, जो प्रियदर्शन थी, करुणा की साकार प्रतिमा थी। संवेदनशील थीं। उसकी निर्मम मृत्यु हुई थी। गौरा का दुग्ध दोहन करने को रखे गए ग्वाले ने गुड़ में सुई मिलाकर उसे खिला दी। घोर यातना सहते हुए उसकी मृत्यु हो गई।

प्रश्न 5. गौरा महादेवी के बँगले पर आकर परिवार कैसे हिल-मिल गई थी ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—गौरा कुछ दिनों में सबसे हिल-मिल गई । कुत्ते-बिल्ली उसके पेट के नीचे और पैरों के बीच में खेलते। पालतू पक्षी उसकी पीठ और माथे पर बैठकर उसके कान तथा आँखें खुजलाते। पर वह शान्त रहती। वह आँखें मूँदकर उनके सम्पर्क सुख का आनन्द लेती।

प्रश्न 6. 'गौरा' का महादेवी जी के प्रति लगाव उसकी किन चेष्टाओं से व्यक्त होता था ?

उत्तर—साथ रहने के कारण गौरा को मनुष्यों की ही तरह लेखिका से गहरा लगाव हो गया था। वह उनसे स्नेह की अपेक्षा रखती थी । वह लेखिका के पास आने पर सहलाने के लिए अपनी गर्दन आगे कर देती थी । दूर जाने पर गर्दन घुमा-घुमाकर उन्हें देखती थी। उसके नेत्रों में अनेक मानवीय भावों की झलक दिखाई देती थी ।

प्रश्न 7. लालमणि के रूप-रंग का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर—गौरा के बछड़े लतामणि का रंग लाल था। लाल रंग के कारण वह गेरू के पुतले जैसा प्रतीत होता था। उसके माथे पर पान के आकार का श्वेत तिलक था। खुरों के ऊपर सफेद वलय ऐसे लगते थे मानो गेरू की बनी वत्समूर्ति को चाँदी के आभूषणों से अलंकृत कर दिया गया हो।

प्रश्न 8. दुग्ध दोहन की क्या समस्या थी और उसका समाधान कैसे हुआ ? अन्ततोगत्वा इसका क्या परिणाम निकला ?

उत्तर—लेखिका के नौकर दूध काढ़ना जानते ही नहीं थे। जो गाँव के थे उन्हें अभ्यास नहीं था। इसलिए उन्होंने भी दूध दुहने से मना कर दिया। अब यह समस्या आई कि दूध कौन दुहे ? इसलिए दूध देने वाले ग्वाले को रखा गया। उसने गौरा को निजी स्वार्थ के कारण गुड़ में मिलाकर सुई खिला दी। परिणाम स्वरूप गाय की मृत्यु हो गई।

प्रश्न 9. ऐसी कौन-सी बात थी जिसे जानकर महादेवी जी को कष्ट एवं आश्चर्य; दोनों की अनुभूति हुई ?

(उ. मा. शि. बो. 2018)

उत्तर—गौरा के गंभीर रूप से बीमार हो जाने पर डाक्टरों को दिखाया गया। ज्ञात हुआ कि उसे सुई खिलाई गई है जो रक्त संचार के साथ उसके हृदय तक पहुँच गई है। उसकी मृत्यु निश्चित है। यह जानकर महादेवी को बड़ा कष्ट हुआ। आश्चर्य इसलिए हुआ कि ग्वाले ने विश्वासघात किया और अपना दूध देने के लोभ में उसे सुई खिला दी। महादेवी जी को ग्वाले के कुकृत्य पर विश्वास नहीं हो पा रहा था।

प्रश्न 10. "अन्त में एक ऐसा निर्मम सत्य उद्घाटित हुआ।" वह निर्मम सत्य क्या था ?

उत्तर— निर्मम सत्य यह उद्घाटित हुआ कि ग्वाले गुड़ में सुई मिलाकर खिला देते हैं, जिससे गाय की मृत्यु निश्चित हो जाती है। गाय के मर जाने पर घर वाले पुनः उनसे दूध लेना आरम्भ कर देते हैं। ग्वाले की क्रूरता का कठोर सत्य महादेवी समझ गयीं। सत्य महादेवी के सामने उद्घाटित हो गया। महादेवी को विश्वास इसलिए हो गया क्योंकि सुई खिलाने का रहस्य खुलने पर ग्वाले ने आना ही बन्द कर दिया।

प्रश्न 11. "गौरा का मृत्यु से संघर्ष आरम्भ हुआ।" महादेवी ने गौरा को मृत्यु के संघर्ष से बचाने के लिए क्या किया ?

उत्तर—यह ज्ञात होने पर कि गाय को गुड़ में सुई रखकर दे दी गई थी और उसका बचना असम्भव था, उन्होंने उसे बचाने के लिए अथक प्रयास किया। सेव का रस पिलाया। बाहर के विशेषज्ञ चिकित्सकों को भी दिखाया। सभी संभव चिकित्सा कराई। उनका सारा परिश्रम भी 'गौरा' को नहीं बचा पाया ।

प्रश्न 12. गौरा की अस्वस्थता से अनभिज्ञ लालमणि की क्रियाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—लालमणि अपनी माँ की अस्वस्थता और मृत्यु की निकटता से अपरिचित था। वह अपनी माँ का दूध पीना चाहता था और उसके साथ खेलना चाहता था। वह उसके पास पहुँचता अपना सिर मार-मारकर उसे उठाना चाहता था। खेलने के लिए उसके चारों ओर उछलता-कूदता। पर उसे अपनी माँ की असाध्य बीमारी का ज्ञान नहीं था। गौरा उसे कैसे बताती कि मेरा अन्तिम समय आ गया है और मैं तुझे छोड़कर जा रही हूँ।

प्रश्न 13. महोदवी जी की आँखों में क्या सोच कर आँसू आ जाते थे ?

उत्तर— जब गौरा ग्वाले की निर्मम करतूत के कारण बीमार हो गई और उसकी मृत्यु निश्चित हो गई तो महादेवी यह सोचकर दुखी हो जाती थीं कि इतनी हृष्ट-पुष्ट, सुन्दर और दूध की भण्डार गाय, अपने प्यारे से बछड़े को छोड़कर किसी भी क्षण निर्जीव हो जायगी। इसी कारण उनकी आँखों में आँसू भर आते थे ।

प्रश्न 14. ''अब मेरी एक ही इच्छा थी।'' महादेवी की इच्छा क्या थी ?

उत्तर—गौरा की मृत्यु सन्निकट जानकर महादेवी ने सोचा कि अन्तिम समय में वे गौरा के पास रहें। वे रात और दिन में कई-कई बार उसे देखने जातीं। अन्त में एक दिन ब्रह्ममुहूर्त में जब महादेवी उसे देखने गईं तो उसने सदा की तरह अपना सिर उठाकर महादेवी के कन्धे पर रखा और उसी समय उसके प्राण पखेरू उड़ गये।

प्रश्न 15. गौरा की मृत्यु पर महोदवी के हृदय पर क्या प्रभाव पड़ा और उन्होंने क्या कहा ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—जब गौरा को जल समाधि देने को ले जाया जा रहा था तो महादेवी अत्यन्त भावुक हो गईं । महादेवी के हृदय से एक दुख भरी साँस निकल गई। महादेवी के इस निश्वास में भारत के गोपालन के विडम्बनामय स्वरूप पर व्यंग्य और दुख व्यक्त हो रहा था। उनके मुख से बस इतना निकला—'आह, मेरा गोपालक देश'।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. 'गौरा' शीर्षक रेखाचित्र की विषयवस्तु अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर—अपनी छोटी बहिन के परामर्श पर महादेवी जी ने एक गाय पालना स्वीकार किया। गाय का रंग सफेद और रूप साँचे में ढला हुआ लगता था। उसके सभी अंग-प्रत्यंग अत्यन्त आकर्षक थे। गौरा को पूर्ण स्वागत-सम्मान के साथ घर लाया गया। उसका नाम भी रूप के आधार पर 'गौरा' रखा गया।

गौरा लगभग 12 किलो दूध देती थी। बछड़े के पी लेने के बाद भी काफी दूध बचता था। घर के सभी व्यक्ति पशु-पक्षी और पड़ोस के बच्चे भी उसमें भाग पाते थे। गाय को दुहना एक समस्या थी। शहरी नौकर दूध दुहना नहीं जानते थे और ग्रामीण सेवक दुहना भूल चुके थे। अत: पहले से दूध देते आ रहे ग्वाले को ही यह काम सौंप दिया गया।

अपना दूध बंद हो जाने से ग्वाला मन ही मन गौरा से ईर्ष्या रखने लगा और एक दिन उस दुष्ट ने गाय को गुड़ में छिपाकर सुई खिला दी। परिणामस्वरूप गाय धीरे-धीरे बीमार होती गई और एक दिन उसका बड़ा करुण और मर्माहत करने वाला अंत हो गया।

महादेवी जी के हृदय को इस घटना से बड़ा आघात लगा। उनकी मर्मवेदना इन शब्दों में फूट पड़ी- ''आह मेरा गोपालक देश।''

प्रश्न 2. बिम्ब को परिभाषित करते हुए सिद्ध कीजिए कि 'गौरा' रेखाचित्र में बिम्ब प्रधान शैली का प्रयोग किया गया है।

उत्तर—जब साहित्यकार अपनी भाषा और शैली के बल पर परिचित उपमानों का प्रयोग करते हुए पाठक के मन पर किसी वस्तु का आभासी और परिपूर्ण चित्र उभार देता है तो इसे बिम्ब विधायिनी शैली कहा जाता है।

रेखाचित्र तो बिम्ब प्रधान शैली पर ही अश्रित होता है। 'गौरा' रेखाचित्र में गौरा, लालमणि तथा दुग्धोत्सव के आकर्षक और मनोहारी शब्द चित्रों को प्रस्तुत करके लेखिका ने बिम्ब विधायिनी शैली में अपनी पटुता का परिचय दिया है।

लेखिका ने गौरा के शरीर को साकार करते हुए उसका रंग चमकते हुए अभ्रक चूर्ण जैसा, कान कमल की अधखुली पखंड़ियों जैसे और आँखे जल के कुंडो जैसी बताया है। यह बिम्ब विधायिनी शैली 'गौरा' रेखांचित्र का प्राण है।

प्रश्न 3. रेखाचित्र किसे कहते हैं ? स्पष्ट कीजिए कि महादेवी का 'गौरा' एक रेखाचित्र है।

उत्तर— जिस प्रकार चित्रकार अपनी कलम से रेखाएँ खींचकर किसी वस्तु के रूप को इस तरह उतार देता है कि वह यथार्थ प्रतीत होता है इसी प्रकार एक कुशल गद्यकार अपने शब्द संकेतों से किसी व्यक्ति या वस्तु का जीता-जातता चित्र उपस्थित कर देता है। ऐसी रचना को साहित्य में 'रेखाचित्र' कहा जाता है।

महादेवी ने भी 'गौरा' में शाब्दिक रेखाओं द्वारा गौरा और लालमणि का ऐसा चित्रांकन किया है जिसे पढ़कर लगता है मानो गौरा और लालमणि हमारे सामने ही खड़े हैं। लेखिका ने गौरा के धवल शरीर, चिकनी और चमकीली पीठ, सुडौल गर्दन, चिकनी पीठ, कान, लम्बी पूँछ और चमकीली आँखों आदि का सटीक शब्दों एवं उपमानों द्वारा सजीव शब्द चित्र उपस्थित कर दिया है। 'गौरा' शब्द ों और कल्पना की रेखाओं से अंकित एक सफल रेखाचित्र है।

प्रश्न 4. 'गौरा रेखाचित्र में गाय के अंतरंग व बाह्य सौन्दर्य के साथ मानवीय संवेदना का रेखांकन भी है।' स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—गौरा का बाह्य सौन्दर्य जितना आकर्षक है उसका अन्तरंग भी उतना ही संवेदन युक्त है। गौरा एक स्वस्थ और सुन्दर पशु थी। संपूर्ण शरीर साँचे में ढला प्रतीत होता था। उसके श्वेत रोमों में अभ्रक जैसी चमक थी। गर्दन, पैर, कान तथा आँखे सभी बड़े मनमोहक थे। लेखिका ने उसे इटेलिशन मार्बल से तराश कर बनाई गई गो-मूर्ति कहा है। बाह्य सौन्दर्य के साथ ही गौरा आंतरिक सौन्दर्य से भी युक्त

थी। वह स्नेहमयी थी, ममतामयी थी। बंगले पर आते ही वह सबसे हिलमिल गई। पशु–पक्षी उसके पास खेलने लगे। वह मानवीय स्नेह की भूखी थी। महादेवी की मोटर जैसे ही आती वह बाँ–बाँ करके पुकारती। पास आने पर गर्दन आगे बढ़ा देती, हाथ फेरने पर उनके कंधे पर मुख रख देती और आँख बन्द कर लेती। जाने पर मुड़–मुड़कर देखती।

यही कारण था कि गौरा को ले जाते समय महादेवी के हृदय में करुणा का समुद्र उमड़ आया। पशु होते हुए भी गौरा में मानवीय संवेदनाएँ मार्मिक स्तर पर उपस्थित थीं।

प्रश्न 5. गाय की आँखें देखकर गाँधी जी की कौन सी उक्ति सही प्रतीत होती है और क्यों ?

उत्तर—गाँधी जी ने कहा है, ''गाय करुणा की कविता है। इसका आशय है कि गाय के जीवन को देखकर लगता है जैसे हमारे सामने कोई करुण रस भी साक्षात् मूर्ति ही विद्यमान हो। उसका अपना जीवन तथा मृत होने पर चर्म सभी कुछ मानव के काम आता है। ऐसे निश्छल हितकारी पशु को तुच्छ स्वार्थ की पूर्ति के लिए कृतघ्न मनुष्य, निर्मम मृत्यु प्रदान करते हुए तनिक भी नहीं सकुचाता। 'गौरा' की जीवन कथा इसका प्रत्यक्ष उदाहरण था। ऐसी हितकारिणी गौ माता को घुल–घुल कर मरते देख गाँधी जी की उक्ति याद आ जाना स्वाभाविक है।

प्रश्न 6. क्या आपके घर में भी कभी कोई पशु पक्षी पाला गया है? यदि हाँ तो उसके विषय में लिखिए।

उत्तर—मेरी छोटी बहिन को पशु–पक्षियों के बच्चों से बड़ा लगाव रहा है। एक बार माँ के साथ मन्दिर से दर्शन करके लौटते हुए, उसे एक चिड़िया का बच्चा एक पेड़ के नीचे 'चीं–चीं' करता दिखाई दिया। लगता था कि वह वृक्ष पर बने घोंसले से गिर गया था। बेचारी चिड़िया चीं,चीं करती उसके चक्कर लगा रही थी। बहिन उसे घर लाए बिना न रह सकी।

कुछ ही दिन में बच्चा सबका लाडला बन गया। माँ से बहुत हिल–मिल गया था। उसे दलिया खाना बड़ा प्रिय था। वह कूलर पर बैठा रहता था। माँ के पास आते ही उनके ऊपर कूद पड़ता था। एक बार सुबह वह कूलर पर दिखाई नहीं दिया। बहुत ढूँढा पर सब प्रयत्न बेकार साबित हुए। सभी बड़े दुखी हो गए। अंत में कूलर के अदर पानी में उसका मृत शरीर मिला।

❑❑

4 मानस का हंस (उपन्यास अंश)

—अमृत लाल नागर

लेखक परिचय— अमृत लाल नागर (1916 ई.–1990 ई.) ने लगभग आधी सदी तक अपने सक्रिय लेखन से साहित्य-जगत् में अप्रतिम योगदान किया। उनका व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न था। इन्होंने हिन्दी गद्य की लगभग समस्त विधाओं में लेखनी चलाई। अमृत लाल नागर संवादों के शिल्पी, घरेलू जीवन के कुशल चित्रक, कथा गठन में माहिर, मनुष्य के अन्तर्विरोधों को उभारकर उसकी दुर्बलताओं पर करारे व्यंग्य करने वाले एवं मनुष्य की मूर्खता का गम्भीरता के साथ मजाक उड़ाने वाले रचनाकार हैं। निम्न वर्ग, मध्य वर्ग तथा अभिजात्य वर्ग की विषम परिस्थितियों एवं उनकी संस्कृति के कुशल चित्रकार हैं। उनकी भाषा में उर्दू के शब्दों का सुन्दर प्रयोग हुआ है, किन्तु उससे हिन्दी की स्वाभाविकता में कोई बाधा नहीं पहुँचती। प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—

उपन्यास—बूँद और समुद्र, सुहाग के नूपुर, अमृत और विष, एकदा नैमिषारण्ये, मानस का हंस, नाच्यौ बहुत गोपाल, खंजन नयन।

कहानी-संग्रह—वाटिका, अवशेष, एटम बम, पीपल की परी, एक दिल हजार अफसाने आदि।

अन्य—चैतन्य महाप्रभु (जीवनी), साहित्य और संस्कृति (निबन्ध), चकल्लस (व्यंग्य), हमारे युग निर्माता, सतखण्डी हवेली का मालिक (बाल साहित्य) आदि।

पाठ-सारांश

गोस्वामी जी गोलार्क कुण्ड के मठ में कृष्ण की आरती उतारते हुए कृष्ण-भक्ति का पद गाते हैं। सभी उनके भजन पर मुग्ध हैं। वे कृष्ण भक्ति का महत्त्व बताते हैं। सभी अवतारों के प्रति श्रद्धा प्रकट करते हैं। वे कहते हैं पतंग और डोर की तरह अपने इष्ट से सम्बन्ध रखो। तभी इष्ट सर्वव्यापी और सर्वसामर्थ्यवान के रूप में प्रकट होगा। एकान्त होने पर वे सोचने लगे कि मैंने इष्ट को पाने के लिए सब कुछ किया फिर भी प्रत्यक्ष दर्शन नहीं हुए। वे सोचते हैं मेरे ध्यान में कभी-कभी हनुमान जी प्रकट हो जाते हैं पर प्रभु आप क्यों नहीं आते।

शिष्य ने पूछा भगवान के लिए क्या-क्या व्यंजन बनेंगे। तुलसी ने खिन्न होकर कहा—जो भगवान को रुचता हो वही बनाओ। शिष्य भी खिन्न मन से चला गया। दालान में बैठे तुलसी राधा-मुरलीधर की मूर्ति निहारने लगे। वे सोचने लगे ''हे कृष्ण रूप राम मेरा मन अभी सधा नहीं था, आपने इस वैभव की भट्ठी में डालकर और तपाना आरम्भ कर दिया। मैं अति अधम प्राणी हूँ। दुनिया में मुझे कोई महामुनि और कोई कपटी भी कहता है। एक बार हे प्रभु कह दो कि तुम मेरे हो।''

विक्रमपुर के राजा आये हैं। यह सुनकर तुलसी की उदासी दूर हो गई। सुनकर वे बाहर आये पर देहली की चौखट पर पैर रखते ही उत्साह समाप्त हो गया। राजा के साथ रत्नावली भी थी। रत्नावली ने तुलसी की ओर देखा। राजा ने तुलसी को चकित दृष्टि से देखा। उन्होंने राजा से पूछा आप रत्नावली को क्यों लाये। रत्नावली उनके चरणों में गिर पड़ी। उनकी उँगलियों के स्पर्श से थोड़ी देर के लिए तुलसी राम को भूल गये। उन्होंने शिष्य द्वारा दोनों के रहने की व्यवस्था करवा दी। रत्नावली का सभी ने आदर किया। रत्नावली ने रसोईघर में सहायता की। तुलसी को वर्षों पुराना रसोई का स्वाद प्राप्त हुआ। उन्होंने टोडर से राजा भगत का परिचय कराया और पत्नी के आने की सूचना दी।

तुलसी-रत्नावली का आमना-सामना नहीं हुआ। तुलसी उन्हें देखना चाहते थे पर रत्नावली बचती रहीं। भोजन के समय अवश्य रत्नावली के हाथ के स्पर्श का अनुभव होता। गंगाराम ने रत्नावली को लाने के लिए पालकी भेज दी। रात में राजा और तुलसीदास धर्म चर्चा करते रहे। दूध आया उसका स्वाद लिया। तुलसी ने कहा कि एक वह दिन था जब कटोरी भर छाछ नहीं मिलती थी, आज दूध का आनन्द आ रहा है। राजा ने कहा-गोसाइयों की यह बात अच्छी है कि वे अपने स्वाद और खुद को भगवान का मानकर ही चलते हैं। उत्तर

में गोस्वामी ने कहा मैं पूर्ण गोस्वामीत्व पाने के लिए अभी तक रामजी की ड्योढ़ी का भिखारी हूँ। राजा और तुलसी में गम्भीर वार्तालाप हुआ। राजा ने रत्नावली के तप की प्रशंसा की। उनका कथन था कि वे कठिन जोग साधने वाली जोगिन हैं। रत्नावली की प्रशंसा सुनकर तुलसी को राम शब्द बिसरने लगा और रत्नावली की झलक उनके दृश्य पटल पर आने लगी। मन में अन्तर्द्वन्द्व हुआ। कभी मन रत्नावली की ओर जाता कभी राम की भक्ति की ओर मुड़ जाता। सीता के बिना राम सुखी नहीं रहे तुम भी रत्नावली के बिना सुखी नहीं रह सकते। तुलसी का मन थाली के बैंगन की तरह लुढ़क रहा था। लेटने पर भी उनका ध्यान रत्नावली पर से नहीं हटा। विचार आया कि रत्नावली को रख लूँ तो रामजी भी मुझ पर दया कर देंगे। टोडर ने रत्नावली को वहीं रखने के लिए कहा पर तुलसी ने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया। तुलसी ने कहा कलिकाल में नैतिकता का ह्रास हो चुका है उसे बचाया नहीं गया तो अनैतिकता बढ़ जाएगी। किन्तु सभी ने रत्नावली को मठ में रखने का आग्रह किया।

तुलसी ऊपर से रत्नावली को रखने का विरोध करते पर मन रत्नावली की ओर ही चला जाता। गंगा राम के घर से रत्नावली लौटीं, तुलसी ने सरवन को उनकी अच्छी सेवा करने का आदेश दिया। नाथू ठोड़ी बनाता हुआ तुलसी को लोगों की बात सुनाता रहा। तुलसी के मन में उतार-चढ़ाव होता रहा। मन जब बहुत बेचैन हुआ तो तुलसी का मन रामजी की ओर चला गया। मन ही मन अपने हृदय का द्वन्द्व प्रभु के सम्मुख रखने लगे। आँखों में आँसू आ गए। नाथू ने भी रत्नवाली को मठ में रखने को कहा पर तुलसी ने मना कर दिया।

रत्नवाली ने तुलसी से मिलने की सूचना उनके पास पहुँचाई। मन में द्वन्द्व हुआ, मना करने की इच्छा हुई। अंततः तुलसी ने भेजने के लिए कह दिया और कहा कोठरी का पर्दा गिरा दो और उनका (रत्नावली) आसन बाहर लगा दो। रत्नावली आई, पर्दा देखकर कुछ देर खड़ी रही फिर जय सियाराम कहा। तुलसी ने भी उत्तर दिया और बाहर बैठने को कहा। रत्नावली ने रामचरित मानस पढ़ने की बात कही और एक प्रति माँगी। रत्नावली का कण्ठ भर आया। तुलसी ने आँसू बहाने को मना किया। रत्नावली ने जाते हुए एक भिक्षा माँगी कि मेरी मृत्यु से पहले अपना श्री मुख दिखा देना। तुलसी ने आने का वचन दिया।

शब्दार्थ— (पृष्ठ-29-30) सम्भ्रान्त = सभ्य। निरूपित = स्पष्ट व्याख्या। संताप = मानसिक कष्ट। दृश्याधार = दृश्य का आधार। रुचता = अच्छा लगता। खिन्न = दुखी। पाकशास्त्री = भोजन बनाने में प्रवीण। वैभव की भट्टी = मन को अशांत करने वाले सुख-साधन। कुचाली = कुमार्ग पर चलने वाला। अधम = नीच। सान्निध्य = समीपता। तिरोहित = समाप्त, अदृश्य। तपोपूत = तप से पवित्र। दिव्य = कान्तिमान।

(पृष्ठ-31) औपचारिक = दिखावे से युक्त। तृप्ति = सुख, संतुष्टि। बिसर गए = भूल गए। रोष = क्रोध। भृत्य = सेवक, नौकर। गाँव-जबार = गाँव और पास-पड़ोस। गठजोड़ से = साथ-साथ। चाभते-चाभते = खाते-खाते। ललाता = ललचाता। सोंधे = सुगंधित। खुन्नस = अप्रसन्नता। जिभ्या = जीभ। मनोधारा = मन की भावना। मुहाना = मुँह, निकास। डयौढ़ी = द्वार।

(पृष्ठ-32) कलिकाल = कलियुग। चरम = सबसे अधिक। मनोछवि = मन में उत्पन्न स्वरूप। वाग्धारा = वाणी, बातें। ऊहापोह = अनिश्चय।

(पृष्ठ-33) विरक्त = सांसारिक मोह से रहित। ह्रास = पतन, अवनति। हाला-डोला = चंचलता। मथित = अस्थिर, चंचल। ढोक = प्रणाम। गिरहस्त = गृहस्थ, परिवारी। अलिप्त = अप्रभावित। विगलित = दुखी। बौरा गया = पगला गया। अहंता = अहंकार। पारायण = पाठ करना।

(पृष्ठ-35) रुदन = रोना। कंपित = काँपता हुआ।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'विरक्त अब फिर से राग के बन्धनों में नहीं बँध सकता।' यह कथन है—

(क) रत्नावली का (ख) तुलसीदास का (ग) राजा भगत का (घ) टोडरमल का।

2. 'अब इस जन्म में हमारा-तुम्हारा साथ नहीं हो सकता'—तुलसीदास के इस कथन में व्यंजित भाव है—

(क) वेदना (ख) पश्चात्ताप (ग) वैराग्य (घ) तिरस्कार।

उत्तर—1. (ख), 2. (ग)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. राजा भगत अपने साथ किसको लेकर आए ?

उत्तर—राजा भगत अपने साथ तुलसी दास की पत्नी रत्नावली को लेकर आये।

प्रश्न 2. 'इस कलिकाल में ऐसा कठिन जोग साधने वाली जोगिन मैंने नहीं देखी'—पंक्ति में 'जोगिन' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?

उत्तर—यह कथन राजा भगत का है और उन्होंने 'जोगिन' शब्द रत्नावली के लिए प्रयुक्त किया है।

प्रश्न 3. रत्नावली ने तुलसीदास से किस रचना की प्रति माँगी ?

उत्तर—रत्नावली ने तुलसीदास से उनके द्वारा रचित 'रामचरितमानस' की प्रति माँगी।

प्रश्न 4. विदाई के समय भिक्षा के रूप में रत्नावली ने क्या विनती की ?

उत्तर—रत्नावली ने तुलसी से विनती की कि वे मृत्यु से पहले उसे एक बार अपना श्रीमुख दिखाने की कृपा करें।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. "केशव, यह दोनों परस्पर विरोधी विशेषताएँ, तो मुझमें कदापि नहीं हो सकतीं।"—तुलसीदास के इस कथन में व्यक्त पीड़ा का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—लोग तुलसीदास के बारे में अलग-अलग मत प्रकट करते थे । तुलसी जानते थे कि वह महामुनि नहीं हो सकते अन्यथा अब तक उन्हें के दर्शन अवश्य प्राप्त हो जाते । उनका मन चाहता था कि एक बार राम उन्हें अपना ले। राम की कृपा प्राप्त न होना ही तुलसी के मन की पीड़ा थी।

प्रश्न 2. राजा भगत का तुलसीदास से मिलने का क्या उद्देश्य था ? वे कहाँ तक सफल रहे ?

उत्तर—राजा भगत अपने साथ रत्नावली को लाये थे। उनका उद्देश्य था कि रत्नावली तुलसी के पास ही रहें। किन्तु वे अपने उद्देश्य में सफल नहीं हुए। रत्नावली और राम में से किसे चुनें, इस अन्तर्द्वन्द्व में फँसे हुए थे। उन्होंने राम को ही चुना।

प्रश्न 3. "रामजी कदाचित् मुझे इसलिए दर्शन नहीं दे रहे हैं कि मैं रत्नावली से निठुराई बरत रहा हूँ।" पंक्ति में निहित तुलसीदास के अन्तर्द्वन्द्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—तुलसी के हृदय में अन्तर्द्वन्द्व था। उनका मन कभी रत्नावली की ओर झुकता तो कभी राम की ओर मुड़ जाता। वह कभी सोचते कि वह रत्नावली से कठोर व्यवहार कर रहे हैं, इसीलिए राम उन पर कृपा नहीं कर रहे थे । इसी अन्तर्द्वन्द्व के कारण वे रातभर सो न सके।

प्रश्न 4. तुलसीदास ने रत्नावली को काशी में रहने की अनुमति क्यों नहीं दी ?

उत्तर—तुलसीदास ने वैराग्य धारण कर लिया था। रत्नावली यदि मठ में रहती तो मोह के वशीभूत होकर राम की भक्ति में मन स्थिर नहीं हो पाता। उनकी साधना में व्यवधान उत्पन्न होता। इसी कारण उन्होंने रत्नावली को काशी में रहने के लिए मना कर दिया था।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. 'सेवक का धर्म कठिन होता है।' कथन के आधार पर तुलसीदास के व्यक्तित्व व तत्कालीन सामाजिक परिदृश्य का चित्रण कीजिए।

उत्तर—सेवक का धर्म कठिन होता है। उसे स्वामी के अतिरिक्त और किसी से अनुराग नहीं होता। तुलसी स्वयं को राम का सेवक मानते थे। अत: मन को राम की भक्ति में ही तल्लीन रखना चाहते थे। सेवक को संसार से विरक्त होना पड़ता है। तुलसी ने भी राम की सेवा के लिए सब भोगों का त्याग कर दिया। राम के अतिरिक्त उन्हें कुछ भी अच्छा नहीं लगता था। उनके हृदय में रत्नावली के त्याग का दुख भी था। परन्तु वह समाज की आस्था को चोट नहीं पहुँचा सकते थे।

तुलसीदास जी के समय भारतीय समाज में स्त्री का स्थान पुरुष की दया पर निर्भर था। वह वैराग्य धारण करके नारी का जीवन भर तड़पते रहने को विवश कर सकता था। उस समय मठाधीश, महंत, गोस्वामी गृहस्थ जीवन बिताते हुए भी पूज्य माने जाते थे। नैतिकता का इतना पतन हो चुका था कि उसे उठाये रखने के लिए तुलसी जैसे संतों का सहयोग अनिवार्य हो गया था।

नाथू नाई की बातें तुलसी कालीन भारतीय समाज की सोच पर प्रकाश डालती है।

प्रश्न 2. 'रत्नावली का चरित्र आदर्श भारतीय नारी का प्रतिबिम्ब है।'—पाठ में आए घटनाक्रम के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—आदर्श भारतीय नारी अपने पति की छाया मात्र बताई गई है। पति ही उसका सर्वस्व होता है। 'मानस का हंस' अंश में राजा भगत के माध्यम से रत्नावली को आदर्श भारतीय नारी के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

कहीं तुलसी साधना से विचलित न हो जाएँ, इसलिए वह उनके सामने नहीं आना चाहती । पति के लिए पत्नी बहुत त्याग करती है। रत्नावली ने भी तुलसीदास के लिए बहुत त्याग किया। गाँव में वह पति की रुचि की रसोई बनाती है और किसी भूखे कंगले को खिला देती है। आप बिना चुपड़ी, बिना साग–भाजी के दो रोटी खाकर अपने दिन बिताती है। रोज तुलसीदास की धोती धोना, पूजा की सामग्री लगाना, बैठक में झाड़ू लगाना, एक–एक चीज को सहेज–सँभालकर रखना, उसका नित्य का काम है। राजा भगत के शब्दों में "भैया, भौजी जैसी तपसिन हमने देखी नहीं।" तुलसी ने उसे मठ से चले जाने का आदेश दिया। रत्नावली ने स्वीकार कर लिया किन्तु मृत्यु से पूर्व श्रीमुख दिखाने की भीख माँगी। हर भारतीय नारी अन्तिम समय में पति की निकटता चाहती है। उपर्युक्त सभी उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि रत्नावली में भारतीय नारी का प्रतिबम्ब विद्यमान है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. 'मानस का हंस' पाठ का मुख्य कथ्य क्या है?

उत्तर—इस अंश में तुलसीदास का अन्तर्द्वन्द्व, तत्कालीन समाज की मन:स्थिति तथा रत्नावली की त्यागमयी प्रतिमूर्ति का दिग्दर्शन है। तुलसीदास को राम भक्ति के शिखर पुरुष के रूप में दिखाया गया है। तुलसीदास ने लोक–कल्याण के लिए वैराग्यमय जीवन का अनुसरण किया है।

प्रश्न 2. 'मानस का हंस' पाठ में रामभक्त तुलसीदास, श्रीकृष्ण की आरती करते और कृष्ण भक्ति का महत्व बताते है। इसका कारण क्या है ?

उत्तर—तुलसी रामभक्त के रूप में ही प्रसिद्ध हैं किन्तु भगवान के सभी अवतारों पर उनकी श्रद्धा थी। उन्होंने 'कृष्ण गीतावली' ग्रन्थ की रचना भी की है। उनका मानना था कि भक्त की भगवान के प्रति जैसी भावना होती है, उसी के अनुसार उसे प्रभु के रूप के दर्शन प्राप्त होते है।

प्रश्न 3. तुलसीदास ने पतंग–डोर का उदाहरण देकर दर्शनार्थियों को क्या समझाया?

उत्तर—जैसे हाथ में डोर सधी होने पर पतंग आकाश में कहीं भी उड़ती रहती है, उसे कोई बाधा नहीं होती। उसी प्रकार अपने इष्ट को साधकर भाव की डोर में बँधी हुई मन की पतंग को सारे आकाश में उड़ाओ, सब देवों के प्रति श्रद्धा अर्पित करो। मन को प्रभु के चरणों में लगाए रहो।

प्रश्न 4. "अपना प्रवचन आप ही खाने लगा।" पंक्ति का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि तुलसीदास का प्रवचन उन्हें कैसे खाने लगा?

उत्तर—तुलसीदास ने जो प्रवचन दर्शनार्थियों के सामने किया था उसी पर सोचने लगे कि मैंने सब कुछ किया। प्रभु को पाने के जो साधन बताए गए हैं, वे सब किए। फिर भी प्रभु के दर्शन नहीं हुए। यह विचार उनके मन को पीड़ा पहुँचा रहा था ।

प्रश्न 5. भावुक गोस्वामी तुलसीदास जी युगल मूर्ति की ओर टकटकी लगाकर भिखारी जैसी दीन मुद्रा में देखते हुए क्या सोचने लगे?

उत्तर—तुलसीदास सोचने लगे कि राम जी उन्हें वैभव की चमक में उलझाकर उनकी कठिन परीक्षा क्यों ले रहे है? वह स्वयं को दीन दुर्बल और अत्यन्त अधम प्राणी मान रहे थे। वह भगवान राम से केवल भरोसा और समीपता चाहते थे। इसी आशा में वह राम कृष्ण की ओर याचना भरी दृष्टि से देखे जा रहे थे।

प्रश्न 6. राजा भगत का स्वागत करने चले तुलसी क्यों ठिठक कर रूक गए? उन पर क्या प्रभाव पड़ा।

उत्तर—तुलसी राजा भगत के आगमन से उत्साहित होकर जैसे ही मठ के फाटक पर पहुँचे उन्हें राजा भगत के साथ अपनी पत्नी रत्नावली भी दिखाई दी। यह देख उनके पैर वहीं रूक गए। उनका उत्साह ठंडा पड़ गया। वह राजा भगत से अनमने भाव से गले मिले।

प्रश्न 7. रत्नावली के पैरों में गिरने पर तुलसीदास जी की क्या मनोदशा हुई ?

उत्तर—तुलसी दास को देखते ही रत्नावली तेजी से आकर उनके पैरों पर गिर गई। अपने पैरों पर रत्नावली की अगुँलियों के स्पर्श से तुलसी उसके सुख में राम को भूल गए। उनका स्वर कोमल हो गया। राजा भगत को प्रेम से अंदर ले गए और रत्नावली को भी ऊपर कक्ष में पहुँचाने की व्यवस्था कर दी।

प्रश्न 8. तुलसीदास को भोजन में वर्षों पूर्व का स्वाद क्यों मिल रहा था ?

उत्तर—जब रत्नावली के हाथ का बना भोजन तुलसी को फिर प्राप्त हुआ तो उन्हें वर्षों पूर्व नित्य मिटाने वाले भोजन के स्वाद का अनुभव होने लगा । घर बार से दूर रहने वाले तुलसीदास पत्नी के हाथ से बने भोजन का स्वाद भूल चुके थे । अब भोजन के समय उन्हें अपनी थाली के हर व्यंजन में रत्नावली के हाथ का स्पर्श अनुभव होता था।

प्रश्न 9. "खरा गोस्वामी ही इस पानी पर बिना पैर भिगोए चल सकता है।" तुलसी के इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—राजा भगत रत्नावली को तुलसी के साथ छोड़ने की भूमिका बना रहे थे। अत: उन्होंने तुरन्त भगत की बात पर कटाक्ष किया। उनके कहने का आशय था कि जो वास्तव में गो स्वामी (इंद्रियों का स्वामी) होता है वही पत्नी के साथ रहने का कठिन व्रत धारण कर सकता है।

प्रश्न 10. "भौजी जैसी तपसिनी हमने देखी नहीं।" इस कथन में रत्नावली के किस तपस्विनी रूप का वर्णन किया गया है ?

उत्तर—राजा भगत ने तुलसी से कहा कि भौजी भी गाँव में तपस्या करती हैं। वह गाँव में तुम्हारी रुचि की रसोई बनाती और किसी भूखे कंगले को खिलाती आ रही है। उनकी धोती धोना, पूजा की सामग्री लगाना, बैठक में झाड़ू लगाना आदि काम करते हुए कठोर तप ही कर रही है।

प्रश्न 11. राजा भगत ने तुलसीदास को सीता-राम की कथा क्यों सुनाई ? उनका लक्ष्य क्या था ?

उत्तर—राजा का लक्ष्य था कि तुलसीदास रत्नावली को मठ में रहने की आज्ञा प्रदान कर अपने पास ही रखें। जैसे राम सीता के बिना कभी सुखी नहीं रह पाए। इसी प्रकार रत्नावली से अलग रहकर तुलसीदास भी सुखी नहीं रह सकते। उन्हें रत्नावली को अपने पास ही रखना चाहिए।

प्रश्न 12. टोडर ने रत्नावली को मठ में रखने के लिए क्या तर्क दिया और तुलसी ने उसे किस तर्क से काट दिया ?

उत्तर—टोडर ने कहा कि बड़े-बड़े सन्तों ने गृहस्थ जीवन व्यतीत किया है। बल्लभाचार्य जी ने घर-गृहस्थी में रहकर भी मोक्ष प्राप्त किया। फिर आपको पारिवारिक जीवन व्यतीत करने में क्या आपत्ति है। तुलसीदास ने कहा कि आज का समय बल्लभाचार्य जी जैसा नहीं है। आज यदि संत जरा सी छूट देंगे तो सारा समाज ही अनैतिकता में डूब जाएगा।

प्रश्न 13. राजा भगत ने कौन-सा षड्यंत्र रचा और क्यों ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—राजा भगत तुलसी और रत्नावली का मेल कराना चाहते थे। इसलिए उन्होंने पंडित गंगाराम, टोडर और कैलाश कवि सभी को अपने पक्ष में कर लिया। शिष्यों ने भी उन्हीं का समर्थन किया परंतु तुलसीदास जी तैयार नहीं हुए।

प्रश्न 14. "इस प्रसंग को अब यहीं पर समाप्त कर दो नत्थू।" कौन-सा प्रसंग था और तुलसीदास ने उसे समाप्त करने के लिए क्यों कहा ?

उत्तर—तुलसीदास जी की पत्नी के आने पर नत्थू ने इस बारे में लोगों के विचारों को उनको सुनाया। नत्थू ने कहा लोग पूछते हैं कि माताजी क्या अब यहीं रहेंगी ? लोग कहते हैं चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरा पाख है। अब ये भी तपस्या छोड़कर भोग विलास में लिप्त हो जाएँगे। तुलसीदास ने नत्थू को यह चर्चा बंद करने को कहा।

प्रश्न 15. "मेरा मन विविध ताप से जल रहा है।" कथन के आधार पर तुलसीदास की मन:स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर—नाथू के मुख लोगों के व्यंग्य को सुनाकर तुलसी के मन को बड़ा धक्का लगा। यह तो उनके चरित्र पर ही आक्षेप था। वह मन ही मन राम के सम्मुख अपने मन की अस्थिरता का वर्णन करने लगे। उन्होंने भगवान राम से मन को शान्त करने की प्रार्थना की।

प्रश्न 16. "तुलसीदास के मार्ग में रत्नावली बाधक नहीं बल्कि तपस्विनी भारतीय नारी के समान उनका साथ देती है।" इस कथन के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर—तुलसीदास ने गृहस्थ जीवन का परित्याग कर दिया तो रत्नावली उनके मार्ग में बाधक नहीं बनी। वह मठ में आकर भी उनसे दूर ही रही। वह उनके सामने पड़ने से बचती रही। जीवन के अंतिम समय ही उनसे दर्शन की याचना की।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. "थाली का बैंगन कभी इधर लुढ़कता और कभी उधर।" कथन को स्पष्ट करते हुए तुलसी के अन्तर्द्वन्द्व पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर– थाली पर रखा बैंगन गोल होने के कारण इधर–उधर लुढ़कता रहता है, एक स्थान पर स्थिर नहीं रहता। इसी प्रकार तुलसी दास जी का मन भी अन्तर्द्वन्द्व के कारण सदा अस्थिर रहता था। कभी उनका मन रत्नावली के मोह में डूब जाता तो कभी राम की भक्ति की ओर मुड़ जाता था।

टोडर, गंगाराम, कैलाश कवि और शिष्यों ने रत्नावली को मठ में रखने का आग्रह किया। तुलसीदास ऊपर से विरोध करते पर मन कहता रत्नावली को पास रखकर साधना करता तो अच्छा रहता। तुलसीदास स्वयं स्वीकार करते हैं कि उनका मन स्थिर नहीं है।

अन्तर्द्वन्द्व का अर्थ है दो विरोधी विचारों का एक साथ मन में उठना। प्रस्तुत अंश में स्थान–स्थान पर देखने को मिलता है कि तुलसी के मन में एक साथ दो विरोधी विचार आते हैं। स्पष्ट है तुलसीदास का मन थाली के बैंगन की तरह इधर से उधर लुढ़कता रहता था।

प्रश्न 2. 'तुलसीदास ने लोक–कल्याण के लिए वैराग्य धारण किया, तो रत्नावली ने भी तपस्विनी भारतीय नारी की तरह उनका साथ दिया' इस कथन को 'मानस के हंस' उपन्यास के पठित अंशों के आधार पर स्पष्ट कीजिए। (उ. मा. शि. बो. 2018)

उत्तर–तुलसीदास ने वैराग्य धारण कर लिया और गृहस्थ जीवन का परित्याग कर दिया। रत्नावली उनके मार्ग में बाधक नहीं बनी, वह नहीं चाहती कि उसके कारण तुलसीदास की साधना में विघ्न पड़े। इसलिए वह मठ में आकर भी उनसे दूर ही रहती थी। तुलसीदास चाहते थे कि एक बार रत्नावली से आमना–सामना हो जाए। वह अपना दुख–दर्द उनसे कहे। पर वह बड़ी सतर्कतापूर्वक अपने आपको उनकी नजरों से बचा जाती है। वह रसोई में उनके लिए भोजन अवश्य तैयार करती पर कभी सामने नहीं आती। पहली बार जब वह आई थी तब अवश्य आँख से आँख मिली थी। इसके बाद कभी साक्षात्कार नहीं हुआ। पाठ के अन्त में जब दोनों का संवाद होता है तो उस समय तुलसीदास रत्नावली से काशी छोड़ने के लिए कहते हैं। उस समय भी रत्नावली ने हठ नहीं किया और जाने को सहर्ष तैयार हो गई। केवल अन्तिम समय में उनके दर्शन की भीख अवश्य माँगी। इससे स्पष्ट होता है कि रत्नावली तुलसी के मार्ग की बाधक नहीं बल्कि साधक थी।

प्रश्न 3. मठ छोड़ कर राजापुर जाते समय रत्नावली का तुलसीदास जी से क्या वार्तालाप हुआ? रत्नावली ने क्या भिक्षा माँगी?

उत्तर–नाथू के मुख से रत्नावली को लेकर फैलते लोकापवाद को सुनकर तुलसी विचलित हो उठे। उन्होंने तुरन्त एक सेवक के द्वारा रत्नावली को शीघ्र राजापुर लौट जाने का संदेश भिजवाया। रत्नावली तुलसी से विदा लेने पहुँची। 'जयसियाराम' कह कर पति का अभिवादन किया। तुलसी ने पत्नी को कोठरी से बाहर बीच में पर्दा डालकर बिठाया। रत्ना बोली कि उसने पण्डित गंगाराम के घर पर राम चरित मानस पढ़ा और उसे श्रेष्ठ ग्रन्थ पाया। तुलसी को यह सुनकर सुख मिला। रामचरित मानस की एक प्रति पहुँचाने का आश्वासन दिया। रत्ना ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से विदा माँगी। तुलसी ने रोने से मना किया। रत्ना ने एक भिक्षा माँगी कि अंतिम समय पर वह अवश्य दर्शन दें। तुलसी जी ने वचन दिया कि ऐसा ही होगा।

प्रश्न 4. 'मानस का हंस' पाठ की संवाद–योजना पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संवाद कथा साहित्य के प्राण होते हैं। अच्छे संवादों से कथा रोचक, गतिशील और पात्रों के चरित्रों को विकसित करने वाली बनती है।

'मानस का हंस' की संवाद योजना की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

छोटे संवाद– संवाद छोटे किन्तु परिपूर्ण हैं- तुलसी (भृत्य से)- ''वह (रत्नावली) कहाँ है।''

भृत्य– ''रसोई में रसोइए को सहायता दे रही हैं।''

बड़े संवाद– बड़े संवाद भी हैं किन्तु वे रोचक हैं उबाने वाले नहीं।

पात्रानुकूल संवाद– अपढ़ नत्थू की भाषा उसके अनुरूप है। 'गिरहस्त' (गृहस्थ) तथा 'तपिस्या' (तपस्या) ऐसे ही शब्द हैं। सभ्रांत 'टोडर' की भाषा–''महात्मा जी की जूठन गिरने का सौभाग्य मेरे घर को मिलेगा।''

जीवन और चरित्र प्रकाशक संवाद– तुलसी के संवाद उनके जीवन की परिस्थितियों एवं उनके अन्तर्द्वन्द्व पर प्रकाश डालने वाले हैं।

भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने वाले संवाद– सभी पात्रों के संवाद उनकी भावनाओं को व्यक्त करने में सफल रहे हैं। तुलसी, रत्ना, राजा भगत आदि के संवाद ऐसे ही हैं।

❑❑

5 कुछ ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण
(यात्रावृत्त)

—सेठ गोविन्ददास

लेखक परिचय—सेठ गोविन्द दास (1896 ई.–1974 ई.) भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तथा हिन्दी के साहित्यकार थे। उन्हें शिक्षा व साहित्य के क्षेत्र में योगदान के लिए सन् 1961 में 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया गया। ये हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति भी रहे। इन्होंने राजभाषा के रूप में हिन्दी का प्रबल समर्थन किया। ये भारतीय संस्कृति के अनन्य साधक, कला-मर्मज्ञ, आदर्श राजनीतिज्ञ, प्रसिद्ध नाट्यकार एवं एकांकीकार थे।

इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

नाटक—प्रकाश, कर्त्तव्य एवं नवरस।

एकांकी—सप्तरश्मि, एकादशी, पंचभूत तथा चतुष्पथ।

उपन्यास—चंपावती, कृष्णलता, सोमलता आदि।

पाठ सारांश

लेखक चित्तौड़गढ़ के स्टेशन के पास छोटी-सी धर्मशाला में ठहरे। सभी ताँगे पर गढ़ की ओर चले। चित्तौड़गढ़ के लिए जाते समय लेखक उल्लसित हो गया। लेखक ने टॉड का 'राजस्थान का इतिहास' और 'राजपूत जीवन संध्या' तथा 'वीर जयमल' पुस्तकें पढ़ी थीं। इनमें लेखक ने उन वीरों का वर्णन पढ़ा जिन्होंने संग्रामों को हारते हुए भी बहादुरी से लड़ा। यहाँ वीरों ने केसरिया बाना पहनकर हँसते-हँसते अपना बलिदान किया था। यहीं माताओं, बहनों, पत्नियों और पुत्रियों ने अपना बलिदान किया था। यहीं भामाशाह के सदृश त्यागी वैश्य पैदा हुए।

वहाँ की वस्तुओं को देखने के लिए लेखक की आतुरता बढ़ रही थी। लेखक ने देखा गढ़ की दीवारें और बुर्ज खंडित हो गए हैं। उन खण्डहरों के बीच में कीर्तिस्तम्भ और विजय स्तम्भ खड़े हैं। कीर्ति स्तम्भ पुराना है, जर्जर हो चुका है। विजय स्तम्भ बाद का है और वीरता का प्रतीक है। यह सात खण्डों का है। कला और सौन्दर्य की दृष्टि से यह अपूर्व है। लेखक को लगा मानो ये स्तम्भ वहाँ की वीर गाथाएँ सुना रहे हों। लेखक संध्या तक वहीं घूमता रहा। लेखक जब वहाँ से चला तब उसने वहाँ की मिट्टी को माथे से लगाया। वह स्थल भी देखा जहाँ वीर जयमल को गोली लगी थी।

चित्तौड़ से लेखक उज्जैन आये। यह सप्त मोक्ष दायिका पुरियों में एक पुरी है। इसका नाम अवन्ति महाकालेश्वर के एक नवीन मन्दिर के सिवा यहाँ उन्हें क्षिप्रा के अतिरिक्त विक्रमादित्य या भोज के काल की कोई वस्तु नहीं मिली। लेखक का उद्देश्य तीर्थाटन नहीं था बल्कि ऐतिहासिक वस्तुओं को देखना था। क्षिप्रा के जल का आचमन और महाकालेश्वर के दर्शन के बाद सभी जलगाँव गये।

जलगाँव में अजन्ता और एलोरा की गुफाएँ देखनी थीं। जलगाँव से लेखक अजन्ता गये। अजन्ता की गुफाएँ सुन्दर और हरे-भरे पर्वतीय प्रदेश में हैं। इनकी संख्या 29 है। इनमें 4 चैत्य ढंग की शेष विहार ढंग की हैं। इनके बनने का निश्चित समय ज्ञात नहीं है। पुरातत्व वेत्ताओं के अनुसार ये ईसा के सौ वर्ष पूर्व से सात सौ वर्ष बाद तक बनती रहीं। अद्‌भुत चित्रकारी के लिए ये प्रसिद्ध हैं। ये गुफाएँ अर्ध्दगोलाकार पहाड़ी के मध्य भाग की चट्टानों को काटकर बनायी गई हैं। एक शिलाखण्ड को काटकर उसके अन्दर कमरे और उनमें मूर्तियाँ बनाई गई हैं। दीवारों पर पलस्तर और सफेदी करके सुन्दर चित्र बनाये गये हैं।

कमल हाथ मे लिये हुए बुद्ध का चित्र है। यह बुद्ध के महाभिनिष्क्रमण का चित्र है। सिद्धार्थ सिर पर मुकुट धारण किये हुए हैं। बायें हाथ में सूत का धागा और दाहिने हाथ में कमल पुष्प है। शरीर पर यज्ञोपवीत और गले में मणिमाला है। अधखुले विशाल नेत्रों से अहिंसा, शान्ति, वैराग्य झलकता है। मुख गम्भीर है। इनमें अद्वितीय सौन्दर्य है। गुफा में एक चित्र राजकीय जुलूस का है। जुलूस में स्त्री-पुरुष

दोनों हैं। स्त्रियों के शारीरिक सौन्दर्य का वर्णन है। चित्रकला में स्वाभाविकता है। कुरुचि और वीभत्सता नहीं है। इन चित्रों में जीवन के प्रति आनन्द–भावना है, यह इन चित्रों की विशेषता है। इन गुफाओं में दो अगम्य हैं। कुछ चित्र प्राचीन और कुछ अर्वाचीन हैं। गुप्तकाल से लेकर चालुक्य वंश के शासन–काल तक इन गुफाओं का निर्माण हुआ होगा।

ऐलोरा की गुफाएँ भी शिलाखंड को काटकर बनायी गई हैं। गुफाएँ सवा मीटर लम्बी हैं। इस गुफा के तीन भाग हैं—बौद्ध गुफाएँ, हिन्दू गुफाएँ और जैन गुफाएँ। बौद्ध गुफाएँ बारह हैं, अनुमान है कि वे ही सब से प्राचीन हैं। हिन्दू गुफाएँ सत्रह हैं। अनुमान है कि इनकी खुदाई सातवीं-आठवीं शताब्दी में हुई। जैन गुफाएँ चार हैं, जिनकी खुदाई हिन्दू गुफाओं के बाद हुई होगी। बौद्ध गुफाएँ सादी हैं। विश्वकर्मा गुफा उल्लेखनीय है। बारहवीं गुफा तीन तलगुफा है जो तीन मंजिली है। यहाँ की मूर्तियाँ आकार, धार्मिक भावना और सजावट की दृष्टि से अद्वितीय हैं। विश्वकर्मा गुफा का भीतरी भाग संकरा होता गया है। तीन तल गुफा मनुष्य के सतत् प्रयत्न और धैर्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस गुफा की बुद्ध मूर्ति को स्थानीय निवासी राम मानकर पूजते हैं। इस मूर्ति के नाक, ओंठ आदि नहीं हैं। हिन्दू गुफाओं में सोलहवीं गुफा को कैलाश गुफा या रंगमहल गुफा कहते हैं, जिसमें विष्णु और अन्य विभूतियों के चित्र हैं। इसके बराबर कोई दूसरी विशाल गुफा नहीं है। हिन्दुओं का इतना विशाल मन्दिर दूसरा नहीं है। इक्कीसवीं गुफा रामेश्वर गुफा है। उन्तीसवीं सीता गुफा है।

एलीफैण्टा गुफाओं में हाथी की एक मूर्ति का जिक्र होता है। 1814 में इस हाथी का सिर टूट कर गिर पड़ा। बाद में शेष अंग भी कट गये। 1864 में इन खण्डित अंगों को विक्टोरिया बाग बम्बई ले जाया गया जहाँ इन अंगों को जोड़ा गया। हाथी को अंग्रेजी में एलीफैण्ट कहते हैं। पुर्तगालियों ने इसी कारण इस गुफा का एलीफैण्टा नाम रखा। ये गुफाएँ एपालो बन्दर से सात मील पश्चिमोत्तर में एक द्वीप में स्थित हैं। इसमें दो पहाड़ियाँ हैं जिनके बीच एक मनोरम घाटी है। इसका इतिहास रोचक है। इस द्वीप की महत्ता का कारण तक्षण कला और अद्भुत गुफाएँ हैं। ये गुफाएँ मुख्यत: शैव हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध शिव का मन्दिर है जो एक गुफा में खोदा गया है। यहाँ शिव को सृजनहार, पालनहार और प्रलयंकर तीनों रूपों में अंकित किया गया है। शिव के तांडव नृत्य का मनमोहक दृश्य है। उनका भावमग्न रूप भी अंकित है। नटराज के रूप में अंकित दृश्य में उनके सृजनकारी नृत्य की अभिनव छवि भी अंकित है। शिव के कई और छवि–दृश्य अंकित हैं।

शब्दार्थ—(पृष्ठ 37–38) उद्वेग = आकुलता, तीव्रता। उल्लसित = प्रसन्न। रोमांचकारी = भय से रोएँ खड़े होने की स्थिति। सदृश = समान। अभूतपूर्व = जो पहले न हुआ हो, अपूर्व, विलक्षण। अद्वितीय = जिसके समान दूसरा न हो। आतुरता = व्यग्रता। जमींदोज = विनष्ट। अपूर्व = अनुपम। साष्टांग = आठों अंगों से, लेट कर। सहिष्णुता = सहनशीलता। पुरी = नगरी।

(पृष्ठ 39) पार्वत्य = पर्वतीय, पहाड़ों वाला। पुरातत्ववेत्ता = पुरातत्व विद्या को जानने वाला। महाभिनिष्क्रमण = गृहत्याग। यज्ञोपवीत = जनेऊ। आलोकित = प्रकाशित। अवयव = अंग। कर्णावतंस = कान के आभूषण। वीभत्स = घृणित।

(पृष्ठ 40–41) परिलक्षित = दिखाई देना। अर्वाचीन = नवीन। मनोहर = मन को हरने वाला, सुन्दर। तृप्त = सन्तुष्ट। सम्भवत: = शायद। अद्वितीय = विलक्षण। अलंकार–प्रधान = सुन्दर, कलात्मक। उल्लेखनीय = वर्णनीय। अभिव्यक्ति = स्पष्टीकरण, साक्षात्कार। आसीन = विराजमान। उत्कृष्ट = सर्वश्रेष्ठ। पाषाण = पत्थर। अर्थ–व्यय = धन का खर्च। आस्था = श्रद्धा। बुद्धिवादी = बुद्धिवाले, तर्कशील। स्वल्प बुद्धि = अल्पबुद्धि, अल्पज्ञान। तक्षण कला = मूर्तिकला। अपूर्ण = अधूरी। कृतियें = निर्मित। प्रतीक = चिह्न, निशान, रूप, आकृति। जोखिम = भारी अनिष्ट या विनाश की आशंका। तीर्थाटन = धार्मिक स्थल का भ्रमण। खण्डित = टूटे हुए, टुकड़े–टुकड़े। मनोरम = सुन्दर। आधिपत्य = अधिकार। अद्भुत = अनूठी। सृजनहार = रचना करने वाला। मनमोहक = मन को अच्छा लगने वाला। मनोयोगपूर्वक = ध्यान लगाकर। ध्यान से, अधिकांश = अधिक।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नांकित में से कौन–सा शहर क्षिप्रा नदी के तट पर बसा हुआ है?

(क) बनारस (ख) जबलपुर (ग) उज्जैन (घ) चित्तौड़गढ़।

2. एलीफैण्टा की गुफाओं के मध्य में किसकी मूर्ति का जिक्र होता है?

(क) हाथी की (ख) भगवान विष्णु की (ग) पद्म–पाणि बुद्ध की (घ) माता दुर्गा की।

उत्तर—1. (ग), 2. (ग)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. महाकालेश्वर मन्दिर कहाँ स्थित है?

उत्तर—महाकालेश्वर का मन्दिर उज्जैन में स्थित है।

प्रश्न 2. विजय स्तंभ किसका प्रतीक है?

उत्तर—विजय स्तंभ वीरता के इतिहास का सच्चा प्रतीक है।

प्रश्न 3. अजंता की गुफाओं की संख्या बताइए।

उत्तर—अजंता की गुफाओं की संख्या उन्तीस है।

प्रश्न 4. बुद्ध के महाभिनिष्क्रमण का चित्र कहाँ अंकित किया गया है?

उत्तर—बुद्ध के महाभिनिष्क्रमण का चित्र अजन्ता की गुफाओं में अंकित है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. लेखक ने चित्तौड़गढ़ की धूलि को बार-बार मस्तक से क्यों लगाया?

उत्तर—चित्तौड़गढ़ की भूमि वीरों की भूमि है, बलिदानियों की भूमि है। इस भूमि के कण-कण में बलिदानियों की वीरता की कहानी छिपी पड़ी है। यह भूमि वीरांगनाओं के जौहर की कहानी सुना रही है। लेखक इतना भावुक हो गया कि उसने उस स्थान की धूलि को बार-बार मस्तक से लगाया ।

प्रश्न 2. एलीफैण्टा की गुफाओं में शिव को किस-किस रूप में अंकित किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—एलीफैण्टा की गुफाएँ मुख्यत: शैव हैं। यहाँ शिव को सृजनहार, पालनहार और प्रलयंकर तीनों रूपों में अंकित किया है। शिव के तांडव नृत्य का मनमोहक दृश्य है। एक शिला पर शिव को भावमग्न रूप में अंकित किया है। उन्हें सृजनकर्ता नटराज रूप में अंकित किया गया है।

प्रश्न 3. अजंता की गुफाओं में 'राजकीय जुलूस' के चित्र की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—इस चित्र में बहुत से आदमी सज धजकर जाते दिखाये गये हैं। चित्र सुन्दर हैं। स्त्रियों के हाथों में सुन्दर कंकण हैं, गले में हार पहने हैं। कानों में सुन्दर कर्णवतंस है। स्त्रियों की कमर पतली और लचीली है। वक्ष स्थल सूक्ष्म वस्त्रों से ढका है। मुद्राएँ कटाक्षपूर्ण हैं। कनखियों से यौवन-मद और अनुराग-लिप्सा टपकती है।

प्रश्न 4. 'बोधिसत्व पद्मपाणि' चित्र के बारे में देवी निवेदिता के विचार लिखिए।

उत्तर—'बोधिसत्व पद्मपाणि' के चित्र के विषय में देवी निवेदिता लिखती हैं—"यह चित्र सम्भवत: भगवान् बुद्ध का सबसे बड़ा कलात्मक प्रदर्शन है। ऐसी अद्वितीय कल्पना का पुन: साकार हो सकना असम्भव-सा ही है।"

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. अजंता की चित्रकला में भारतीय संस्कृति का आदर्श किस तरह प्रकट होता है ? वर्णन कीजिए।

उत्तर—भारतीय संस्कृति का इन चित्रों में प्रयोग हुआ है जैसे-कमल पुष्प, राज मुकुट, कलाई में धागा, यज्ञोपवीत, मणिमाला आदि अहिंसा और शान्ति के भावों का प्रदर्शन भी भारतीय संस्कृति के अनुरूप है। वेश-भूषा, आभूषण, कुरुचिपूर्ण एवं वीभत्स दृश्यों का अभाव सभी भारतीय संस्कृति की झलक लिए हैं। जीवन के प्रति आनन्द की भावना भारतीय संस्कृति की विशेषता है जो इस जूलूस में सर्वत्र व्याप्त है।

प्रश्न 2. अजन्ता, एलोरा व एलीफैण्टा की गुफाओं के सौन्दर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर—अजन्ता की गुफाएँ सुन्दर और हरे-भरे पर्वतीय प्रदेश में हैं। ये गुफाएँ अर्द्धगोलाकार पहाड़ों के मध्य भाग की चट्टानों को काटकर बनाई गई हैं। एक ही शिलाखण्ड को काटकर कमरे और मूर्तियाँ बनाई गई हैं। दीवारों पर बुद्ध का तथा मुकुटधारी सिद्धार्थ का चित्र इतना सुन्दर है जिसे देखने से मन नहीं भरता। गुफा में राजकीय जुलूस का भी सुन्दर चित्र है जिसमें स्त्री-पुरुष दोनों सम्मिलित हैं। सभी चित्रों में आनन्द-भावना है जो भारतीय संस्कृति का मूलाधार है। एलोरा की गुफाएँ भी शिलाखण्ड काटकर बनाई गई हैं। इस गुफा में तीन अंग है—बौद्ध गुफाएँ, हिन्दू गुफाएँ और जैन गुफाएँ।

बौद्ध गुफाएँ सादी हैं। विश्वकर्मा गुफा उल्लेखनीय है। यहाँ की मूर्तियाँ आकार, धार्मिक भावना और सजावट की दृष्टि से अनुपम हैं। बुद्ध की मूर्ति को यहाँ के निवासी राम मानकर पूजते हैं।

हिन्दू गुफाओं में एक कैलाश अथवा रंगमहल गुफा है। यहाँ विष्णु तथा अन्य पौराणिक विभूतियों के चित्र हैं। ऐसे चित्र भारत में और कहीं नहीं है।

प्रश्न 3. चित्तौड़गढ़ के दुर्ग का वर्णन लेखक ने किस प्रकार किया है? लिखिए।

उत्तर—चित्तौड़गढ़ एक पहाड़ी पर स्थित है। गढ़ की दीवारों और उनके बुर्ज खंडित हो गये हैं। करीब-करीब सारी इमारतें विनष्ट हो चुकी हैं। उन खण्डहरों के बीच दो स्तम्भ, कीर्ति स्तम्भ और विजय स्तम्भ खड़े हैं। कीर्ति स्तम्भ पुराना और जर्जर है। परन्तु विजय स्तम्भ उसके बाद का है और वीरता के इतिहास का सच्चा प्रतीक है। विजय स्तम्भ सात खण्डों का है। कला और सौन्दर्य की दृष्टि से भी विजय स्तम्भ अपूर्व है। महान् वीरता का इतिहास विजय स्तम्भ के साथ जुड़ा है। इस गढ़ में देखने योग्य कुछ नहीं बचा है। पर लेखक को ऐसा लगा मानो इसका एक-एक कण और एक-एक पत्थर वीर गाथाएँ सुना रहा हो। केसरिया बाना पहनकर वीरों ने प्राणों को तुच्छ मानकर हँसते-हँसते बलिदान कर दिया।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. 'कुछ ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण' यात्रावृत्त का मुख्य कथ्य क्या है?

उत्तर—इस यात्रावृत्त में चित्तौड़गढ़ की वीरभूमि, मोक्षदायिनी अवन्तिका नगरी के साथ अजन्ता, एलोरा और एलीफैण्टा गुफाओं की यात्रा का वर्णन है। इसमें यहाँ के अपूर्व सौन्दर्य, भारतीय संस्कृति की दिव्यता और प्राचीन ऐतिहासिक महत्त्व को अत्यन्त रोचक ढंग से उभारा गया है।

प्रश्न 2. चित्तौड़ के वीर पुरुषों और नारियों ने अपने शौर्य और बलिदान से चित्तौड़ का मान कैसे बढ़ाया?

उत्तर—यहाँ महाराणा साँगा, महाराणा प्रताप, वीर जयमल और उन्हीं के सदृश अगणित सरदारों और सैनिकों ने युद्धों में अपने पराक्रम से मातृभूमि का मान बढ़ाया। नारियों ने भी अपने सम्मान की रक्षा के लिए यहाँ रण में पराक्रम और जौहर द्वारा आत्म-बलिदान से चित्तौड़ का मान बढ़ाया।

प्रश्न 3. चित्तौड़गढ़ के दुर्ग में पहुँचकर लेखक ने क्या देखा?

उत्तर—लेखक ने देखा कि गढ़ की दीवारें और बुर्ज खंडित हो गये हैं। उन खंडहरों के बीच कीर्ति स्तम्भ और विजय स्तम्भ खड़े हैं। कीर्ति स्तम्भ पुराना और जर्जर है। विजय स्तम्भ कला और सौन्दर्य की दृष्टि से अपूर्व है। वहाँ का एक-एक कण मानो वीरता की गाथा गा रहा है।

प्रश्न 4. चित्तौड़गढ़ की दशा को देखकर लेखक के हृदय पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर—यद्यपि चित्तौड़गढ़ के लगभग सभी भवन खण्डहर बन चुके थे फिर भी लेखक को लगा कि उन खंडहरों में चित्तौड़ के वीरों की गौरव गाथाएँ गूँज रही थीं। वह पागलों की तरह एक-एक जगह को बार-बार देखता रहा। उसने विजय स्तम्भ को धरती पर लेट कर प्रणाम किया ।

प्रश्न 5. विजय स्तम्भ ने लेखक के मन पर क्या प्रभाव छोड़ा?

उत्तर—लेखक ने विजय स्तम्भ को लेटकर प्रणाम किया। उसने मन ही मन प्रार्थना की कि जिन वीरों के अपूर्व कार्यों की स्मृति में विजय स्तम्भ का निर्माण हुआ था, विजय स्तम्भ संकट के क्षणों में उसे साहस और स्फूर्ति देता रहा।

प्रश्न 6. उज्जैन पहुँच कर लेखक के मन में क्या-क्या विचार आए ?

उत्तर— लेखक को याद आया कि किसी समय उज्जयिनी एक प्रसिद्ध राजधानी थी। लेखक को निराशा हुई कि अब उज्जैन में महा कालेश्वर का एक नवीन मंदिर था और क्षिप्रा नदी के अतिरिक्त विक्रमादित्य और के समय की कोई अन्य वस्तु शेष नहीं थी। प्राचीन वस्तु और कुछ न थी।

प्रश्न 7. ऐलोरा की गुफा-शृंखला के प्रमुख अंग कौन-कौन से हैं? उनकी विशेषताएँ भी लिखिए। (उ. मा. शि. बो. 2018)

उत्तर—अजन्ता की गुफाएँ एक अर्द्धगोलाकार पहाड़ी के मध्य भाग की चट्टानों को काटकर बनायी गयी हैं। एक ही शिलाखण्ड को काटकर उसके अन्दर कमरे और उनमें मूर्तियाँ बनाई गयी हैं। कमरों की दीवारों के दृढ़ पलस्तर पर सुन्दर चित्र बनाये गये हैं।

प्रश्न 8. बोधिसत्व पद्मपाणि का जो वर्णन लेखक ने किया है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—बोधिसत्व पद्मपाणि का चित्र आकर्षक है। कमल पुष्प लिए हुए भगवान बुद्ध का चित्र बुद्ध के गृह-त्याग के समय का चित्र है। सिद्धार्थ खड़े हैं और उन्होंने सिर पर मुकुट धारण कर रखा है। उनके गले में मणियों की माला है। भवों के नीचे अधखुले विशाल नेत्र हैं जिनसे अहिंसा, शान्ति और वैराग्य झलक रहा है। मुख पर गम्भीरता है। कहते हैं इससे सुन्दर आकार आज तक दुनिया में चित्रित नहीं हुआ है।

प्रश्न 9. अजन्ता की गुफा में चित्रित राजकीय जुलूस के चित्र का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—राजकीय जुलूस का चित्र गुफा का एक महत्त्वपूर्ण चित्र है। जुलूस में स्त्री-पुरुष दोनों सम्मिलित हैं। स्त्रियों के हाथों में कंकण, गले में हार तथा कानों में कर्णावतंस लटक रहे हैं। मुद्राएँ कटाक्षपूर्ण हैं।

प्रश्न 10. अजन्ता की गुफाओं के काल-निर्णय के सम्बन्ध में क्या धारणा है?

उत्तर—अजन्ता की गुफाओं के काल-निर्णय के सम्बन्ध में बड़ी कठिनाई है। एक चित्र में फारस के राजा का दूत कुछ भेंट कर रहा है। अतः लगता है कि गुफाएँ गुप्तकाल से चालुक्य काल के बीच बनी होंगी।

प्रश्न 11. एलोरा की गुफाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—एलोरा की गुफाओं के तीन खण्ड हैं—बौद्ध गुफाएँ, हिन्दू गुफाएँ और जैन गुफाएँ। उनकी निर्माण चौथी से आठवीं शताब्दी के बीच हुआ। बौद्ध गुफाओं की संख्या बारह है, हिन्दू गुफाएँ सत्रह हैं तथा जैन गुफाएँ चार हैं।

प्रश्न 12. तीन तल गुफा किस प्रकार की गुफा है, उसका वर्णन कीजिए। लेखक का क्या विचार है?

उत्तर—बौद्ध गुफाओं में तीन तल गुफा बारहवीं है। यह एक तिमंजली गुफा है। यहाँ पर जो मूर्तियाँ अंकित हैं वे आकार, धार्मिक भावना की अभिव्यक्ति और सजावट की दृष्टि से अनुपम हैं। तीन तल गुफा मनुष्य के अथक परिश्रम और धैर्य का उत्कृष्ट नमूना है।

प्रश्न 13. तीन तल गुफा की बुद्ध की मूर्ति के सम्बन्ध में रोचक बात क्या है?

उत्तर—गुफा में जो बुद्ध की मूर्ति है उसके विषय में रोचक बात यह है कि स्थानीय निवासी उसे राम मानकर पूजते हैं। इस मूर्ति के नाक और ओंठ नहीं हैं। स्थानीय निवासी टूटते ही पलस्तर की दूसरी नाक चढ़ा देते हैं। लेखक को भक्ति का यह अनोखा रूप जान पड़ा।

प्रश्न 14. हिन्दुओं की सोलहवीं गुफा का वर्णन कीजिए।

उत्तर—हिन्दुओं की सोलहवीं गुफा को कैलाश या रंगमहल गुफा कहते हैं। इसमें विष्णु और अन्य पौराणिक देवताओं के चित्र अंकित हैं। इसमें ध्वज स्तम्भ और हाथी की मूर्ति भी दर्शनीय हैं। यह गुफा 276 फुट लम्बी 154 फुट चौड़ी, 107 फुट ऊँची है।

प्रश्न 15. विक्टोरिया बाग में किसकी मूर्ति को लगाया गया? वह मूर्ति कहाँ से आयी?

उत्तर—विक्टोरिया बाग बम्बई में हाथी की मूर्ति को लगाया गया है। यह मूर्ति एलीफैण्टा से लाई गई। सन् 1864 में एलिफैण्टा से इस टूटी मूर्ति के अंगों को यहाँ लाकर और जोड़ कर खड़ा किया गया है।

प्रश्न 16. एलीफैण्टा द्वीप के इतिहास को रोचक कहा जाता है। उसकी रोचकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—एलिफेण्टा द्वीप का इतिहास रोचक है। मौर्य, राष्ट्रकूट और सन् 1774 में अंग्रेजों ने इसे अपने शासन के अन्तर्गत ले लिया इस द्वीप की महत्ता का आधार इसका इतिहास नहीं बल्कि वहाँ की शिल्प कला और वहाँ की अद्‌भुत गुफाएँ हैं।

प्रश्न 17. एलीफैण्टा गुफा के प्रसिद्ध मन्दिर का वर्णन कीजिए।

उत्तर—इस द्वीप पर भगवान शिव का एक प्रसिद्ध मंदिर है जिसमें शिव को सृजनकर्ता, पालनकर्ता तथा संहारकर्ता दिखाते हुए शिव पार्वती विवाह, गंगावतरण, अर्ध नारीश्वर शिव एवं पार्वती आदि के अनेक दृश्य अंकित हैं। शिव प्रतिमा ही इनमें सर्वश्रेष्ठ है।

प्रश्न 18. सेठ गोविन्ददास के यात्रावृत्त 'कुछ ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण' की कुछ विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—इस यात्रावृत्त में लेखक द्वारा भारत के चित्तौड़, उज्जैन, अजन्ता, ऐलोरा तथा ऐलीफैन्टा के इतिहास का कलात्मक परिचय को प्रस्तुत किया गया है। यात्रा वृत्त की शैली और भाषा रोचक है। लेखक ने इन स्थलों के माध्यम से भारतीय संस्कृति के दिव्य स्वरूप की भी भावना दिखाई है।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. हल्दीघाटी की विशिष्टता का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर—हल्दीघाटी वह भूमि है जहाँ इतिहास प्रसिद्ध युद्ध हुआ था, जिसका वर्णन पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। यहीं महाराणा साँगा, महाराणा प्रताप, वीर जयमल और उन्हीं के सदृश अगणित सरदारों तथा सैनिकों ने केवल जीतते हुए नहीं अपितु हारते हुए संग्रामों को भी अद्वितीय शौर्य के साथ लड़ा था। केसरिया बाना पहन–पहन कर यहीं वीरों ने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए प्राणों को तुच्छ मान हँसते–हँसते अपना बलिदान कर दिया सूर्यवंशी सिसोदिया क्षत्रिय नर–नारियों ने यहाँ संसार के इतिहास की अभूतपूर्व और अद्वितीय शौर्य और जीवन की अमर गाथाएँ सौंपी थीं। ऐसी अमर भूमि है यह, जिसे देखकर उन वीरों की, उन बलिदानियों की याद ताजा हो जाती है। यह भूमि धन्य है।

प्रश्न 2. चित्तौड़गढ़ का वर्णन करते हुए बताइये कि उसे देखकर लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर—चित्तौड़गढ़ एक पहाड़ी पर स्थित है। गढ़ की दीवारें और बुर्ज खण्डित हो गये हैं। लगभग सभी इमारतें विनष्ट हो गयी हैं। उन खण्डहरों के बीच केवल दो स्तम्भ, कीर्ति स्तम्भ, और विजय स्तम्भ खड़े हैं। कीर्ति स्तम्भ पुराना और जर्जर है। विजय स्तम्भ उसके बाद का है और वीरता के इतिहास का सच्चा प्रतीक है। महान वीरता का इतिहास विजय स्तम्भ से जुड़ा है।

विजय स्तम्भ को देखकर लेखक को हर्ष हुआ। लेखक को अनुभव हुआ मानो गढ़ की धूलि का एक–एक कण एक–एक पत्थर विभिन्न ध्वनियों में, विभिन्न रागों में वीर गाथाएँ गा रहे हों। लेखक उन्हें देखकर अपना आपा खो दिया था। वहाँ से चलने से पूर्व लेखक ने वहाँ की मिट्टी को बार–बार मस्तक से लगाया और उस भूमि को बार–बार साष्टांग दण्डवत प्रणाम किया।

प्रश्न 3. अजन्ता की गुफाओं का संक्षिप्त वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर—अजन्ता की गुफाएँ सुन्दर और हरे–भरे पर्वत प्रदेश में हैं। इन गुफाओं की संख्या 29 है, जिनमें चार चैत्य ढंग की, शेष विहार ढंग की हैं।

ये गुफाएँ एक अर्द्धगोलाकार पहाड़ी के मध्यभाग की चट्टानों को काटकर बनायी गयी हैं। आश्चर्य की बात यह है कि एक ही शिलाखण्ड को काटकर उसके अन्दर कमरे और उनमें मूर्तियाँ बनायी गई हैं। बुद्ध के महाभिनिष्क्रमण का चित्र बड़ा प्रभावशाली एवं अद्वितीय है।

गुफा का दूसरा महत्त्वपूर्ण चित्र राजकीय जुलूस का है। इस चित्र में स्त्री–पुरुष सजे–धजे हैं और आभूषण पहने हुए हैं। अजन्ता की चित्रकला में स्वाभाविकता, जीवन, सादगी, साम्य एवं सौन्दर्य–भावना है। जीवन के प्रति सुखमयी लिप्सा है।

प्रश्न 4. 'एलोरा की गुफाएँ मनुष्य के सतत् प्रयत्न और धैर्य का नमूना हैं।' इस कथन को ध्यान में रखकर एलोरा की गुफाओं और मूर्तियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर— ये गुफाएँ शिलाखण्ड को काटकर बनाई गई हैं। बल्कि एक छोटे-मोटे पठार को काटकर बनाई गई हैं। ये गुफाएँ सवा मील तक चली गई हैं। इन्हें बनाने में बहुत प्रयत्न करना पड़ा होगा और अत्यंत धैर्य रखना पड़ा होगा क्योंकि यह अल्प समय में नहीं बनी होंगी।

यह गुफा अल्प शृंखला तीन मुख्य अंग में बँटी है—बौद्ध गुफाएँ, हिन्दू गुफाएँ और जैन गुफाएँ। इनकी कुल संख्या तैंतीस है। इनमें विश्वकर्मा गुफा उल्लेखनीय है। एक गुफा तीन तल गुफा के नाम से प्रसिद्ध है जो तीन मंजिल की है। केवल अर्थ व्यय से ही यह कार्य सम्पन्न होना असम्भव था। इसके पीछे कर्त्तव्यनिष्ठा और आस्था दिखाई पड़ती है।

प्रश्न 5. एलीफैण्टा गुफाओं का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर—ये गुफाएँ एपालो बन्दर से कोई सात मील पश्चिमोत्तर में एक द्वीप पर स्थित हैं, जिसे स्थानीय निवासी और मल्लाह घरपुरी कहते हैं। इन गुफाओं का काल निर्णय करना असम्भव है। ये गुफाएँ मुख्यत: शैव हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध शिव का मन्दिर है जो एक गुफा में खोदा गया है। शिव को सृजनहार, पालनहार और प्रलयंकर रूप में अंकित किया गया है। तांडव नृत्य का मनमोहक दृश्य है। एक शिला पर शिव को भावमग्न दिखाया गया है। उनका नटराज रूप भी अंकित है जिसे ब्राह्मण कला में उच्च स्थान प्राप्त है। शिव–पार्वती विवाह, गंगावतरण, अर्धनारीश्वर शिव, मानवती पार्वती आदि के छवि दृश्य अंकित हैं। इन सभी में शिव की प्रतिमा सबसे प्रसिद्ध है।

❑❑

6 राजस्थान के गौरव (जीवन चरित्र)

—संकलित

पाठ–परिचय—राजस्थान रणबाँकुरों की भूमि है, जहाँ साहसी और तेजस्वी योद्धा पैदा हुए हैं। इन रणबाँकुरों से शत्रु भी भय खाते थे। यहाँ ऐसे वीर पैदा हुए हैं, जो सिर कटने पर भी लड़ते रहे हैं। यहाँ वीरों के साथ त्यागी-तपस्वी और भक्त भी जन्मे हैं। इस वीर प्रसूता भूमि पर शास्त्र और शस्त्र दोनों में निष्णात महापुरुष पैदा हुए हैं। ये तलवार के धनी और सिद्ध थे। इन सिद्धों और वीरों ने अपनी सिद्धियों और शूरता का उपयोग अन्याय के विरुद्ध, लोक जागरण तथा समाज समता के लिए किया। इसलिए उन्हें आज भी याद किया जाता है। उनकी समाधियों पर मेले लगते हैं।

इन समाधियों पर आने वाले व्यक्तियों का सामान्य जन स्वागत करते हैं, सेवा करते हैं। वे सेवा करने को अपना सौभाग्य समझते हैं। यदि आगन्तुक अपनी सेवा नहीं कराना चाहते, तो वे उनको रोकने सप्रेम कोशिश करते हैं। वे उनको रोकने के अनेक प्रयत्न करते हैं। यात्रियों की सेवा करने के ऐसे दृश्य हर वर्ष देखने को मिलते हैं। हमें ऐसे नर पुंगवों के कर्त्तव्य का अनुकरण करें, समाज में समरसता का संचार करें और लोक सेवा में अपना जीवन लगायें।

पाठ सारांश

देव नारायण जी

देव नारायण जी बगड़ावत कुल के थे और बगड़ावत नागवंशीय गुर्जर थे। सारा गुर्जर समाज देव नारायण जी को विष्णु का अवतार मानता है। आपने राज्य क्रान्ति की और अत्याचारी शासन का अन्त किया। इनके जन्म-समय में मतभेद है। फिर भी 4142 वि. सं. 1097 की माघ शुक्ल सप्तमी को इनका जन्म हुआ ऐसा माना जाता है। चौहान राजा ने बगड़ावतों को गोठा की जागीर दी। यह भीलवाड़ा जिले के आसीन्द से अजमेर जिले के मसूदा तक खारी नदी के आस-पास का क्षेत्र माना जाता है। इनका देवास में लालन-पालन हुआ, क्योंकि राणा दुर्जनसाल के अत्याचार के कारण माता सोढ़ी उन्हें वहाँ ले गई थीं। बचपन में घुड़सवारी और शस्त्र संचालन सीखा और क्षिप्रा के किनारे सिद्ध-वट में साधना करने लगे। गुरुओं ने उन्हें आयुर्वेद के साथ तंत्र-विद्या भी सिखाई। इससे वे कुशल योद्धा और तंत्र शास्त्र के पंडित हो गये।

बगड़ावतों का अनन्य मित्र छोटू भाट उन्हें गोठा ले गया। देव नारायण जी, छोटू भाट, माता सोढ़ी अंगरक्षकों के साथ देवास से चल दिये। धार में महाकाली की आराधना के समय राजा जयसिंह की बीमार पुत्री पीपलदे को देव नारायण जी ने भला-चंगा कर दिया। वहीं उससे उनका विवाह हो गया। आयुर्वेद के ज्ञान से लोगों का भला किया। गोठा में अमन-चैन कायम किया और लोगों को ढाँढस बँधाया। पड़ोसी राज्य के राणा के अत्याचार चल रहे थे, लेकिन क्रान्ति कर सुशासन स्थापित किया। इन्होंने गोबर और नीम का महत्व स्थापित किया।

बाबा रामदेव

बाबा रामदेव का जन्म पोकरण के समीप लगभग 653 वर्ष पूर्व विक्रम संवत् 1409 में भाद्रपद शुक्ल द्वितीया को रूणीचा के तँवर वंशीय ठाकुर अजमल जी व माता मैणादे के घर हुआ। पूत के पाँव पालने में ही दिखाई देते हैं, यह उक्ति उनके प्रति चरितार्थ होती है। आपने अपनी माँ को चमत्कार दिखाया। कुछ बड़े होने पर गुरु बालकनाथ से शिक्षा लेना आरम्भ किया। इतिहास, धर्म, दर्शन के साथ शस्त्र और शास्त्रों की शिक्षा ग्रहण की। किशोरावस्था में साथलमेर में भैरव तांत्रिक को मारकर सम्पूर्ण क्षेत्र को उसके आतंक से मुक्त किया।

अपने जीवन को लोक-कल्याण में खपाने का निश्चय किया। राजपूत होकर भी दलितों से सम्पर्क बढ़ाया तथा 'जम्मा-जागरण'

आन्दोलन के माध्यम से दलितों को जागृत कर अच्छाइयों की ओर प्रवृत्त किया। 'जम्मा–जागरण' का यह पुनीत कार्य मेघवाल जाति के द्वारा ही किया जाता था। पिछड़े वर्ग के प्रति उनका अन्त:करण करुणा और परोपकार से ओत–प्रोत था। मेघवाल जाति की कन्या डाला बाई को अपनी धर्म बहिन बनाया और बस्ती में हैजा फैलने पर उनकी सेवा–चिकित्सा के लिए दौड़ पड़े।

रामदेव सिद्ध योगी थे और वैद्यकीय चिकित्सा में पारंगत थे। विकलांगता, कुष्ठ रोग और हैजे में उनकी चिकित्सा रामबाण थी। 33 वर्ष की आयु में उनकी जीवन लीला सिमट गई। उनकी समाधि पर प्रतिवर्ष विशाल मेला लगता है।

सन्त जम्भेश्वर

प्राकृतिक जीवन हमारे देश की मूल आत्मा है। सन्त जम्भेश्वर जी इसी आत्मा के तत्वान्वेषी और सशक्त उद्बोधक थे। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन आपका जन्म हुआ था। आप जाम्भोजी के नाम से प्रसिद्ध थे। नागौर जिले के पीपासर गाँव में आपका जन्म हुआ था। आप विनयशील थे। माता–पिता की मृत्यु के पश्चात् आपने सारी सम्पत्ति दान कर दी और सामाजिक उत्थान में लग गये।

समरा थल धोरा में आपने अपना मुकाम बनाया और यहीं आपको दिव्य ज्ञान प्राप्त हुआ। धर्म स्थापना और प्रकृति से सहजीवन के उद्देश्य को ध्यान में रखकर आपने उनतीस नियम बनाये। इन्हें मानने वाले बिश्नोई कहलाये। आपने कट्टरता का विरोध किया। आपने सिकन्दर लोदी को गौ हत्या न करने के लिए राजी कर लिया। कई विधर्मी आपके शिष्य बन गये। विराट व्यक्तित्व के कारण आप लोकमन के देव बन गये। बीकानेर के लालसर गाँव में आपने समाधि ली।

जम्भेश्वर जी के बाद उनके अनुयायियों ने उनका अनुसरण कर बलिदान दिया। प्रकृति की रक्षा के लिए उनका दिया बलिदान अत्यन्त प्रेरक और अद्वितीय है। जोधपुर का खेजड़ली गाँव इस बलिदान के लिए प्रसिद्ध है। जोधपुर महाराजा ने अपने सैनिकों को वृक्ष काटने के लिए कहा। सैनिकों ने खेजड़ली गाँव को चुना और वे खेजड़ी वृक्ष काटने लगे। इमरती देवी ने विरोध किया। उसने और उसकी बेटियों ने इसके विरोध में अपना बलिदान दिया। फिर तो सारे गाँव के लोग तैयार हो गये। गाँव में 363 लोगों का बलिदान हुआ। आज भी उनकी स्मृति में मेला लगता है। हजारों लोग यहाँ आते हैं और प्रकृति तथा पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लेते हैं। बिश्नोइयों के गाँव में वृक्ष आज भी नहीं काटे जाते और हिरण नहीं मारे जाते।

पूज्य गोविन्द गुरु

राजस्थान के दक्षिण में गुजरात और मध्य प्रदेश की सीमा पर बलिदान का साक्षी मानगढ़ का विशाल पहाड़ है। लगभग एक शताब्दी पूर्व सघन वनांचल में वनवासी बन्धुओं ने एक स्वाधीनता आन्दोलन का संचालन किया था। इस अभियान से अंग्रेज सरकार भी काँप गई। 17 नवम्बर, 1913 ई. को आयोजित राष्ट्र भक्तों के विराट सम्मेलन में अंग्रेजों ने लाखों वन बन्धुओं पर अन्धाधुन्ध गोलियाँ चलाईं, जिसमें 1,500 वनवासियों की मौत हो गई, जो जलियाँवाला बाग से भी भयंकर था। आज भी वह स्थल वनवासियों के गीतों तथा कथाओं में रचा–बसा है। ऐसे विराट स्वाधीनता आन्दोलन का नेतृत्व करने वाले महापुरुष पूज्य गोविन्द गुरु थे।

डूँगरपुर जिले के बासिया गाँव में 20 दिसम्बर, 1858 ई.को एक बनजारा परिवार में आपका जन्म हुआ। गाँव के शिव मन्दिर के पुजारी से आपको संस्कार मिले। परिवार की घुमन्तू जीवन शैली से आपको दुनिया देखने का अवसर दिया। 1880 में स्वामी दयानन्द सरस्वती के साथ रहने से जीवन में नया मोड़ आया। लाखों वनवासी बन्धु अशिक्षा, बेकारी, भूख, अकाल, बीमारियों, व्यसनों तथा अन्धविश्वासों से घिरे थे और सामन्ती व्यवस्था तथा अंग्रेजी सरकार के अत्याचार सह रहे थे। आपने ऐसे परिवारों को सुधारने का बीड़ा उठाया। 'सम्पसभा' नामक सामाजिक संगठन की स्थापना के साथ गाँव में सघन कुण्डों की स्थापना का कार्य आरम्भ हुआ। आपने स्वच्छता, भजन–सत्संग, बच्चों की शिक्षा, मेहनत करना, चोरी न करना, मद्य–मांस सेवन न करना, आपसी विवाद न करना, बेगार न करना, विदेशी बहिष्कार और स्वधर्म पर दृढ़ रहने के निर्देश दिये। समाज–सुधार के कारण वे गोविन्द गुरु हो गये।

सन् 1903 में प्रतिवर्ष मार्गशीर्ष पूर्णिमा पर 'सम्पसभा' का वार्षिक सम्मेलन मानगढ़ के विशाल पहाड़ पर होने लगा। स्थानीय सामन्त और जागीरदार उनसे पहले से ही नाराज थे, जिसका परिणाम हुआ सन् 1913 का मानगढ़ हत्याकाण्ड। कर्नल शटल ने भक्तों पर गोलियाँ चलवाईं परिणामस्वरूप 1,500 से अधिक की मौत हो गई। गुरु के पाँव में गोली लगी और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें पहले फाँसी की सजा सुनाई गई फिर काला पानी और अन्त में उनकी सजा आजीवन कारावास में बदल दी गई। विश्व युद्ध में अंग्रेजों की विजय के बाद श्रेष्ठ आचरण के कारण उन्हें सशर्त मुक्त कर दिया गया। 30 अक्टूबर, 1931 को कम्बोई में उन्होंने अन्तिम साँस ली। मार्गशीर्ष पूर्णिमा पर हजारों लोग उस पहाड़ पर आते हैं।

महाराजा सूरजमल

महाराजा सूरजमल ने यवनों की सत्ता समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 13 फरवरी सन् 1907 में ननिहाल कामर में आपका जन्म हुआ। आप राव राजा बदनसिंह और रानी देवकी के पुत्र थे। सूरजमल जन्म से ही तेजस्वी थे। युवावस्था में वे साहसी योद्धा हो गये। वे कूटनीति में भी निष्णात थे। यह बदनसिंह के बड़े पुत्र थे और गुणी थे। अतः इन्हें ही युवराज बनाया गया। सन् 1731 में मेवात के दावर जंग को पराजित किया। नवम्बर 1745 में उन्होंने अलीगढ़ के नवाब और मुगल बादशाह से युद्ध किया। सन् 1750 में दिल्ली के बादशाह के मीर बख्शी सलावत खाँ ने उन पर आक्रमण किया। सूरजमल ने नारनौल के पास रात में सिंह झपट्टा मार कर उसे आत्म-समर्पण के लिए मजबूर कर दिया। इन्होंने सन्धि करने के लिए कई शर्तें रखीं, जिनमें दो मुख्य थीं—

1. मुगल सेना पीपल के पेड़ नहीं काटेगी।
2. मन्दिरों का अपमान न किया जाय और देवालयों को क्षति न पहुँचायी जाए।

9 जून, 1756 को सूरजमल भरतपुर के राजा बने। अहमद शाह अब्दाली ने सूरजमल को दबाने का प्रयत्न किया। सूरजमल ने अब्दाली को पत्र लिखा, जिसमें उसे चुनौती दी। शिवाजी की तरह तुर्कों को परास्त करने वाला दूसरा राजा सूरजमल हुआ, जिसने उन्हीं के हथियार से उन्हें मात दी। आगरा की मुगल सत्ता को मात दी और किले पर अधिकार किया। चम्बल के क्षेत्र पर अधिकार किया। हरियाणा, अलीगढ़, हापुड़, गढ़ मुक्तेश्वर तक अपना प्रभाव जमाया। आगरा को यवनों के दुष्प्रभाव से मुक्त कराया। सूरजमल ने दिल्ली को घेर लिया और आगे बढ़ते रहे। हिण्डन नदी के नाले को पार करते समय रुहेलों ने आक्रमण कर दिया। सूरजमल को प्राणघातक चोट लगी। 25 दिसम्बर, 1763 ई. को उनका निधन हो गया।

शब्दार्थ— (पृष्ठ 44) रौद्र = प्रचंड, क्रोधपूर्ण। पराक्रमियों = वीरों। वीर प्रसूता = वीरों को जन्म देने वाली। जुझारों = वीरों, जूझने वालों। तेजस्वी = कीर्तिमान, प्रभावशाली। रणबाँकुरों = योद्धओं।

(पृष्ठ 50) निष्णात = पारंगत, चतुर। प्रतिकार = प्रतिशोध, बदला। जातरू = यात्री। मनौती = मनुहार। आयोजन = प्रबन्ध, तैयारी। नर पुंगव = नर श्रेष्ठ। पलक पाँवड़े बिछाना = स्वागत को तैयार रहना । अल्पाहार = नाश्ता। सेवारू = सेवा करने वाले।

(पृष्ठ 45) अविस्मरणीय = जिसे भूला न जा सके। दृष्टिगोचर = दिखाई देना। प्रदत्त = दिया हुआ। पण्डित = विद्वान। लक्ष्य = उद्देश्य। अंगरक्षक = सुरक्षा के लिए रखा गया भृत्य। आराधना = पूजा, सेवा, प्रार्थना। साक्षात् = प्रत्यक्ष। पुनर्जीवित = दोबारा जीवित करना। कुशासन = बुरा शासन। परास्त = पराजित। आतंक = अत्याचार।

(पृष्ठ 46) संकल्प = किसी कार्य को करने का निश्चय या इरादा। जाग्रत कर = जगाकर, सचेत करके। पारंगत = निष्पात, कुशल। पीड़ितों = रोगियों। दर्शनार्थ = दर्शन करने के लिए। चिन्तनशील = विचारवान, चिन्तन करने वाला। प्रवृत्ति = स्वभाव। उत्थान = विकास, उद्धार। मुकाम = रहने का स्थान, ठहरने का स्थान।

(पृष्ठ 47) निरन्तर = लगातार। सहज = स्वाभाविक। साक्षी = प्रमाण। आ धमके = आ गये। सत्तामद = सत्ता का अहंकार। रक्षार्थ = रक्षा के लिए। स्मृति = याद। अर्पित = चढ़ाते हैं। स्पर्श = छूती। वनांचल = वन प्रान्त में, जंगल में। संचालन = नेतृत्व। रोमांच = रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

(पृष्ठ 48) घूमन्तू = घूमने वाले। बीड़ा उठाया = संकल्प किया। सेवन = ग्रहण, खाना। बहिष्कार = त्याग। धूल चटा दी = पराजित कर दिया।

(पृष्ठ 49) सशर्त = शर्त के साथ। मुक्त = आजाद। यवन = मुसलमान जाति। विधिवत = नियमानुसार। आत्मसमर्पण = हथियार डालना, गुलामी स्वीकार करना। अवतरित = पैदा हुए। पताका = ध्वजा। दुष्प्रभाव = बुरा प्रभाव। प्राणघातक = प्राण लेने वाली।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'सम्पसभा' की स्थापना किसने की ?

(क) महाराजा सूरजमल ने (ख) संत जम्भेश्वर ने (ग) पूज्य गोविन्द गुरु ने (घ) बाबा रामदेव ने।

2. बाबा रामदेव की समाधि पर मेला लगता है–

(क) भादवा सुदी दशमी (ख) भादवा वदी पंचमी (ग) भादवा वदी दशमी (घ) भादवा सुदी पंचमी।

उत्तर–1. (ग), 2. (क)।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. देवनारायण को किसका अवतार माना जाता है?

उत्तर–सारा गुर्जर समाज देव नारायण जी को श्री विष्णु का अवतार मानता है।

प्रश्न 2. 'सर सांटे रूँख रहे तो भी सस्ता जाण'–पंक्ति का अर्थ बताइये।

उत्तर–सर कट जाय पर वृक्ष (रूख) न कटे। सर के कटने पर यदि वृक्ष (रूख)की रक्षा होती है, तो भी वह सस्ता ही है।

प्रश्न 3. सूरजमल कहाँ के राजा थे?

उत्तर–महाराजा सूरजमल भरतपुर राज्य के राजा थे।

प्रश्न 4. संत जम्भेश्वर को दिव्य ज्ञान कहाँ प्राप्त हुआ?

उत्तर–समराथल धोरा गाँव में सन्त जम्भेश्वर को दिव्य ज्ञान की प्राप्ति हुई।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. 'जम्मा-जागरण' आन्दोलन के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–बाबा रामदेव ने दलितों के उद्धार के लिए 'जम्मा जागरण' आन्दोलन चलाया। उन्होंने दलितों से सम्पर्क बढ़ाया। 'जम्मा-जागरण' आन्दोलन के माध्यम से उन्हें जागृत कर अच्छाइयों की ओर प्रवृत्त किया। 'जम्मा-जागरण' का यह पुनीत कार्य मेघवाल जाति के द्वारा ही किया जाता था।

प्रश्न 2. जलियाँवाला बाग हत्याकांड की तुलना राजस्थान की किस घटना से की जाती है? संक्षेप में घटना का वर्णन कीजिए।

उत्तर–लगभग एक शताब्दी पूर्व मानगढ़ पहाड़ के सघन वनांचल में वनवासी बन्धुओं ने एक व्यापक स्वाधीनता आन्दोलन का संचालन किया था। इस आन्दोलन को कुचलने के लिए अंग्रेजों ने लाखों वनबन्धुओं पर अन्धाधुन्ध गोलियाँ चलाईं इस हत्याकाण्ड की तुलना जलियाँवाला बाग के हत्याकाण्ड से की गई है।

प्रश्न 3. सूरजमल की राष्ट्रीय भावना से संबंधित किन्हीं दो घटनाओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–महाराजा सूरजमल ने रात में सलावत खाँ की छावनी पर सिंह झपट्टा मारकर उसे संधि के लिए मजबूर कर दिया। जिसकी दो प्रमुख शर्तें थीं- (1) मुगल सेना पीपल के वृक्ष नहीं काटेगी। (2) मंदिरों का अपमान नहीं किया जाएगा।

प्रश्न 4. 'खेजड़ली' गाँव की इमरती देवी का बलिदान किस कारण हुआ? लिखिए।

उत्तर–महाराजा जोधपुर ने राजकार्य के लिए सैनिकों को वृक्ष काटकर लाने का आदेश दिया। वे खेजडली गाँव में जा पहुँचे। वहाँ की इमरती देवी ने इसका विरोध किया। सैनिक नहीं माने। इमरती देवी, उनकी तीनों पुत्रियों और पति ने पेड़ों की रक्षा में अपना बलिदान कर दिया।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. मानगढ़ का विशाल पहाड़ किस दिव्य-बलिदान का साक्षी है? विस्तार से लिखिए।

उत्तर– लगभग एक शताब्दी पूर्व इस मानगढ़ के वनांचल में वनवासी बन्धुओं ने व्यापक स्वाधीनता आन्दोलन का संचालन किया था। इस व्यापक अभियान के कारण अंग्रेज सरकार घबरा गई। आन्दोलन को कुचलने के लिए अंग्रेजों ने 17 नवम्बर, 1913 को राष्ट्रभक्तों के विशाल सम्मेलन में वनबन्धुओं पर अन्धाधुन्ध गोलियाँ बरसाईं और 1,500 वनवासियों को मौत के घाट उतार दिया। यह हत्याकांड जलियाँवाला बाग के हत्याकांड से भी भयंकर था। मानगढ़ का पहाड़ उसी बलिदान का साक्षी है। यह बलिदान आज भी वनवासियों के गीतों और कथाओं से रचा-बसा है। इस पहाड़ पर चढ़ते हुए आज भी रोमांच हो जाता है। इस आन्दोलन का नेतृत्व पूज्य गोविन्द गुरु ने किया था।

प्रश्न 2. समाज में धर्म स्थापना व प्रकृति के सहजीवन के उद्देश्य से संत जम्भेश्वर के योगदान का वर्णन कीजिए।

उत्तर—सन्त जम्भेश्वर जी ने प्रकृति से प्रेरित सामाजिक जीवन और सहज धर्म को प्रकाशित करने में अपना अपूर्व योगदान दिया। समाज में धर्म की स्थापना तथा प्रकृति से सहजीवन के उद्देश्य को ध्यान में रखकर उन्होंने जीवन हेतु उनतीस नियम बनाए। इन्हें मानने वाले बिश्नोई कहलाये। ये सभी नियम सदाचार, जीवन की नियमितता तथा प्रकृति संरक्षण पर आधारित हैं। इन्होंने कट्टरता पर भी निरन्तर प्रहार किया। आपने सुल्तान सिकन्दर लोदी को भी गौ हत्या न करने के लिए राजी कर लिया था। कई विधर्मी उनके शिष्य बने। जम्भेश्वर जी के बाद उनके अनुयायियों ने प्रकृति की रक्षा हेतु बलिदान किया, जो प्रेरक और अद्वितीय है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. राजस्थान की भूमि के बारे में क्या उक्ति प्रसिद्ध है?

उत्तर—राजस्थान की धरती वीरों को जन्म देने वाली है। इस धरती की प्रशंसा में यह उक्ति प्रचलित है कि इस धरती पर न केसर उगती है न हीरे निकलते हैं। इस धरती की कोख से तो वे वीर जुझारू योद्धा जन्म लेते हैं जो सिर कट जाने पर भी युद्ध करते रहते हैं।

प्रश्न 2. 'वीर प्रसूता भूमि ने ऐसे श्रेष्ठ पुरुषों को जन्म दिया है।' उन श्रेष्ठ पुरुषों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—राजस्थान की वीर प्रसूता भूमि ने ऐसे श्रेष्ठ पुरुषों को जन्म दिया है, जो शस्त्र-शास्त्र दोनों में परम कुशल थे। तलवार के धनी थे, तो पहुँचे हुए सिद्ध भी थे। इनमें प्रमुख हैं-देवनारायण जी, बाबा रामदेव, संत जम्भेश्वर, गोविन्द गुरु तथा महाराजा सूरजमल।

प्रश्न 3. समाधियों पर आये जातरुओं की सेवा किस प्रकार होती है?

उत्तर—सभी जातरुओं की सेवा में भण्डारों का आयोजन किया जाता है उनके थके-माँदे लहूलुहान पैरों को गर्म पानी से धोना, उनकी मालिश करना, उनके लिए गरम-गरम चाय, अल्पाहार व भोजन की नि:शुल्क व्यवस्था करने में बड़े धनिक और सामान्य जन अपने को धन्य मानते हैं।

प्रश्न 4. श्रद्धालुओं के जातरूओं के प्रति सेवा भाव से क्या संदेश प्राप्त होता है?

उत्तर—साधारण और सम्पन्न सभी के द्वारा जातरूओं की सेवा के यह दुर्लभ दृश्य यही संदेश देते हैं कि लोग उन परम श्रेष्ठ महापुरुषों के कार्यो से अपने जीवन में प्रेरणा लें। समाज में परस्पर प्रेम और सेवाभाव का संचार करें तथा अपने जीवन को सार्थक बनाएँ।

प्रश्न 5. देव नारायण ने शस्त्र और शास्त्रों की शिक्षा कहाँ प्राप्त की?

उत्तर— देव नारायण की माता उन्हें दुर्जनसाल के अत्याचारों से बचाने के लिए देवारू ले आई। उन्होंने यहीं पर बचपन से ही घुड़ सवारी और अस्त्र-शास्त्रों का चलाना सीखा 'सिद्धवट' नामक स्थान पर वह योग्य गुरुओं से विभिन्न शास्त्रों की शिक्षा भी ज्ञान प्राप्त कर लिया।

प्रश्न 6. 'देव नारायण का यश चारों ओर फैलने लगा।' उनका यश फैलने का क्या कारण था?

उत्तर—देव नारायण अपने आयुर्वेद के ज्ञान तथा सिद्धियों से लोगों के कष्टों को दूर करने लगे। अब वे लोगों के कष्ट हरने वाले साक्षात् भगवान हो गये। पीपलदे की कुरूपता दूर करना, सारंग सेठ को पुनर्जीवित करना, सूखी नदी में पानी निकालना आदि कार्यों से उनका यश चारों ओर फैलने लगा।

प्रश्न 7. गोठा पहुँचकर देव नारायण ने क्या किया? उनका महत्त्वपूर्ण कार्य क्या था?

उत्तर—देवनारायण जी ने गोठा में अमन-चैन कायम कर जनता को ढाँढ़स बँधाया। अत्याचारी राजा का कुशासन क्रान्ति द्वारा समाप्त किया। देवनारायण जी की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि उन्होंने औषधि के रूप में गोबर और नीम का महत्त्व स्पष्ट किया। इसी कारण आज भी उनकी पूजा नीम की पत्तियों से होती है।

प्रश्न 8. 'पूतरा पग पालजे दीखे' (सपूत के पाँव पालने में ही दिख जाते हैं) यह कहावत बाबा राम देव पर कैसे चरितार्थ होती है?

उत्तर— शिशु अवस्था में ही बाबा राम देव ने उफनते हुए दूध को नीचे रख कर माता मैकदे को चकित कर दिया था। कुछ बड़े होते ही इतिहास, धर्म, दर्शन शास्त्र और अस्त्र-शास्त्र की शिक्षा प्राप्त कर ली। साथलमेर के भैरव नामक तांत्रिक को समाप्त करके जनता को उसके आंतक से मुक्ति प्रदान की।

प्रश्न 9. बाबा रामदेव की दलितों के प्रति विशेष सहानुभूति थी। पठित अंश के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—बाबा रामदेव ने राजपूत होते हुए भी दलितों से सम्पर्क बढ़ाया। 'जम्मा–जागरण' आन्दोलन के माध्यम से दलितों को जागृत कर अच्छाइयों की ओर प्रवृत्त किया। उन्होंने मेघवाल जाति की कन्या डालीबाई को अपनी धर्म बहन बनाया तथा बस्ती में हैजा फैल जाने पर सेवा–चिकित्सा हेतु दौड़ पड़े।

प्रश्न 10. रामदेव सिद्ध योगी भी थे और वैद्यकीय चिकित्सक भी। इस कथन की सार्थकता प्रमाणित कीजिए।

उत्तर—बाबा रामदेव स्वयं सिद्ध योगी तो थे ही वैद्यकीय चिकित्सा में भी पारंगत थे। विकलांगता, कुष्ठ रोग, हैजा आदि में उनकी चिकित्सा रामबाण थी। इस कारण वे पीड़ितों को रोग मुक्त कर चमत्कार दिखा सके।

प्रश्न 11. 'मेरे जीवन का उद्देश्य पूरा हो गया।' यह कथन किनका है और कब कहा गया ?

उत्तर— यह कथन बाबा रामदेव का है। बाबा रामदेव ने पीड़ितों की सेवा को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया था। उन्होंने कठिन रोगों से ग्रस्त अनेक लोगों को स्वस्थ बनाया। अपने चमत्कारों से लोगों को धन्य बनाया। इस प्रकार उन्होंने अपने जीवन का उद्देश्य पूरा किया।

प्रश्न 12. विधर्मी लोग भी संत जम्भेश्वर के अनुयायी क्यों बन गए ?

उत्तर—संत जम्भेश्वर ने धार्मिक कट्टरता को समाप्त किया। अपने व्यक्तित्व के प्रभाव और चमत्कारी क्रिया कलापों से दुर्जनों को भी वश में किया। सुल्तान सिंकदर लोदी जैसे कठोर शासक को गोहत्या न करने पर राजी कर लिया। इसी कारण अहिन्दू भी उनके अनुयायी बन गए।

प्रश्न 13. संत जम्भेश्वर के अनुयायी विश्नोई क्यों कहे जाते हैं ?

उत्तर— संत जम्भेश्वर चाहते थे कि लोग प्रकृति से मैत्री का भाव रखें। प्राकृतिक वस्तुओं का संरक्षण करें। इस उद्देश्य को सफल बनाने के लिए उन्होंने 29 नियम बनाए। इन 20 तथा 9 =29 नियमों का पालन करने के कारण उनके अनुयायी विश्नोई कहलाए।

प्रश्न 14. "प्रकृति की रक्षा हेतु दिया गया यह बलिदान अत्यन्त प्रेरक एवं अद्वितीय है।" यहाँ किस बलिदान का उल्लेख है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—जोधपुर महाराज के कहने पर सैनिक खेजड़ी के वृक्ष काटने के लिए खेजड़ली गाँव आये। इमरती देवी ने उनका विरोध किया और चुनौती दी। जब सैनिक नहीं माने, तो स्वयं इमरती देवी, उसकी पुत्रियाँ और पति एक–एक वृक्ष के सामने खड़े हो गये और अपना बलिदान दिया।

प्रश्न 15. मानगढ़ का विशाल पहाड़ कहाँ स्थित है। वहाँ कौन सा आन्दोलन हुआ ?

उत्तर—गुजरात के दक्षिण में जहाँ गुजरात और मध्य प्रदेश की सीमाएँ मिलती है, मानगढ़ का प्रसिद्ध पर्वत स्थित है। वहाँ लगभग सौ वर्ष पहले वनवासियों ने स्वाधीनता–आन्दोलन प्रारम्भ किया था। इसके प्रभाव से घबराकर अंग्रेज सरकार ने इसे कुलचने का निश्चय किया।

प्रश्न 16. मानगढ़ के आन्दोलन के हत्याकांड का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर—मानगढ़ पर्वत के वनांचल में वनवासियों ने गोविन्द गुरु के नेतृत्व में अंग्रेज सरकार के विरुद्ध स्वतंत्रता–आन्दोलन छेड़ा था। इस आन्दोलन को सरकार ने क्रूरतापूर्वक कुचल डाला था। अन्धाधुंध गोलीबारी करके लगभग 1500 वनवासियों को मौत के घाट उतार दिया गया।

प्रश्न 17. मानगढ़ में आन्दोलन होने का मुख्य कारण क्या था ? लिखिए।

उत्तर—मानगढ़ के वनांचल वासियों को अशिक्षा, बीमारी, बेकारी, भूख तथा व्यसनों से ग्रस्त देखकर, गोविन्द गुरु ने अत्याचारी अंग्रेज–सरकार के विरुद्ध यह जन आन्दोलन छेड़ा था। लोग बेकारी, भूख, आकाल, बीमारियों, व्यसनों तथा अन्धविश्वासों से पीड़ित थे। उन पर सामंत तथा अंग्रेजी सरकार अत्याचार करती थी। इसीलिए उन्होंने अत्याचारी शासन के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ दिया।

प्रश्न 18. 'सम्पसभा' की स्थापना किसने और क्यों की थी ? लिखिए।

उत्तर—गोविन्द गुरु ने समाज सुधार के लिए इस संस्था का आरम्भ किया। हवन कुंडों (धूणी) से आरम्भ होकर स्वच्छता, भजन–सत्संग, बालकों की शिक्षा, परिश्रम करना, चोरी न करना, मदिरा और मांस न सेवन करना, विवादों से बचना, बेगार न करना तथा विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना आदि का प्रचार भी इस सभा के कार्यों में सम्मिलित हो गया।

प्रश्न 19. 'सम्पसभा' के क्रियाकलापों का विस्तार होने पर क्या दुष्परिणाम सामने आया ?

उत्तर—प्रति वर्ष सम्पसभा का वार्षिक सम्मेलन मानगढ़ के विशाल पर्वत पर होने लगा। इसके बढ़ते प्रभाव से अंग्रेज सरकार ने क्रूरता से इसका दमन किया। 1913 का भीषण हत्याकांड घटित हुआ। गोविन्द गुरु को भी गोली लगी। उनको बन्दी बना लिया गया।

प्रश्न 20. गोविन्द गुरु का अंतिम समय कैसे व्यतीत हुआ ? लिखिए।

उत्तर—गोविन्द गुरु को न्यायालय ने फाँसी का दण्ड दिया। बाद में इसे काला पानी फिर आजीवन कारावास और फिर सशर्त मुक्ति में बदल दिया गया। गुरु गोविन्द का अंतिम समय कम्बोई नामक स्थान पर बीता। 30 अक्टूबर 1931 को गुरु का देहावसान हो गया।

प्रश्न 21. 'महाराजा सूरजमल जन्मजात वीरपुरुष थे।' इस कथन के पक्ष में अपना मत लिखिए।

उत्तर—महाराजा सूरजमल युवावस्था आते-आते एक शक्तिशाली शरीर वाले साहसी योद्धा बन गए। 1731 में मेवात के दावर अंग को धूल चटाई और 1745 में अलीगढ़ के नवाब और मुगल बादशाह से युद्ध किया। 1750 में सलावत खाँ ने सूरजमल पर आक्रमण कर दिया।

प्रश्न 22. महाराजा सूरजमल ने अहमदशाह अब्दाली का मनोबल किस प्रकार तोड़ा ? लिखिए।

उत्तर—जब अब्दाली ने भरतपुर पर आक्रमण का विचार किया तो सूरजमल ने ऐसी कूटनीति भाषा में पत्र लिखा कि पत्र पढ़ते ही अब्दाली का सूरजमल से उलझने का साहस नहीं हुआ। इस प्रकार महाराजा सूरजमल ने बिना लड़े ही अब्दाली का मनोबल तोड़ कर उसे परास्त कर दिया।

प्रश्न 23. राजा सूरजमल ने मुगलों की सत्ता को समाप्त करने के लिए अपना अभियान कैसे प्रारम्भ किया ?

उत्तर—मुगलों की सत्ता समाप्त करने के लिए सूरजमल ने आगरे से अपना अभियान प्रारम्भ किया। उन्होंने आगरा के किले पर अधिकार करके दक्षिण के चम्बल तक, पूर्व में हरियाणा तक तथा अलीगढ़, हापुड़ एवं गढ़ मुक्तेश्वर तक अपने राज्य का विस्तार कर लिया।

प्रश्न 24. पेशवा की मृत्यु के पश्चात् राजा सूरजमन ने क्या निश्चय किया और इसका क्या परिणाम हुआ ?

उत्तर—पेशवा की मृत्यु के पश्चात् सरूजमल दिल्ली से मुगल सत्ता को समाप्त करने का निश्चय करके दिल्ली पर आक्रमण किया। रूहेले सैनिकों को परास्त करके वह नाले को पार कर रहे थे कि छिपे रूहेलों ने उन पर आक्रमण कर दिया। वह घायल हो गये थे और कुछ समय बाद मृत्यु को प्राप्त हो गए।

प्रश्न 25. 'राजस्थान के गौरव' पाठ से आपको क्या संदेश प्राप्त होता है ? लिखिए।

उत्तर—देव नारायण, बाबा रामदेव, संत जम्भेश्वर, गोविन्द गुरु तथा महाराजा सूरजमल आदि का परिचय कराते हुए यह पाठ हमको अनेक प्रेरणास्पद संदेश देता है। समाज में समरसता लाना, स्वतंत्रता के लिए प्राण न्योछावर कर देना प्रकृति का संरक्षण तथा समाज को जागरण का संदेश देना आदि सभी अनुकरणीय संदेश हैं।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न. 1. खेजड़ली गाँव की घटना का वर्णन अपने शब्दों में दीजिए।

उत्तर— सन् 1730 में जोधपुर के महाराजा ने अपने सैनिकों को राजकार्य हेतु वृक्ष काट कर लाने के लिए कहा। खेजड़ली गाँव में खेजड़ी के वृक्षों की अधिकता थी, इसलिए सैनिकों ने इसी गाँव में जाकर वृक्ष काटने का निर्णय लिया। सैनिक गाँव में जा पहुँचे। इमरती देवी को जब सैनिकों की मंशा का पता लगा तो वह खेत पर पहुँची और उन्हें समझाने लगीं। गाँव के लोग भी आ गये। सैनिक नहीं माने और वृक्ष काटने लगे। इमरती देवी ने उन्हें ललकारा "हमारे जीते जी तुम पेड़ नहीं काट सकते" गाँव के स्त्री-पुरुष एक-एक वृक्ष के सामने खड़े हो गये। इमरती देवी उनकी तीनों पुत्रियों और पति ने खेजड़ी वृक्ष की रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया। फिर गाँव वाले भी पीछे नहीं रहे। उस दिन खेजड़ली गाँव में लगभग 383 लोगों का बलिदान हुआ।

प्रश्न 2. बाबा रामदेव का परिचय देते हुए उनके कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—पोकरण नगर के समीप आज से लगभग 653 वर्ष पूर्व विक्रम संवत 1409 में भाद्रपद शुक्ल द्वितीया को रूणीचा के तँवर वंशीय ठाकुर अजमल जी और माता मैणादे के घर बाबा रामदेव का जन्म हुआ। शैशवावस्था में ही उन्होंने उफनते दूध को नीचे रख माँ

को चमत्कार दिखाया। बड़े होने पर गुरु बालकनाथ से शिक्षा ग्रहण की। इतिहास, धर्म, दर्शन के साथ शस्त्र-शास्त्र की शिक्षा प्राप्त की। भैरव तांत्रिक को मारकर सम्पूर्ण क्षेत्र को उसके आतंक से मुक्त कराया। उन्होंने दलितों से सम्पर्क बढ़ाया। 'जम्मा-जागरण' आन्दोलन के माध्यम से उन्हें जागृत कर अच्छाइयों की ओर प्रवृत्त किया।

कुष्ठ रोग एवं हैजा आदि में उनकी औषधि ने रामबाण का काम किया। वास्तव में वे दलितों के मसीहा थे।

प्रश्न 3. देव नारायण क्रान्तिकारी थे और आयुर्वेद तथा तंत्र शास्त्र के पंडित भी। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—देव नारायण बगड़ावत कुल के थे बगड़ावत नागवंशीय गुर्जर थे। सारा गुर्जर समाज उन्हें विष्णु का अवतार मानता है। वे आयुर्वेद और तंत्र शास्त्र में भी पारंगत थे। धार में स्थित महाकाली की आराधना के समय राजा जयसिंह की बीमार पुत्री पीपलदे को अपने आयुर्वेद के ज्ञान से रोग मुक्त कर दिया और फिर उसी से उनका विवाह हो गया।

उन्होंने औषधि के रूप में गोबर और नीम का महत्त्व स्पष्ट किया। तुलसी की भाँति नीम व गोबर को प्रतिदिन के व्यवहार में लाने का सफल प्रयास आपने किया। इसी कारण आज भी उनकी पूजा नीम की पत्तियों से होती है।

प्रश्न 4. महाराज सूरजमल की वीरता का वर्णन कीजिए।

उत्तर—वीर पुरुष महाराज सूरजमल ने सन् 1731में मेवात के दावर जंग को परास्त किया। नवम्बर 1745 में उन्होंने अलीगढ़ के नवाब और मुगल बादशाह से युद्ध किया। नारनौल के पास अंधेरें में सलावत खाँ की छावनी पर अचानक छापा मार कर उसे आत्मसमर्पण के लिए मजबूर कर दिया। पहले उन्होंने आगरा से मुगल सत्ता समाप्त कर किले पर अधिकार कर लिया। कुछ ही समय में उन्होंने दक्षिण में चम्बल तक के क्षेत्र पर विजय प्राप्त की। अलीगढ़, हापुड़, गढ़ मुक्तेश्वर तक उनके प्रभाव का विस्तार हो गया। उन्होंने तीन तरफ से दिल्ली को घेरकर गोलाबारी शुरू कर दी। रुहेले भरतपुर के वीरों की मार से पीछे हटते चले गये। वे हिण्डन नदी के नाले को पार करने लगे तभी छिपे रुहेले बंदूकधारियों ने उन पर आक्रमण कर दिया। प्राणघाती चोट लगने से उनका निधन हो गया।

प्रश्न 5. देव नारायण जी, रामदेव जी व संत जम्भेश्वर को 'राजस्थान का गौरव' क्यों कहा जाता है? 'राजस्थान के गौरव' अध्याय के आधार पर लिखिए। (उ. मा. शि. बो. 2018)

उत्तर—संत देवनारायण, रामदेव और संत जम्भेश्वर अपनी चमत्कारपूर्ण सिद्धियों और मानव सेवा के कारण राजस्थान का गौरव बढ़ाने वाले महापुरुष माने जाते हैं।

संत देव नारायण शस्त्र विद्या और शास्त्र विद्या दोनों में निपुण थे। अपने आयुर्वेद के ज्ञान से इन्होंने अनेक लोगों के असाध्य रोग ठीक किए। इन्होंने गोठा निवासियों की अन्यायी शासक से रक्षा की।

बाबा रामदेव ने बचपन से ही अपने चमत्कारों द्वारा लोगों को प्रभावित किया। उन्होंने आतंकी तांत्रिक भैरव का वध करके लोगों की रक्षा की। 'जम्भा जागरण' आन्दोलन द्वारा दलितों को संगठित किया। रामदेव सिद्ध योगी तथा निपुण चिकित्सक थे। विकलांगता, कुष्ठ रोग तथा हैजा रोग से अनेक लोगों के प्राण बचाए।

संत जम्भेश्वर विश्नोई सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं। विश्नोई वृक्षों के रक्षक होते हैं। जम्भेश्वर धार्मिक कट्टरता के विरोधी थे। आपने सिकंदर लोदी को प्रभावित करके गोहत्या पर रोक लगवाई थी।

❑❑